सिडनी में हुए सम्मेलन में दी गयी फा की सीख

ली होंगज़ी

1996

मुझे अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आप सभी मुझे जानते हैं—मैं ली होंगज़ी हूँ। मैं हमेशा से आप से मिलना चाहता था, लेकिन विभिन्न कारणों से, मुझे ऐसा करने का अवसर नहीं मिला। इस बार मैं विशेष रूप से आपसे मिलने के उद्देश्य से आया हूँ। यह इसलिए क्योंकि मुझे पता है कि ऑस्ट्रेलिया में, अतीत में उतने लोग नहीं थे जितने लोग अब इस मार्ग के बारे में जानते हैं। इसका अध्ययन करने वाले कई लोगों ने उपदेशों का अध्ययन करने पर ध्यान नहीं दिया, और इसके बारे में उनकी समझ कुछ सतही थी। मुझे लगा कि अब जब कि आप समझते हैं कि मैं क्या प्रदान कर रहा हूँ, मैं आपसे मिलने आ सकता हूँ। ऐसा इसलिए है क्योंकि बहुत सी बातें जो आप जानना चाहते हैं, वे [फालुन दाफा] पुस्तक में लिखी हैं। मेरी एक आदत है : मुझे तब अच्छा लगता है जब दूसरे मुझसे उन बातों के बारे में पूछते हैं जो वे साधना में नहीं समझ पाते हैं। लेकिन जब वे लोग जो अभी तक नहीं जानते हैं कि यह अभ्यास क्या है, मुझसे पूछते हैं कि यह क्या है, तब मैं बस... कैसे बताऊँ? यदि आपकी समझ बहुत ही सतही है, तो आपको एक साथ सभी बातों को समझाना बहुत कठिन है। यदि आप पुस्तकों में से पढ़ने में सक्षम रहे हैं, फा का अभ्यास करते हैं, और एक निश्चित स्तर की समझ प्राप्त की है, और उसके बाद मुझसे कुछ बातों के बारे में पूछते हैं जो आपके सुधार के लिए सार्थक हैं, तो मुझे लगता है कि चाहे आप सीख रहे हैं या [वास्तव में] साधना करते हैं, यह आपके लिए लाभदायक होगा। मुझे लगता है कि पूर्वनिर्धारित अवसर अब योग्य है, इसलिए मैं आया हूँ।

मैं जानता हूँ कि यहां बैठे हुए लोगों में, एक ऐसा समूह है जिसने अभी तक [उपदेशों] का अभ्यास नहीं किया है, एक समूह जो अभी भी केवल व्यायाम करते हैं और अभी उपदेशों के अभ्यास करने पर ध्यान देना शेष है, और एक ऐसे लोगों का समूह है जिन्होंने अच्छी तरह से अभ्यास किया है। मैं क्यों चाहता हूँ कि आप सभी को उपदेशों का अभ्यास करना चाहिए? ऐसा इसलिए है क्योंकि इसके साथ निम्नलिखित संबंध हैं : आप जानते हैं कि चीन की इस भूमि पर, पिछले बीस वर्षों से अधिक में साधारण समाज में बड़े स्तर पर अब चीगोंग का प्रसार हुआ है। सांस्कृतिक क्रांति के मध्यकाल से उत्तरार्द्ध तक चीगोंग की लोकप्रियता चरम तक पहुँचने लगी। फिर भी कभी भी किसी ने यह नहीं समझाया कि वास्तव में चीगोंग क्या है। किसी ने यह नहीं समझाया है कि चीगोंग से उपजी अलौकिक क्षमताएँ या घटनाएँ जो आधुनिक विज्ञान की समझ से परे है वास्तव में किस बारे में हैं। चीगोंग के उद्भव का उद्देश्य क्या है? जो इसका उत्तर दे सकते हैं वे और भी कम हैं। चीगोंग पूरे इतिहास में कभी नहीं दिखाई दिया, तो अब क्यों सामने आया है? इसके अतिरिक्त, यह साधना-सम्बंधित है जो समाज में फैलाया जा रहा है। ऐसा क्यों हुआ? बहुत कम लोग जानते हैं कि क्यों। वास्तव में, जब चीन में चीगोंग लोकप्रिय बनना शुरू होने लगा, तो कई उत्कृष्ट चीगोंग गुरु इसे सिखाने आ गये। वे केवल इतना जानते थे कि ऐसा करने का उद्देश्य लोगों के स्वास्थ्य में सुधार करके कुछ अच्छे काम करना था। उनकी [इसके बारे में] केवल एक सरल विचार प्रक्रिया और समझ थी।

यद्यपि चीगोंग को लंबे समय से लोकप्रिय बनाया जा रहा है, दशकों से, इसका सही, गूढ़ अर्थ कोई नहीं जानता। इसलिए, इस पुस्तक *ज़ुआन फालुन* में मैंने चीगोंग समुदाय में दिखने वाली कुछ घटनाओं, साधारण समाज में चीगोंग का प्रसार होने का कारण, और चीगोंग के परम उद्देश्य को समझाया है। तो यह पुस्तक एक व्यवस्थित कृति है जो किसी व्यक्ति को साधना करने में सक्षम बना सकती है। पुस्तक को बार-बार पढ़ने पर कई लोगों ने एक अनोखी अनुभूति का अनुभव किया है : चाहे आप कितनी भी बार इस पुस्तक को पढ़ें, आप फिर भी इसे हर बार नया पायेंगे; चाहे आप कितनी भी बार इस पुस्तक को पढ़ें, आपको किसी भी अनुच्छेद की नयी समझ मिलती रहेगी; चाहे आप कितनी भी बार इस पुस्तक

को पढ़ें, फिर भी आपको प्रतीत होगा कि इसमें कई आंतरिक अर्थ हैं जो अभी तक आपको पता नहीं चले हैं। ऐसा क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने उन बातों को समझाया है जो किसी व्यक्ति को साधना करने के लिए सक्षम बना सकती हैं, कैसे किसी व्यक्ति को साधना करनी चाहिए, ब्रह्मांड की विशेषताओं, और ऐसी कई अन्य बातें जिन्हें दिव्य रहस्यों के रूप में देखा जाता है; मैंने इन तत्वों को व्यवस्थित रूप से इस पुस्तक में समायोजित किया है। यह एक साधक को अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंचने में सक्षम बना सकती है, क्योंकि ऐतिहासिक रूप से किसी ने भी पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया है। कई लोगों ने इस पुस्तक को पढ़ा है और अनुभव किया है कि इसमें कई दिव्य रहस्य हैं—जिनमें से कई रहस्यों के रहस्य हैं—जिन्हें अतीत में मानवजाति को कभी भी जानने की अनुमति नहीं थी। मैंने इस पुस्तक में इन सभी बातों को उजागर किया है। वास्तव में, ऐसा करने का मेरा अपना उद्देश्य है। यदि कोई व्यक्ति दिव्य रहस्यों को ऐसे ही और बिना-उत्तरदायित्व के प्रकट करता है, ऐसे ही इन उच्च-स्तरीय सिद्धांतों को साधारण लोगों को समझाता है जैसे कि वे कोई साधारण सिद्धांत हों, तो वह दिव्य रहस्यों को प्रकट करेगा और अधर्म करेगा, और वह निश्चित रूप से इसके लिए भुगतान करेगा।

मैंने यह उद्देश्यपूर्ण रूप से किया है। उनमें से मेरा एक उद्देश्य यह है कि, मूल स्तर पर वस्तुओं को देखते हुए, मैंने देखा कि बहुत से लोग, इतने वर्षों से चीगोंग का अभ्यास करते हुए, यह जान गए हैं कि चीगोंग के बहुत उच्च स्तर के आंतरिक अर्थ होते हैं और यह एक व्यक्ति को बहुत ही उच्च स्तर के आयाम तक साधना करने में सक्षम बना सकता है, यहां तक कि अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंचने में भी। फिर भी, दुःख की बात है कि [इन सबके होते हुए भी] वे इस तरह की वास्तविक साधना पद्धति नहीं ढूंढ पाये हैं। साधारण चीगोंग अभ्यास स्वास्थ्य और शारीरिक योग्यता को बनाए रखने के लिए है और इसका उपयोग साधना के लिए नहीं किया जा सकता है। बहुत से लोग मंदिरों में साधारण बौद्ध हो गए और भिक्षुओं को अपना गुरु मान लिया। निश्चित रूप से, इस बिंदु पर विचार करते हुए, मैं शाक्यमुनि द्वारा एक कथन को बताना चाहूँगा, यह कि उनके उपदेश लोगों को इस मार्ग के उत्तरार्द्ध में नहीं बचा पायेंगे। यह बुद्ध शाक्यमुनि द्वारा कहा गया था, और ऐसा इसलिए क्योंकि कई कारक ऐसी परिस्थितियां ले आये हैं। बहुत से लोगों के लिए, चाहे आप कैसे भी साधना करने की कोशिश करें, चाहे वह मंदिर में हों या चीगोंग के अभ्यास के द्वारा, आपको ऐसा अनुभव होगा कि आपने कुछ प्राप्त नहीं किया है और न ही आपका स्तर ऊपर उठ पाया है, और आप वास्तव में ऊंचे स्तर पर नहीं पहुंचे हैं। इस प्रकार, मैं सभी की ऊंचा उठने की इच्छा देख सकता हूँ लेकिन यह भी देखता हूँ कि लोग बहुत पीड़ित होते हैं क्योंकि, दुःख की बात है कि, वे ऐसा करने का कोई भी मार्ग नहीं ढूंढ पाये हैं—इसलिए मैं उन लोगों का वास्तव में मार्गदर्शन करना चाहता हूँ जो उच्च स्तर की ओर शिक्षाओं को प्राप्त करना चाहते हैं। यह एक प्रमुख कारण है [मेरा ऐसा करने का]।

फिर भी जब एक सच्चा अभ्यास फैलाया जाता है, तो इसके लिए यह आवश्यक होता है कि लोग अपने चरित्र और नैतिक आदर्शों को सुधारें, और अच्छाई की ओर जाएं। एक साधक के लिए, तब, एक औसत साधारण व्यक्ति के नैतिक आदर्शों को पार करना आवश्यक है। इस प्रकार, वह समाज को लाभान्वित करेगा। निःसंदेह, ऐसे कई लोग हैं जो आवश्यक नहीं है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद साधना कर सकें, लेकिन वे इस सिद्धांत को समझ गए होंगे कि किसी व्यक्ति को कैसा व्यवहार करना चाहिए। अब से, ये लोग संभवतः अच्छे लोग बन सकते हैं। यद्यपि वे साधना नहीं करते हैं, तो भी वे अच्छे लोग होंगे, और वे समाज को लाभान्वित करेंगे। जब एक सच्चा अभ्यास फैलाया जाता है, तो निःश्चित रूप से इसका

यह प्रभाव होगा। वास्तव में, सच्चे धर्म जो इतिहास में प्रकट हुए हैं, जैसे कि ईसाई धर्म, कैथोलिक धर्म, बुद्धमत, ताओवाद, और यहूदी धर्म, लोगों को अच्छाई की ओर बढ़ने में सहायता करने में सक्षम रहे हैं और उन लोगों को भी सक्षम करने में समर्थ रहे हैं जो साधना के माध्यम से ऊंचा उठने का मार्ग प्राप्त करने और अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंचने की सच में कामना करते हैं। वे उन्हें समाज में उत्कृष्ट लोग बनना संभव बनाते हैं जो अभी साधना करने में असमर्थ हैं, और वे भविष्य में [उन लोगों] के लिए साधना करने के अवसर उत्पन्न करते हैं—उनका यही प्रभाव होता है।

हालांकि हम एक धर्म नहीं हैं, मैं उच्च-स्तरीय चीगोंग की बातें प्रसारित कर रहा हूँ, और इसलिए यह कोई साधारण चीगोंग नहीं है। इसे स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, चीगोंग कोई साधारण लोगों की बात नहीं है। चीगोंग क्या है? चीगोंग साधना है। लेकिन यह साधना का सबसे निम्न स्तर है, वह स्तर जिसमें ताई ची सम्मिलित है। ताई ची, जैसा कि आप जानते हैं, बहुत अच्छा है, और 1950 के दशक की शुरुआत से चीन में व्यापक रूप से प्रसारित हो रहा था। यह वह है जिसे झांग सानफंग ने मिंग राजवंश में प्रसारित करना शुरू किया था। हालांकि जो पारित हुआ वे केवल तकनीक और गतिविधियां थी, और उन्होंने अभ्यास के अध्यात्मिक तत्वों को प्रसारित नहीं किया था। यह कि, उन्होंने लोगों के लिए वह उपदेश नहीं छोड़े जो उन्हें सिखा सके कि साधना कैसे करनी चाहिए और प्रत्येक स्तर पर कैसे सुधार करना चाहिए। इसलिए ताई ची स्वास्थ्य और स्वस्थ बनाए रखने के आयाम में ही सीमित रहता है, और इसका उपयोग उच्च स्तर की साधना करने के लिए नहीं किया जा सकता। हालांकि यह बहुत अच्छा है, लेकिन इसके अध्यात्मिक पक्ष प्रसारित नहीं हुए थे। अतीत में वे अध्यात्मिक पक्ष भी थे, लेकिन उन्हें पारित नहीं किया गया था और न ही बाद की पीढ़ियों के लिए रखा गया था। लेकिन आज हम जिस मार्ग को प्रदान कर रहे हैं उसमें अध्यात्मिक तत्वों को व्यवस्थित रूप से सम्मिलित किया गया है।

हालांकि, यहां पर कई नये अभ्यासी हैं, और कुछ को यह लग सकता है कि मैं जो कह रहा हूँ वह बहुत उच्च स्तर का है। जैसा कि आप सभी जानते हैं, सभी प्रकार के धर्मों में लोगों को अच्छाई की तरफ बढ़ाते हैं और उन्हें दिव्य लोकों तक ले जाते हैं। बुद्धमत में, निश्चित रूप से, परमानंद का लोक भी एक दिव्य लोक है। पूरे इतिहासकाल में, प्रत्येक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति या संत ने समझाया है कि एक अच्छा व्यक्ति कैसे बनना चाहिए और यह कि व्यक्ति को दिव्य लोक में जाने के लिए उच्च आयाम के आदर्श तक पहुंचना होगा। लेकिन उन्होंने इसमें समाविष्ट सिद्धांतों को नहीं समझाया। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति—चाहे वह यीशू, बुद्ध शाक्यमुनि, लाओ ज़, इत्यादि हों—सभी लगभग दो हज़ार वर्ष पहले अवतरित हुए थे। उस काल अवधि के लोग आज के लोगों से अलग थे; वे अधिक एकाकि मन, निष्कपट, सरल, और दयालु थे, और उनके विचार इतने जटिल नहीं थे। क्योंकि उस काल अवधि के लोगों की मनःस्थिति आज के लोगों की तुलना में अलग थी, [उन महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों] द्वारा सिखाये गये उपदेश उस काल अवधि के लिए प्रभावी थे। उस समय, उनके द्वारा सिखायी गयी बातें पूरी तरह से लोगों को अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचाने में सक्षम थीं। समय के साथ, आज के लोगों के विचार बहुत अधिक जटिल हो गए हैं और उनके सोचने के तरीके बदल गये हैं। इस प्रकार, आज के लोग उन महान ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों ने जो बातें उस समय प्रचारित की थी वह नहीं समझ सकते हैं। इसलिए जब आज के लोग इन शास्त्रों को पढ़ते हैं, तो उन्हें ऐसा लगता है कि वे उसका सही अर्थ नहीं समझ सकते हैं। हालाँकि मैं अब चीगोंग के रूप में अभ्यास का प्रसार कर रहा हूँ, आप सभी जानते हैं कि मैं बुद्ध मार्ग का प्रसार कर रहा हूँ। कुछ लोग सोचते हैं, "यह बुद्ध मार्ग जो आप फैला रहे हैं, वह वैसा नहीं है जैसा बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा था।" यदि मैं बुद्ध शाक्यमुनि के शब्दों का उपयोग करके बातों को समझाता, तो

आज के लोगों में से कोई भी नहीं समझता। बुद्ध शाक्यमुनि की भाषा उस समय के लोगों की भाषा थी, इसलिए वे लोग इसे समझ सकते थे। इसलिए मुझे अब बुद्ध मार्ग समझाने के लिए आज की भाषा का उपयोग करना होगा जिससे आप समझ सकें। कुछ लोग शायद यह भी सोचेंगे, "जो आप चर्चा कर रहे हैं वह बुद्धमत के शास्त्रों में से नहीं है।" क्या बुद्ध शाक्यमुनि वही शिक्षा प्रदान कर रहे थे जो छः पुरातन बुद्धों द्वारा सिखायी गयी थी? यदि मैत्रेय अवतरित होते हैं, तो क्या वह बुद्ध शाक्यमुनि द्वारा कही गयी बातों को दोहराते? ज्ञानप्राप्त व्यक्ति लोगों को बचाने के लिए वे बातें सिखाते हैं जिनका उन्हें ज्ञानप्राप्त हुआ है, बातें जो वे मनुष्यों को बचाने के लिए बताते हैं।

मैंने इस पुस्तक में साधना से जुड़ी कई बातें लिखी हैं। एक व्यक्ति साधारण लोगों के स्तर पर अपनी साधना शुरू करता है। उस समय से लेकर जब तक कि आप अध्यात्मिक पूर्णता तक नहीं पहुँचते, आपकी साधना का मार्गदर्शन करने के लिए शिक्षाएं आपके पास होंगी। मैंने वास्तव में कुछ अभूतपूर्व किया है। मैंने महान ब्रह्मांड के मूलभूत महान मार्ग का प्रसार किया है, ऐसा कुछ जो आपको सभी प्राचीन, आधुनिक, चीनी और विदेशी पुस्तकों को पूरी तरह पढ़ने पर भी नहीं मिलेगा। मैंने जिन सिद्धांतों को समझाया है वे ब्रह्मांड की विशेषताएँ हैं, बुद्ध मार्ग का सार हैं, और मेरे शब्दों के माध्यम से उन्हें सटीक रूप से व्यक्त किया गया है। पुस्तक पढ़ने के बाद बहुत से लोग सोचते हैं, और कुछ लोग कहते हैं, "गुरू ली का शैक्षणिक ज्ञान कितना है? ऐसा लगता है कि उन्होंने कई क्षेत्रों को सम्मिलित किया है, चाहे वे प्राचीन, आधुनिक, चीनी या विदेशी हों, जैसे कि खगोल विज्ञान, भूगोल, इतिहास, रसायन विज्ञान, भौतिकी, खगोल भौतिकी, उच्च-ऊर्जा भौतिकी और दर्शनशास्त्र।" लोगों को लगता है कि मेरा ज्ञान बहुत ही प्रगाढ़ है, लेकिन मैं वास्तव में साधारण लोगों के शैक्षणिक ज्ञान की तुलना में स्वयं को बहुत अपर्याप्त मानता हूँ। भले ही आप सभी पुस्तकों को पढ़ लेते हैं या विश्व के सभी शैक्षणिक विषयों को सीख लेते हैं फिर भी आप इन सिद्धांतों को नहीं सीख पायेंगे। यहां तक कि यदि आप विश्व का सभी शैक्षणिक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, तब भी आप एक साधारण व्यक्ति ही रहेंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि आप केवल इस स्तर के व्यक्ति हैं, जिसने केवल दूसरों की तुलना में अधिक साधारण लोगों का ज्ञान प्राप्त किया है, इसलिए आप अभी भी एक साधारण व्यक्ति ही हैं। लेकिन मैं जिन सिद्धांतों और बातों को समझा रहा हूँ, वे साधारण लोगों के स्तर के नहीं हैं; वे इससे ऊपर हैं। इसलिए, ये सिद्धांत साधारण लोगों के ज्ञान से उत्पन्न नहीं होते हैं। यह मार्ग [संपूर्ण] ब्रह्मांड को समाहित करता है, निम्न स्तर पर जाते हुए साधारण लोगों के समाज का ज्ञान भी।

मैंने साधारण लोगों की भाषा का सरल और स्पष्ट रूप से उपयोग किया है, साथ ही साथ ब्रह्मांड के सभी सिद्धांतों को दिखाने के लिए, निम्नतम से उच्चतम तक, साधना के सबसे निचले रूप—चीगोंग—का उपयोग किया है। पहली बार पुस्तक पढ़ने के बाद, आप पायेंगे कि यह उन सिद्धांतों को सिखाती है कि एक अच्छा व्यक्ति कैसे बनना चाहिए; यदि आप पुस्तक को फिर से पढ़ते हैं, तो आप पायेंगे कि यह जो समझाती है वह साधारण लोगों के सिद्धांत नहीं हैं, और यह एक ऐसी पुस्तक है जो साधारण लोगों के ज्ञान के बहुत ऊपर है; यदि आप इसे तीसरी बार पढ़ने में सक्षम होते हैं, तो आप पायेंगे कि यह एक दिव्य पुस्तक है; यदि आप इसे पढ़ते रहेंगे तो आप इसे छोड़ नहीं पायेंगे। चीन में अब ऐसे लोग हैं जिन्होंने इस पुस्तक को सौ से अधिक बार पढ़ा है और जो अभी भी इसे पढ़ रहे हैं, और वे किसी भी तरह से इसे रख नहीं पाते हैं। पुस्तक में साधारणतः बहुत से आंतरिक अर्थ हैं, और जितना अधिक आप पढ़ेंगे, उतना अधिक आप इन्हें समझेंगे। क्यों? हालाँकि मैंने कई दिव्य रहस्यों को प्रकट किया है, जो साधक नहीं हैं उनको ऊपरी तौर से शब्दों में देखने में असमर्थ रहेंगे। केवल जब कोई साधक लगातार

पुस्तक पढ़ेगा तो ही वह इसके आंतरिक अर्थों का पता लगा पाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्ति का स्तर निरंतर बढ़ता है, उसके साधना करने के साथ-साथ। जब आप [*जुआन फालुन* को पढ़ना] शुरु करते हैं, तो आपको ऐसा क्यों लगता है कि यह पुस्तक एक अच्छा व्यक्ति होने के सिद्धांतों को समझा रही है? ऐसा दूसरी बार क्यों नहीं लगता, जब पाठक का स्तर ऊंचा होता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि कोई व्यक्ति साधना करना चाहता है, तो उसे पहले एक साधारण व्यक्ति के स्तर से साधना शुरु करनी होगी। धीरे-धीरे वह अपने नैतिकगुण में सुधार करता है और उच्च स्तर तक पहुंचता है। जब आप पहले स्तर के आदर्श तक पहुँचते हैं, तो उस स्तर की शिक्षाएँ आपको साधना में मार्गदर्शन करने के लिए वहां होंगी; जब आप दूसरे स्तर पर पहुँचते हैं, तो आपके लिए उस आयाम में आपकी साधना का मार्गदर्शन करने के लिए दूसरे स्तर की शिक्षाएँ होंगी। जब आप निरंतर ऊपर बढ़ते रहते हैं, तो प्रत्येक आयाम में यह अभ्यास आपके साधना के मार्गदर्शन में सक्षम होना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि चाहे आप जिस किसी स्तर तक साधना करते हैं, आपके मार्गदर्शन के लिए उस स्तर के उपदेशों का रहना आवश्यक है, अध्यात्मिक पूर्णता तक भी। मेरी पुस्तक में इन सभी बातों को सम्मिलित किया गया है, इसलिए जब आप वास्तव में साधना करना चाहते हैं, तो आप इन बातों को देख सकेंगे, और [पुस्तक] आपको साधना में आगे बढ़ने का मार्गदर्शन करने में सक्षम होगी। इस पुस्तक में बड़ी मात्रा में आंतरिक अर्थ हैं। यदि आप इसे दस हजार बार भी पढ़ते हैं, तब भी यह आपके साधना करने के मार्गदर्शन में सक्षम होगी, जब तक आप अध्यात्मिक पूर्णता तक नहीं पहुँच जाते।

अध्यात्मिक पूर्णता के मुद्दे पर बात करें तो, आप जानते हैं कि यीशु ने कहा था, "यदि आप मुझ पर विश्वास करते हैं, तो आप दिव्य लोक में जा सकते हैं।" बुद्धमत में, यह कहा जाता है, "यदि कोई व्यक्ति बुद्धत्व की साधना करता है, तो वह परमानंद के दिव्य लोक में जा सकता है।" निःसंदेह, उन [ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों] ने सरलता से बातें कही थी, और इस बात पर बल नहीं दिया था कि वास्तविक साधना करने पर ही आप (उन दिव्य लोकों में) जा सकते हैं। लेकिन वास्तव में, धर्मों में भी साधना सम्मिलित है। केवल यह कि बुद्ध शाक्यमुनि और यीशु दोनों ने यह स्थिति देखी थी : हमारे साधना समुदाय में एक कहावत है, "साधना व्यक्ति पर निर्भर करती है, और *गोंग* [का परिवर्तन] गुरु पर निर्भर करता है।" इस विषय में भी साधारण लोगों को कुछ पता नहीं है। साधारण लोग सोचते हैं, "शारीरिक व्यायाम करने से मैं बड़ी मात्रा में *गोंग* विकसित कर सकता हूँ।" हम इस धारणा को हास्यस्पद और केवल असंभव समझते हैं। वास्तव में, यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो आप केवल तभी सफल हो पायेंगे जब आपके गुरु आपका उत्तरदायित्व लेंगे, आपके शरीर में कई यंत्र स्थापित करेंगे, और, जैसे कि बीज बोते हैं, आप में कई वस्तुओं को डालेंगे। इसके अतिरिक्त, आप साधना करते हुए तभी ऊँचा उठ पायेंगे यदि आपके गुरु आपकी देखभाल करते हैं, आपकी रक्षा करते हैं, आपके बुरे कर्मों को हटाते हैं और *गोंग* विकसित करने में आपकी सहायता करते हैं। धर्मों में वे साधना का उल्लेख नहीं करते हैं। क्यों? यीशु जानते थे कि यदि आपको उनमें विश्वास है, तो आप साधना कर सकते हैं, और ऐसा करते हुए, ऊपर उठ सकते हैं। लोग अब धर्मों के माध्यम से साधना नहीं कर सकते हैं, ऐसा इसलिए क्योंकि वे अब [ज्ञानप्राप्त व्यक्तियों] के कहने का वास्तविक आंतरिक अर्थ नहीं समझते हैं। बहुत से लोग सोचते हैं, "यदि मैं यीशु पर विश्वास करता हूँ, तो मैं मरने के बाद दिव्य लोक में जा सकता हूँ।" इसके बारे में सोचें : यदि हम दिव्य लोक में जाना चाहते हैं, तो हम वहां कैसे पहुंचेंगे? एक साधारण व्यक्ति का मन, आपकी छह भावनाएं और सात इच्छाएं, आपके विविध मोहभाव, दूसरों से लड़ने का मोहभाव, और दिखावा करने की इच्छा, साधारण लोगों के बहुत से मोहभाव हैं। यदि आपको वहां भेजा जाये जहाँ बुद्ध हैं, तो आप बुद्ध के साथ बहस और लड़ाई शुरू कर सकते हैं क्योंकि आपके साधारण मानवीय मोहभाव समाप्त नहीं हुए हैं। जब आप

देखते हैं कि एक महान बोधिसत्व कितनी सुंदर हैं, तो आपको बुरे विचार आ सकते हैं। क्या इसकी अनुमति दी जा सकती है? कभी नहीं। इसलिए, आप साधारण मानव समाज में रहते हुए इन मोहभाव-भरी, गंदी और बुरी मानसिकताओं को समाप्त करने के बाद ही इस आयाम तक पहुँच सकते हैं। आप साधना करके, और विश्वास के द्वारा, वहां पहुँच सकते हैं, लेकिन आप दिव्य लोक में केवल तभी जा सकते हैं यदि, आपके अपराध स्वीकार और पश्चाताप करने के बाद, आप फिर से वही भूल नहीं करते, और इस तरह अच्छे और अच्छे होते जाते हैं और दिव्य व्यक्ति के स्तर तक पहुँच जाते हैं।

कुछ लोग कहते हैं, "जब तक मुझे यीशु पर श्रद्धा है, मैं दिव्य लोक में जा सकता हूँ।" मैं कहूँगा कि आप वहाँ नहीं जा सकते। क्यों नहीं? आज के लोग यीशु द्वारा कही गई बातों के वास्तविक अर्थ को नहीं समझते हैं। यीशु तथागत के स्तर पर और बुद्ध के आयाम में एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति हैं। साधारण लोग उनके कहे गये प्रगाढ़ अर्थ को नहीं समझ सकते हैं। यदि आप निरंतर उनकी प्रणाली के अनुसार साधना करते हैं तभी जो उन्होंने कहा है उसका अनुभव कर सकते हैं और उसके प्रगाढ़ अर्थ को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा, "मुझ पर विश्वास करो और आप दिव्य लोक में जा सकेंगे।" वास्तव में, आप सही अर्थ में तभी यीशु पर विश्वास कर रहे होते हैं यदि आप उन सिद्धांतों का पालन करते हैं जो उन्होने एक अच्छा व्यक्ति होने के बारे में सिखाये थे—केवल तभी आप दिव्य लोक में जा सकते हैं। अन्यथा, यीशु की इतनी सारी बातें कहने का क्या अर्थ था? जब आप अपने अपराध स्वीकार करते हैं और पश्चाताप करते हैं, तो आपको लगता है कि आपने बहुत अच्छा किया है और आपकी मनःस्थिति बहुत अच्छी है। लेकिन जब आप गिरजाघर के द्वार से बाहर निकलते हैं, तो आपका मन जैसा चाहे वैसे कार्य करते हैं और साधारण लोगों की तुलना में और भी बुरे कार्य करते हैं। आप दिव्य लोक में कैसे जा सकते हैं? आपका मन इतना सा भी ऊंचा नहीं उठा। ऐसा इसलिए है क्योंकि यीशु ने कहा, "यदि आप मुझ पर विश्वास करते हैं, तो आप दिव्य लोक में जा सकते हैं।" अर्थात्, उनके प्रति सच्चा विश्वास रखने के लिए आपको उनके सिखाए अनुसार कार्य करना होगा, है ना? यही सिद्धांत अन्य धर्मों पर भी लागू होता है।

बुद्ध शाक्यमुनि के बाद आने वाली पीढ़ियों ने उनके कुछ कथनों को एकत्रित किया और उनके शास्त्र बना दिये। उसके बाद, लोगों ने साधना का अर्थ यह लगाया कि व्यक्ति ने कितना शास्त्र पढ़ा है या उसकी बौद्ध ज्ञान की मात्रा कितनी है। वास्तव में, बुद्ध शाक्यमुनि के समय में कोई शास्त्र थे ही नहीं। इसके अतिरिक्त, शास्त्रों को [शाक्यमुनि के समय के] पांच सौ वर्ष बाद तक व्यवस्थित रूप से एकत्रित नहीं किया गया था और वह बुद्ध शाक्यमुनि के मूल शब्दों से पूरी तरह से भिन्न हो गए थे। लेकिन उस समय में [जब बुद्ध शाक्यमुनि सिखा रहे थे], लोगों को केवल इतना ही जानने की अनुमति थी; यदि बहुत अधिक होता तो अस्वीकार्य होता। यह अटल था। जीवन के अंतिम पड़ाव में, उनके जीवन के अंत के वर्षों में, बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा, "मैंने अपने जीवनकाल में कोई उपदेश नहीं दिये हैं।" ऐसा इसलिए है क्योंकि बुद्ध शाक्यमुनि ने वास्तव में ब्रह्मांड के मार्ग के बारे में नहीं समझाया था, न ही उन्होंने साधारण समाज में या उनके तथागत के स्तर पर, *सत्य-करुणा-सहनशीलता* की विशेषता की अभिव्यक्ति को समझाया था। उन्होंने वास्तव में यह नहीं बताया था! तब तथागत बुद्ध ने क्या सिखाया था? उन्होंने इस बारे में सिखाया जो मानव जगत में पूर्व में अपनी साधना के दौरान उन्हें जो ज्ञानप्राप्ति हुई थी, कुछ साधना परिस्थितियाँ और अपने पूर्व पुनर्जन्मों की कहानियाँ, और मार्ग की उनकी कुछ विशिष्ट अभिव्यक्तियों की समझ। शास्त्र थोड़े-थोड़े करके संकलित किये गए थे और इसलिए उनकी अवस्था अव्यवस्थित है। तो बाद की पीढ़ियों ने बुद्ध शाक्यमुनि के शब्दों को बुद्ध मार्ग के रूप में क्यों देखा? एक

कारण यह है कि लोगों की [शाक्यमुनि के शब्दों की] समझ; दूसरा कारण यह है कि शाक्यमुनि बुद्ध हैं, इसलिए उनके शब्दों में बुद्ध-प्रकृति होती है। मनुष्यों के लिए, बुद्ध-प्रकृति वाले शब्द बुद्ध सिद्धांतों के एक स्तर [को व्यक्त करते] हैं और वे बुद्ध मार्ग हैं। लेकिन [बुद्ध शाक्यमुनि] ने साधना के सिद्धांतों, ब्रह्मांड की विशेषताओं, लोग क्यों सुधार और स्तर ऊंचा करेंगे, और ऐसी बातों को वास्तव में व्यवस्थित रूप से नहीं समझाया। उन्होने वास्तव में इन बातों को नहीं समझाया था! इसलिए मैं कहता हूँ कि मैंने कुछ अभूतपूर्व किया है। मैंने एक विशाल द्वार खोल दिया है और एक बड़ा कार्य आरंभ किया है—मैंने साधना के सभी सिद्धांतों और अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचने से संबंधित कारकों को समझाया है। और मैंने उन्हें बहुत व्यवस्थित रूप से समझाया है। यही कारण है कि उच्च-स्तरीय प्राणियों ने कहा है, "आपने मनुष्यों को दिव्य लोक तक पहुँचने की एक सीढ़ी दे दी है—*ज़ुआन फालुन!*"

मैं यहाँ बुद्ध शाक्यमुनि के विषय में कुछ भी बुरा कहने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मेरी ऐसी कोई अभिलाषा नहीं है, मेरी साधारण लोगों की तरह भावनाएं नहीं हैं, और मुझे इस नश्वर जगत की प्रसिद्धि और व्यक्तिगत लाभ से कोई मोहभाव नहीं हैं। क्योंकि मैंने इस [अभ्यास] को सार्वजनिक कर दिया है, मैं आपके लिए उत्तरदायी रहूँगा, और मैं इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से आपको समझाऊँगा। मैं आपसे कुछ नहीं चाहता, और मैं आपसे एक पैसा भी नहीं मांगूंगा, क्योंकि मैं केवल आपसे अच्छाई की ओर बढ़ने के लिए कह रहा हूँ। कुछ लोगों ने मुझसे पूछा, "गुरूजी, आपने हमें बहुत सी बातें सिखायी हैं और हमें बहुत सी वस्तुएं दी हैं—आपको क्या चाहिए?" मैंने कहा, "मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं यहाँ केवल आपको बचाने के लिए हूँ। मुझे केवल आपका मन चाहिए, जो अच्छाई चाहता है, जिससे वह सुधर सके।" ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने देखा है कि मनुष्य होना मानव अस्तित्व का उद्देश्य नहीं है। आजकल लोग साधारण समाज की झूठी वास्तविकताओं से घिरे हैं और यह सोचते हैं कि, "लोगों को ऐसे ही व्यवहार करना चाहिए।" यह विशेष रूप से ऐसा ही है क्योंकि मानव समाज के नैतिक मूल्यों में भारी गिरावट आई है। सब कोई धारा में बह रहा है, नीचे की ओर फिसल रहा है, और पूरे समाज का पतन हो रहा है। इसलिए, कोई भी व्यक्ति यह नहीं पता लगा सकता है कि वह स्वयं भी गिर रहा है। कुछ सोचते हैं कि वे दूसरों से अपेक्षाकृत अच्छा होने के कारण अच्छे लोग हैं। वास्तव में, स्वयं का आंकलन करने के लिए आप गिरे हुए आदर्श से तुलना कर रहे हैं, और आप ऐसे लोगों में से हैं जो अच्छे नहीं हैं, बस दूसरों की तुलना में थोड़े से अच्छे है। यदि आप साधना करते हैं और उस अध्यात्मिक आयाम में लौटते हैं जो मानव समाज में मूल रूप से हुआ करता था, चाहे आप उस उच्च स्तर तक नहीं भी पहुंचें, तब जब आप आज के समाज को पीछे मुड़कर देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह भयावह है! यह वास्तव में भयावह है! आप पायेंगे कि आज की मानवता ने वास्तव में सभी कल्पनीय बुराइयाँ की हैं।

दिव्य लोक में स्थित महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति—चाहे वे बुद्ध हों, ताओ हों, या ईश्वर हों—आज के लोगों को अब मानव नहीं मानते हैं। यह कथन थोड़ा अनुचित लग सकता है, क्योंकि वास्तव में अभी भी अच्छे लोग हैं। लेकिन वे जिसका उल्लेख कर रहे हैं वह मानवता की संपूर्ण स्थिति को लेकर है, और व्यापक स्तर पर यह वास्तव में ऐसा ही है। अतीत में, जब लोग मंदिर या अपने अपराध स्वीकार करने गिरजाघर जाते थे, तो उन्हें लगता था कि यीशु या दिव्य लोक के प्राणी वास्तव में उनकी बातें सुन रहे हैं, और वे अपने मन में जो प्रतिध्वनि सुनते थे, उससे उनके प्रश्नों का उत्तर मिल जाता था। हालांकि, आजकल के लोग, इसका अनुभव नहीं करते हैं और जो लोग बुद्ध की आराधना करते हैं, वे अब बुद्ध के अस्तित्व को नहीं देख सकते हैं। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि मानवजाति की वस्तओं के बारे में ज्ञानप्राप्त करने की सक्षमता निरंतर कम होती जा रही है और तेजी से भ्रष्ट हो रही है। इसलिए, दिव्य प्राणी अब मानवजाति

की चिंता नहीं करते हैं। क्योंकि आधुनिक लोगों के बुरे कर्म बहुत अधिक हैं और मानवजाति की वस्तुओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की सक्षमता निरंतर कम होती जा रही है, जब वे कुछ बुरा करने का परिणाम भोगते हैं, तो वे इसे एक संयोग के रूप में देखते हैं। मैंने देखा है कि यद्यपि मानवीय नैतिक आदर्श में तेजी से गिरावट आई है, लोग बिना जाने इस बहाव के साथ बह रहे हैं। कुछ लोगों की बुद्ध-प्रकृति और मूल प्रकृति अभी भी अस्तित्व में है, और [फालुन दाफा] अभ्यास के इन कई वर्षों के प्रसार के माध्यम से, कई लोग साधना के द्वारा ऊंचा उठने, और वह भी बहुत ही उच्च स्तर तक पहुँचने में सक्षम हो गये हैं। कुछ पूर्ण रूप से ज्ञानप्राप्ति कर चुके हैं, कुछ धीरे-धीरे ज्ञानप्राप्ति कर रहे हैं, और कुछ ने फलपदवी के स्तर तक साधना की है। मैं इस बारे में बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि मैं [देख सकता हूँ कि] मैंने यह व्यर्थ में ही नहीं किया है। मैं लोगों और समाज के प्रति उत्तरदायी हूँ, और मैंने दिव्य रहस्यों को व्यर्थ में ही उजागर नहीं किया है, क्योंकि मैंने लोगों को साधना के माध्यम से ऊंचा उठने में सक्षम बनाया है।

मैंने अभी जो मुद्दा उठाया है वह यह है कि लोग वास्तव में मानव होने के उद्देश्य से नहीं जीते हैं। जब मैं इस विषय को उठाता हूँ, तो बहुत से लोगों को इसे समझने में कठिनाई होती है और उन्हें लगता है कि [यह ठीक है कि] लोगों को बस इसी तरह जीवन जीना चाहिए। ठीक है—जब आप गर्भ से निकलते हैं, तो आप अन्य सभी के समान होते हैं, और आप अन्य आयामों के अस्तित्व को नहीं देख पाते हैं, इसलिए आप उन पर विश्वास नहीं करते हैं। इसके अतिरिक्त, आज के लोग आधुनिक विज्ञान में बहुत विश्वास करते हैं, हालांकि आधुनिक विज्ञान असंतोषजनक और अपूर्ण है। ब्रह्माण्ड के बारे में इसकी समझ बहुत उथली है—कहने का अर्थ यह है कि, यह बहुत निम्न स्तर का है—और यह इसी तरह की वस्तु है। इसलिए उस पर बहुत अधिक विश्वास करना लोगों के लिए बहुत बड़ा संकट उत्पन्न करता है : यह मानव नैतिकता को पूरी तरह से नष्ट कर देगा। उच्च स्तरीय प्राणी बिना नैतिक मूल्यों वाले व्यक्ति को मानव नहीं मानते हैं! इसका कारण यह है कि केवल मनुष्य ही एक मानव रूप के साथ नहीं हैं : भूत, बंदर, और ओरेंगुटान सभी के पास मस्तिष्क और हाथ-पैर होते हैं। मनुष्य को मनुष्य कहा जाता है क्योंकि नश्वर जगत में रहते हुए, उन्हें मानव नैतिक मूल्यों और आदर्शों को अपनाये रखना होता है साथ ही जीने के मानवीय मार्ग भी। जब मनुष्य इन्हें छोड़ देते हैं, तब दिव्य प्राणी इन्हें मनुष्य नहीं मानते हैं। फिर भी सभी मनुष्य यह सोचते हैं कि वे जैसा चाहे वैसे रह सकते हैं और वे चाहे वैसे विकसित हो सकते हैं। लेकिन मानव समाज उच्च-स्तरीय प्राणियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है, और मानवता कभी भी तकनीकी के माध्यम से बुद्ध आयाम तक नहीं पहुंच पायेगी। अन्यथा, वास्तव में एक अंतरिक्ष युद्ध छिड़ जाएगा! इसलिए, मानव तकनीकी—जो दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने की इच्छा, ईर्ष्या, और छह इच्छाओं और सात भावनाओं से भरी है—को उच्च स्तर तक पहुँचने की अनुमति नहीं है।

मानव मस्तिष्क सत्तर प्रतिशत से अधिक उपयोग के बिना रह जाता है, और आधुनिक चिकित्सा इसे समझने लगी है। क्यों? मानव विवेक प्रतिबंधित कर दिया गया है। तब बुद्ध के पास महान विवेक और दिव्य शक्तियाँ क्यों हैं? वे सब कुछ जानने में सक्षम और उनके पास इतना महान विवेक क्यों है? यह मेरे द्वारा अभी-अभी समझाये गए सिद्धांत के कारण है। कुछ लोग कहते हैं कि मेरी पुस्तक, "वैज्ञानिक ज्ञान की बहुत ही विस्तृत पहलुओं को छूती है!" वे पूछते हैं, "गुरू जी, क्या यह बात है कि आपके पास बहुत अधिक ज्ञान है और आप कई विश्वविद्यालयों में गये हैं?" नहीं, मैं नहीं गया हूँ। फिर ऐसा क्यों है? मेरे और आपके बीच अंतर यह है कि मेरा मस्तिष्क पूरी तरह से प्रतिबंधित नहीं है और आपके मस्तिष्क प्रतिबंधित हैं। लोग दर्शनशास्त्र, खगोल विज्ञान, भौतिकी, रसायन और मानव इतिहास जैसे विषयों को बहुत जटिल पाते हैं, लेकिन वे वास्तव में बहुत सरल हैं। वे बस मनुष्यों की छोटी सी वस्तएं हैं जो बुद्ध

मार्ग का सबसे निचला स्तर बनाती हैं। [वे क्षेत्र] सभी एक ही परिकल्पना का पालन करते हैं; अर्थात्, वे इस स्तर पर ब्रह्मांड की विशेषताओं और पदार्थों के रूप से निर्मित होते हैं—वे केवल बस यही हैं। फिर भी मानव बुद्धिमत्ता इन सब को अवशोषित नहीं कर पाती है क्योंकि मानव मस्तिष्क को बंधित कर दिया गया है। तब, किसी को क्या करना चाहिए? यदि वह अधिक जानना भी चाहता है, उसका मस्तिष्क अधिक ग्रहण करने में अक्षम है, इसलिए आपको जाकर भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान, उच्च ऊर्जा भौतिकी, दर्शनशास्त्र, इतिहास और अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता है। अपने जीवनकाल में, व्यक्ति इस तरह के एक शैक्षिक क्षेत्र के पूरे ज्ञान में भी पारंगत नहीं हो सकता है, इसलिए मानव ज्ञान बहुत दयनीय है।

मैंने अभी-अभी बताया कि आप चाहे कितना भी ज्ञान अर्जित क्यों न कर लें, और चाहे आप एक विश्वविद्यालय में प्रोफेसर या सलाहकार हों और चाहे आप कितने भी प्रसिद्ध क्यों न हों, आप तब भी एक साधारण व्यक्ति ही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि आपका ज्ञान सामान्य लोगों के स्तर से आगे नहीं बढ़ा है। साथ ही, आज के मानवजाति का अनुभवजन्य विज्ञान अपूर्ण है। उदाहरण के लिए, आज का विज्ञान न तो दिव्यों के अस्तित्व को सत्यापित कर सकता है और न ही अन्य आयामों [के अस्तित्व] को। यह अन्य आयामों में जीवन और पदार्थ के रूपों का पता नहीं लगा सकता है; यह नहीं जानता कि नैतिकता भौतिक रूप से मानव शरीर पर प्रभाव डालती है; इसे यह भी नहीं पता है कि जिसे बुरा कर्म कहा जाता है वह पदार्थ मानव शरीरों को भी घेरे रहता है। इसलिए सभी लोग आधुनिक विज्ञान में विश्वास करते हैं, लेकिन आधुनिक विज्ञान इनमें से किसी भी बात का सत्यापन नहीं कर सकता है। इसके अतिरिक्त, एक बार जब आप नैतिकता, अच्छे और बुरे कर्मों और विज्ञान की परिधि से बाहर अन्य वस्तुओं के बारे में बात करना शुरू करते हैं, तो इन विषयों को अंधविश्वास समझा जाएगा। वास्तव में, क्या यह आधुनिक विज्ञान की लाठी से धमकाकर मानवता के सबसे आवश्यक गुण नैतिकता पर प्रहार करने के लिए नहीं है? क्या ऐसा ही नहीं हो रहा है? क्योंकि यह स्वीकार नहीं करता और सद्गुण के अस्तित्व को सत्यापित नहीं कर पाता है, यह कहता है कि सद्गुण अंधविश्वास है। यदि मानव नैतिक मूल्यों को वास्तव में इस तरह से परे किया जाता है, तो मनुष्यों के पास उन्हें संयमित करने के लिए अध्यात्मिक विवेक नहीं होगा और न ही नैतिक आदर्श होंगे। वे कुछ भी करने या कोई भी अधर्म करने के लिए निडर हो जायेंगे, और यह मानव नैतिकता को निरंतर पतन की ओर धकेल देगा। यही विज्ञान की सबसे बड़ी कमी द्वारा निर्मित प्रभाव है।

मैंने पहले उल्लेख किया है कि एक निपुण वैज्ञानिक के उस प्रकार के हठीले विचार नहीं होंगे जो भावनाओं को तर्क से प्रतिस्थापित करने के कारण बनते हैं जैसे कि कई अन्य के होते हैं। उन विचारों ने आधुनिक विज्ञान को एक नहीं हिलने वाले ढांचे में बंद कर दिया है, क्योंकि लोगों को लगता है कि अनुभवजन्य विज्ञान के अतिरिक्त और कुछ भी विज्ञान नहीं है। इसके बारे में सोचें : जब हम वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग ऐसी वस्तुओं को समझने के लिए करते हैं जो मानवता पहले नहीं समझती थी, तो क्या वह विज्ञान नहीं है? वास्तव में उस खोज को तब विज्ञान का भाग माना जाएगा। क्योंकि मानवता निरंतर स्वयं को परिपूर्ण और पुन: खोज रही है जिससे विज्ञान विकसित हो सकता है और अंततः सच में ब्रह्मांड को समझने में सक्षम हो सकता है। वर्तमान में जिस तरह से अनुभवजन्य विज्ञान विकसित हो रहा है, वह बेहद बेढंगा और धीमा है। यह वास्तव में एक अंधे व्यक्ति की तरह है जो हाथी को स्पर्श करके यह समझने की कोशिश करता है कि हाथी कैसा दिखता है। यह पूरे ब्रह्मांड का पदार्थ रूप नहीं देख सकता है और न ही ब्रह्मांड की विशेषताओं का अस्तित्व। इसलिए जब यह हाथी के एक भाग को स्पर्श

करता है, तो वह सोचता है कि यह भाग ही इसकी संपूर्णता है। इसने केवल हाथी के पैर को स्पर्श किया होता है, लेकिन कहता है, "ओह, विज्ञान ऐसा होता है। यही वह विज्ञान है जो वास्तव में जीवन और पदार्थ को समझता है।" यह नहीं देख सकता कि पूरा हाथी कैसा दिखता है। यह नहीं देख सकता है कि ब्रह्मांड अनगिनत अलग-अलग काल-अवकाशों से बना है, और न ही यह अन्य आयामों या जीवन के अन्य रूपों और पदार्थों को देख सकता है, इसलिए फिर वह साधारण-सोच और हठीले लोग इन सभी बातों को अंधविश्वास होने का दावा करते हैं। यह मानवता का नैतिक पतन करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है। बहुत से लोग मानवता के सबसे प्राचीन और मौलिक गुणों पर प्रहार करने के लिए विज्ञान की लाठी का सहारा लेते हैं। यह भयावह है! यदि मनुष्य सद्गुण खो देते हैं, तो दिव्य उन्हें मानव नहीं मानेंगे। यदि दिव्य लोक मानवता को मानवीय नहीं मानता है, तो मानवता का विनाश हो जाएगा और नया बनाया जायेगा।

कुछ लोग सोचते हैं, "मानवजाति प्रगति कर रही है। हमें वानरों से लेकर हमारी वर्तमान स्थिति तक विकसित होना गौरवशाली लगता है!" लेकिन मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ : पूरे प्रागैतिहासिक काल में—चाहे यह एक लाख वर्ष पहले हों, या उससे भी बहुत पहले, 10 करोड़ वर्ष से भी पहले—पृथ्वी पर उच्च-स्तरीय सभ्यताओं का अस्तित्त्व हमेशा से रहा है; बस यह है कि वे अलग-अलग काल-अवधि में नष्ट किये गए थे। उन्हें क्यों नष्ट किया गया था? यद्यपि उनकी भौतिक और तकनीकी प्रगति बहुत तेज थी, उनकी नैतिकता स्थिर नहीं रह पायी या नष्ट हो गयी थी। इसलिए उन्हें अस्तित्व में नहीं रहने दिया गया और नष्ट कर दिया गया। आधुनिक विज्ञान की समझ से, पदार्थ की गति नियम का अनुसरण करती है। जब पदार्थ एक निश्चित अवस्था तक पहुँच जाता है, तो उसका दूसरी स्थिति में बदलाव होना अनिवार्य हो जाता है। उदाहरण के लिए, यह संभावना है कि पृथ्वी किसी अन्य ग्रह से टकरा गयी हो जब यह ब्रह्मांड में घूम रही होगी। कारण चाहे जो भी हो, वैज्ञानिकों ने वास्तव में कई विभिन्न प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों की खोज की है, और ये अवशेष आज से बहुत समय पहले के हैं, कुछ सैकड़ों हजारों वर्ष पहले के हैं, लाखों वर्ष पहले के, और यहां तक कि दसियों लाख वर्ष पहले के। प्रत्येक काल-अवधि में विभिन्न सभ्यताओं द्वारा पीछे छोड़े गए अवशेष सभी अलग-अलग हैं और एक ही काल-अवधि के नहीं हैं, इसलिए कुछ वैज्ञानिक इस मुद्दे पर विचार कर रहे हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने एक परिकल्पना का प्रस्ताव रखते हुए कहा, "प्रागैतिहासिक सभ्यताओं और प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का अस्तित्व रहा है।" यह वैज्ञानिकों द्वारा सामने रखा गया था। हमारे साधक समुदाय वस्तुओं को और भी स्पष्ट रूप से देखता है, जैसे [हम जानते हैं] कि कई विभिन्न मानव सभ्यताओं का अस्तित्त्व वास्तव में इससे पहले रहा है। क्योंकि उनके नैतिक मूल्य भ्रष्ट हो गए थे—और निश्चित रूप से, हमने देखा है कि यही हुआ है—इन सभ्यताओं का अस्तित्व समाप्त हो गया है। नष्ट हो चुकी प्राचीन ग्रीक संस्कृति से उस समय की मानवता के भ्रष्टाचार और पतनशीलता के चिन्ह देखे जा सकते हैं।

कुछ लोग कहते हैं, "हम वानरों से विकसित हुए हैं।" वास्तव में, मैं आपको बताना चाहूँगा कि मनुष्य कदापि वानरों से विकसित नहीं हुए थे। डार्विन के सिद्धांत में कहा गया है कि मनुष्य वानरों से विकसित हुए हैं। जब उन्होंने पहली बार इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया, तो उन्होंने बहुत ही व्याकुलता के साथ ऐसा किया। उनका सिद्धांत कमियों से भरा और अधूरा था। तब भी लोग आज तक इसे स्वीकार कर रहे हैं। इस पर विचार करें : आप बीते लाखों वर्षों के दौरान मनुष्यों का वानरों से विकसित होने वाली प्रक्रिया का कोई प्रमाण नहीं पा सकते हैं, जो उन्होंने प्रस्तावित किया था—कोई भी नहीं। वानर और मनुष्य के बीच कोई मध्यस्थ प्रजाति क्यों नहीं है? अन्य गैर-मानव प्रजातियां, जिन जानवरों के विकसित होने के

बारे में उन्होंने बात की थी, उनकी भी कोई मध्यवर्ती प्रक्रिया नहीं है। इसके अतिरिक्त, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में पायी जाने वाली प्रजातियां अन्य महाद्वीपों से अलग क्यों हैं? वे इन बातों को नहीं समझा सकें। तब भी लोगों ने क्रम-विकास के इस सिद्धांत को स्वीकार किया है जो कमियों से भरा हुआ है। यह कितना अजीब है!

वास्तव में, हमने देखा है कि मनुष्य वानरों से कदापि विकसित नहीं हुए हैं; यह केवल इतना है कि प्रत्येक काल-अवधि के लिए अलग-अलग प्रजातियां होती हैं। पृथ्वी और महाद्वीपीय परतें, जिन पर मानवता रहती है, स्थानांतरित हो रही हैं और बदल रही हैं। भूवैज्ञानिक एशिया, यूरोप, अमेरिका, दक्षिण और उत्तरी अमेरिका महाद्वीपों को महाद्वीपीय परतें मानते हैं। यह महाद्वीपीय परतें अक्सर अपने स्थान से खिसक जाती हैं, और तब उन पर बसी सभ्यताएं महासागर में डूब जाती हैं। तब संभवतः किसी और महासागर में महाद्वीप सतह पर उभर आता होगा; इस तरह हर वस्तु निरंतर अपनी जगह बदल रही है। वर्त्तमान के लोगों ने खोज की है कि प्रशांत, अंध, हिन्द और कई अन्य महासागरों के तलों में प्राचीन, विशाल संरचनाएं और सभ्यताएं रही होंगी। फिर भी यह पाया गया है कि यह संरचनाएं सैकड़ों हजारों साल पुरानी, लाखों साल पुरानी, या यहां तक कि और भी अधिक पुराने युगों से है। कम से कम, आज की मानवजाति यह तो जानती ही है कि महाद्वीपीय परतें पिछले कुछ सैकड़ों हजारों वर्षों से स्थानांतरित नहीं हुई हैं। तब ये संरचनाएँ महासागर में कब समायी होंगी? वे निश्चित रूप से एक लंबे समय पहले, सैकड़ों हजारों वर्ष पहले या उससे भी पहले समा गयी थीं। इसलिए जब विभिन्न महाद्वीपीय परतें स्थानांतरित होती हैं, तो उन पर पायी गयी प्रजातियां भी भिन्न होंगी, लेकिन वे क्रम-विकास के माध्यम से भिन्न नहीं हुई हैं। उनके बीच समानताएं हैं, किन्तु वे एक ही प्रजाति नहीं हैं। कदापि नहीं!

निःसंदेह, मैं बुद्ध मार्ग सिखा रहा हूँ, इसलिए यह साधारण लोगों के सिद्धांतों से भिन्न होगा, क्योंकि हमारे पास उच्च समझ है, और हम वास्तव में मानवजाति को समझते हैं। मैं आप सभी से कह रहा हूँ कि मनुष्य वानरों से विकसित नहीं हुए थे; वे ब्रह्मांड से उत्पन्न हुए थे। आप सभी जानते हैं कि चीन में ताई ची का ताओवादी सिद्धांत है। यह ताई ची सिद्धांत यिन और यांग की दो ऊर्जाओं (ची) के बारे में उल्लेख करता है। यिन और यांग के निर्माण से पहले, सभी वस्तुएं अनिश्चितता की स्थिति में होती हैं। वे इसे बिना मूल की स्थिति (वुजी) कहते हैं। उसी में से सर्वोच्च मूल (ताइजी) उभरती है। पहले यिन और यांग की दो ऊर्जाएँ प्रकट होती हैं, और फिर सर्वोच्च मूल सभी वस्तुओं का निर्माण करता है। यह ताओ विचारधारा का सिद्धांत है। मुझे लगता है कि इसमें बहुत से वैज्ञानिक गुण है। वास्तव में, मैंने यह स्थिति देखी है—निश्चित ही, मैं एकमात्र व्यक्ति नहीं हूँ जिसने यह देखा है—कि ब्रह्मांड में पदार्थ के विशाल पिण्डों की गति जीवन को उत्पन्न कर सकती है। हम इस पदार्थ को नहीं देख सकते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि इसका अस्तित्त्व नहीं है। उदाहरण के लिए, मानव नेत्र वायु नहीं देख सकते, किन्तु क्या इसका अस्तित्व नहीं है? इसका अस्तित्व है। क्या वायु से भी अधिक सूक्ष्म पदार्थ होते हैं? हाँ, ऐसे बहुत सारे होते हैं। ऐसे बहुत से पदार्थ हैं जो इस सूक्ष्म पदार्थ से भी बहुत अधिक सूक्ष्म होते हैं। पदार्थ के ऐसे विशाल पिण्डों का अस्तित्त्व ऐसे कैसे हो सकता है? वास्तव में, वे जीव हैं। किसी भी वस्तु में जीवन होता है; केवल ऐसा है कि [इसका जीवन] हमारे साधारण लोगों के आयाम में प्रकट नहीं होता है, इसलिए आप इसके जीवन का अस्तित्व नहीं देख सकते हैं। अभी मैं समझाता हूँ कि क्यों। किसी भी वस्तु में जीवन होता है। पदार्थ के इन विशाल पिण्डों ने अपनी गति के माध्यम से जीवन उत्पन्न किया, और उच्च स्तर पर, ये जीवन अधिकतर निराकार होते हैं; इनमें से कुछ मनुष्यों, जानवरों, वस्तुओं या पौधों का रूप ले लेते हैं।

तब यह बातें मानव स्तर तक कैसे पहुंची? शुरुआत में यह मनुष्यों तक नहीं पहुंचा था। ब्रह्माण्ड में पदार्थ की गति से उत्पन्न जीवन को ब्रह्माण्ड की विशेषताओं के साथ आत्मसात किया जाता है, अर्थात, ब्रह्मांड के मार्ग के सिद्धांतों के साथ, और सत्य करुणा और सहनशीलता के साथ, क्योंकि वे सत्य, करुणा और सहनशीलता से उत्पन्न हुए थे। जब इनमें से कई जीवों का उच्च-स्तरीय आयामों में सृजन हुआ, तब उनके रहने का वातावरण जटिल हो गया और उन्होंने जीवन जीने के सामाजिक नियम बनाये। यह हमारे मानव समाज की तरह ही था, जहाँ लोग अपने स्वयं की सामाजिक संरचना के अनुसार रहते हैं। जब उनकी सामाजिक संरचना बन गयी, तब ये जीव धीरे-धीरे बदलने लगे और जटिल हो गये। कुछ के स्वार्थी विचार विकसित हुए और वे उस स्तर पर जीवन जीने के ब्रह्मांड की विशेषताओं की आवश्यकताओं से भटकने लगे। अब वे उस आयाम में नहीं रह सकते थे, और इस तरह उनके पास निचले स्तर पर गिरने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। तब जब वे उस निचले स्तर पर फिर से बुरे बन गये, तो उनके पास फिर से नीचे गिरने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। इस तरह, ये जीव धीरे-धीरे इतिहास की एक लंबी अवधि में बुरे और बुरे होते गये; वे धीरे-धीरे एक आयाम से दूसरे आयाम तक नीचे गिरते चले गये, जब तक कि वे मानव आयाम तक नहीं गिर गये। इस स्तर पर पहुँचने पर अब वे निम्न-स्तरीय, सीमित अस्तित्व में रहने लगे और प्रजनन के लिए निम्न-स्तर के माध्यम का उपयोग करने लगे।

वास्तव में मूल रूप से, यह मानवीय आयाम अस्तित्व में नहीं था। ज्ञानप्राप्त व्यक्ति और उच्च-स्तरीय जीव मनुष्यों के लिये एक आयाम बनाना चाहते थे, भ्रम से भरा एक आयाम, यह देखने के लिये कि क्या बचे हुए लोगों की मूल प्रकृति बनी रहेगी या समाप्त हो जाएगी, और लोग वापस अपने मूल की ओर लौट पाएंगे या नहीं। उन्होंने इस प्रकार इन विचारों को ध्यान में रखते हुए इस आयाम का निर्माण किया। उस समय, [इस आयाम का निर्माण] मनुष्यों को—जीवों को—अंतिम अवसर देने के लिये था, और उन्होंने कई बातों को ध्यान में नहीं रखा। लेकिन बाद में उन्हें ज्ञात हुआ कि यह आयाम अद्वितीय था : इस आयाम के जीव अन्य आयामों को या अन्य आयामों में जीवों को नहीं देख सकते हैं, लेकिन ब्रह्मांड में अन्य सभी आयाम [के जीव] अन्य आयामों के दृश्यों को देख सकते हैं। किसी भी अन्य आयाम में जीव वायु में उड़ और विचरण कर सकते हैं, और किसी भी अन्य आयाम में जीव अपने शरीर को बड़ा या छोटा बना सकते हैं। आज के वैज्ञानिक सोचते हैं कि मानव विचार भी पदार्थ हैं, जैसे कि विद्युत तरंगें। आप, निश्चित रूप से, यह स्वीकार करेंगे कि विद्युत तरंगें पदार्थ हैं। लेकिन दूसरे आयामों में आपको पता चलता है कि [विचार] इतने सरल नहीं हैं। मानवीय विचार वस्तुओं को उत्पन्न कर सकते हैं जिनकी आप कल्पना करते हैं, और जिन वस्तुओं के बारे में आप सोचते हैं, वे वास्तविकता बन सकती हैं। क्योंकि मनुष्यों के पास ऊर्जा नहीं होती है, उनके विचार उत्पन्न होते ही तुरंत नष्ट हो जाते हैं। लेकिन जब महान ज्ञान प्राप्त प्राणी, दिव्य प्राणी और उच्च स्तरीय जीव, जिनके पास ऊर्जा होती है, जरा सोचिए, जिन वस्तुओं के बारे में वे सोचते हैं उनका ठोस अस्तित्व होगा। तब, आप जो कुछ भी चाहते हैं वह उत्पन्न हो जाएगा जब भी आप उसके बारे में सोचेंगे। इस प्रकार, अतीत में लोगों ने कहा है, "बुद्ध जो चाहते हैं वह मिल जाता है, और पूरी तरह से स्वतंत्र और सुख-शांति से हैं।" वे जीव इसी प्रकार अस्तित्व में हैं। लेकिन मनुष्य, इस आयाम में धकेल दिए गए हैं, [इस आयाम के रूप में] अस्तित्व में आए हैं।

सब कोई अपनी माँ के गर्भ से आया है और अपने बारे में बहुत अच्छा अनुभव करता है। कुछ लोग सफल व्यवसायी हैं; कुछ उच्च अधिकारी हैं; कुछ निश्चिंत जीवन जीते हैं, इसलिए सभी को यह लगता है कि वे दूसरों से अच्छे हैं। वास्तव में, आप भी पीड़ित हैं! ऐसा इसलिए है क्योंकि आप नहीं जानते कि

आप पहले कैसा जीवन जीते थे। उदाहरण के लिए, धर्मों में कहा गया है, "मानव जीवन यंत्रणा है।" क्यों? जब आप अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेते हैं, तो आपके पास यह भौतिक शरीर होता है जो अणुओं से बना होता है। जो अन्य आयामों में होते हैं उनके पास अणुओं से बना शरीर नहीं होता है, क्योंकि उनके शरीर की सबसे ऊपरी परत परमाणुओं से बनी होती है। लेकिन सतही पदार्थ जो अणुओं से बना है वही इस आयाम को बनाता है। मांस का मानव शरीर भी अणुओं से बना होता है। आप इस तरह के मांस के शरीर के साथ पैदा होते हैं, और आपको अणुओं से बनी आंखें दी जाती है और जो अन्य आयामों को नहीं देख सकती हैं। इसलिए, आप भ्रम में जीते हैं। इस प्रकार, भ्रम में होते हुए आप ब्रह्मांड की सच्चाई को नहीं देख सकते हैं। क्या आप यह नहीं कहेंगे कि आप किसी ऐसे व्यक्ति की तरह हैं जो पूरे आकाश को कुएं के तल से देखने की कोशिश कर रहा है? बस केवल यही एक बात जीवन को बहुत दयनीय बनाती है। इसके अतिरिक्त, इस शरीर के साथ, आप दर्द, ठंड, गर्मी, प्यास, चलने की थकान को सहन करने में सक्षम नहीं होंगे—किस न किसी तरह से, कई बातें आपके लिए संकट और बहुत कष्ट लाएंगी। इसके अतिरिक्त, आपको जन्म, वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु के चक्र का भी सामना करना पड़ेगा, और आपको ज्यादातर रोग होते रहेंगे। आपको संभवतः यह लगता है कि आप एक निश्चिंत जीवन जी रहे हैं, लेकिन वास्तव में केवल यह है कि कष्टों के बीच आप दूसरों से थोड़े अच्छे हैं, और उनसे थोड़ा कम दुःखी हैं, इसलिए आपको लगता है कि सब कुछ बहुत निश्चिंत है। यही मनुष्यों के अस्तित्व का रूप है, इसलिए जीने के इस परिवेश में लोग धीरे-धीरे अपनी मूल प्रकृति गंवा बैठे हैं और दिव्यों को और भी कम मानने लगे हैं। और अनुभवजन्य विज्ञान की अपूर्णता [के प्रभाव] के कारण, लोगों ने अपने मानव नैतिक आदर्शों को गंवा दिया है और सबसे भयानक स्थिति में गिर गये हैं।

तब भी मानव संसार का एक बहुत बड़ा लाभ है : क्योंकि यह दुःखों से भरा है, यह एक व्यक्ति को साधना करने में सक्षम बना सकता है। बुद्ध हमेशा बुद्धत्व के एक ही आयाम में क्यों रहते हैं? वे इससे भी अधिक ऊँचा क्यों नहीं उठ सकते? बोधिसत्व बुद्ध बनने की साधना करने में असमर्थ क्यों हैं? यदि आप थोड़ा भी दुःख भोगना चाहते हैं, तो आपके लिए दुःख को ढूंढ़ने का कोई स्थान नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक व्यक्ति केवल तभी साधना अभ्यास कर सकता है जब वह भ्रम के बीच अपने बुद्ध स्वभाव को प्रबल बनाने में सक्षम हो। [ऊपर बुद्ध के आयाम में] कोई भ्रम नहीं है और वे सब कुछ देख सकते हैं। यदि आप सब कुछ देख सकते हैं, तो आपके साधना का कोई लाभ नहीं होगा। इसलिए, साधना और ज्ञानोदय पहले आता है, और देखना उसके बाद। कुछ लोग कहते हैं, "यदि मैं वस्तुओं को देख सकता हूँ मैं साधना करूंगा, और यदि मैं वस्तुओं को नहीं देख सकता तो मैं साधना नहीं करूंगा।" यदि आप सभी वस्तुओं को देखने में सक्षम होते, तो साधारण समाज फिर मानव समाज नहीं रह जाएगा; यह दिव्यों का समाज होगा। शत प्रतिशत लोग, बिना किसी अपवाद के, जाकर साधना करेंगे, और यहां तक कि जिन लोगों ने सभी प्रकार के जघन्य अपराध किये हैं और जो सबसे बुरे हैं, वे भी साधना करने आएंगे। इसके बारे में सोचें : क्या यह अभी भी एक मानव समाज होगा? ऐसा है कि, मनुष्य इस वातावरण में इसलिए नीचे गिर गये क्योंकि वे बुरे बन गये थे। यदि आप वापस लौटना चाहते हैं, तो आपको निम्नलिखित दो कारकों से जाना होगा : एक है दुःख, और दूसरा है ज्ञानोदय। ज्ञानोदय की बात करते हुए, यीशु ने "विश्वास" शब्द का प्रयोग किया था, जबकि पूर्व में वे "ज्ञानोदय" शब्द का उपयोग करते हैं। यदि आप इन वस्तुओं को गंवा देते हैं तो आप साधना नहीं कर सकते। लेकिन अधिकतर लोगों को यह क्यों लगता है कि साधना करनी बहुत कठिन है? वास्तव में, साधना अभ्यास स्वयं कठिन नहीं है; जो इसे कठिन बनाता है वह है साधारण लोगों की भावनाओं को नहीं छोड़ पाना। पूरे इतिहास में, लोगों को कभी नहीं बताया गया कि बुद्ध मार्ग क्या है। बुद्ध शाक्यमुनि ने जो सिखाया उसी को लोग व्यवस्थित बुद्ध मार्ग

मानते हैं। इसके बारे में सोचें : यह विशाल ब्रह्मांड सर्वथा पूर्ण, परिपूर्ण और ज्ञान से भरा है। बुद्ध शाक्यमुनि ने बुद्ध सिद्धांतों के केवल एक छोटे से अंश को सिखाया था, और जो उन्हें पता था वह सब कुछ उन्होंने लोगों को नहीं समझाया। उन्होंने लोगों को केवल वही सिखाया जो उन्हें उस समय जानने की आवश्यकता थी। इस प्रकार, आज जो बुद्ध मार्ग समाज में बच गया है, वह संपूर्ण बुद्ध मार्ग का एक छोटा, छोटा सा अंश है। मैंने अभी-अभी उल्लेख किया है कि मैंने समाज के लिए बहुत सी वस्तुएं की हैं और कुछ अभूतपूर्व किया है। जो पुस्तक मैंने लिखी है, ज़ुआन फालुन, उसमें प्रचलित शब्दावली का उपयोग नहीं किया गया है क्योंकि आज की प्रचलित शब्दावली उच्च-स्तरीय, गूढ़ अर्थों को सम्मिलित नहीं कर सकती है। इसलिए, मैंने इसे साधारण बोलचाल की शैली में लिखा है।

मैंने बहुत कुछ बताया है। क्योंकि आज पर्याप्त समय है, मैंने आपके साथ हमेशा से कुछ अधिक बातें की हैं। किन्तु यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो यदि मैं बहुत उच्च स्तर की बातें करूंगा तो शायद इन्हें समझ नहीं पाएंगे। उदाहरण के लिए, कुछ लोगों ने अभी तक [शिक्षाओं] का अध्ययन नहीं किया है, और केवल इसलिए सुनना चाहते हैं क्योंकि वे उनके बारे में अच्छा अनुभव करते हैं; हो सकता है कि कुछ लोग यहाँ कुछ प्राप्त करने या मुझे कुछ करते देखने के लिये आये हैं। ऐसे कई लोग हैं जो अलग-अलग मानसिकताओं के साथ आये हैं। यदि मैं आज यहां प्रदर्शन करता, तो आप खुशी से हंसते, जैसे कोई जादू का खेल या किसी प्रकार का करतब देखते समय होता है, तब आप मुझे या शिक्षाओं को गंभीरता से नहीं लेंगे। बुद्ध मार्ग को इस तरह फैलाने की अनुमति नहीं है। मैं केवल आपको इस बुद्ध मार्ग को समझाऊंगा, और आप इस पर विश्वास करते हैं या नहीं यह आप पर निर्भर करता है। फिर भी इसकी शक्ति महान है, क्योंकि मैंने उन वस्तुओं को सम्मिलित किया है जो मैं लोगों को देना चाहता हूँ, और उन वस्तुओं को शिक्षाओं में सम्मिलित करना चाहता हूँ जो उन्हें साधना में सक्षम बना सके। जब तक आप मेरे वीडियोटेप्स, ऑडियोटेप्स, और यह पुस्तक जो मैंने लिखी है, देखते हैं या सुनते हैं, आप इसे अनुभव कर पायेंगे; जब तक आप [पुस्तक] पढ़ते रहेंगे, आपका शरीर शुद्ध होता जाएगा और आपको रोग मुक्त वाली स्थिति में पहुंचा दिया जाएगा; जब तक आप साधना करते हैं, आप उन वस्तुओं को देख पायेंगे जो साधारण लोग देखने में असमर्थ हैं; जब तक आप साधना करते रहेंगे, आप अनुभव करेंगे और उन बातों के बारे में आत्मज्ञान प्राप्त करेंगे जो साधारण लोग करने में असमर्थ हैं। जैसे-जैसे आपका अध्यात्मिक स्तर ऊपर उठता जाएगा, बातें अधिक से अधिक अद्‌भुत होती जाएंगी, और यह सब पुस्तक में अंतर्निहित है। लेकिन यदि आप साधना नहीं करते हैं तो आप इन बातों को नहीं देख पाएंगे। आप कहते हैं कि एक बार पुस्तक पढ़ने के बाद आप वस्तुओं को देखना चाहते हैं, लेकिन यह असंभव है! आप केवल अपने अध्यात्मिक स्तर के अनुसार और अपनी समझ के अनुरूप वस्तुओं को देख पाएंगे। जब तक आप ऊपर उठने के लिए साधना करते हैं, और जब तक आप निरंतर गहनता से अभ्यास, साधना और पढ़ाई करते हैं, आप और अधिक बातें अनुभव, देख पाएंगे, और अधिक अद्‌भुत बातें जान पाएंगे।

यदि मैं बहुत ही उच्च स्तर की बातें करता हूँ, इसे कई लोगों के लिए समझना बहुत कठिन हो सकता है। मेरे अनुसार व्यवस्थित रूप से शिक्षा प्रदान करते हुए मुझे दो वर्ष हो गये हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैंने पूरी तरह से उन शिक्षाओं को बनाया है जो मुझे मानवों को देनी थी। मैं लोगों को अपने उपदेशों को रिकॉर्ड करने की अनुमति भी नहीं देता हूँ। क्यों? बहुत से लोग नवीनता ढूंढ़ते रहते हैं, यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि गुरू जी ने क्या नयी बातें कही हैं। वे इन बातों को ढूंढ़ते हैं और लगन से साधना नहीं करते हैं। मैंने जो लोगों को साधना के लिए दिया है वह ज़ुआन फालुन है, और यह पुस्तक ही एक व्यवस्थित शिक्षा है। अन्य बातें जो मैंने कही हैं, वे केवल ज़ुआन फालुन को समझाने के लिए हैं और

इसकी पूरक हैं। कोई व्यक्ति जो रिकॉर्डिंग करता है और उन्हें समाज में फैलाता है, वह उन लोगों के साथ हस्तक्षेप करता है जो लगन से साधना करते हैं। जुआन फालुन निम्न से उच्च स्तर तक व्यवस्थित है, जबकि मैं अभी जो कुछ भी सिखा रहा हूँ वह केवल वर्तमान दर्शकों को ध्यान में रखकर है।

मैं एक और मुद्दे पर ध्यान देना चाहता हूँ : हम सभी साधक एक ही साधना मार्ग पर बने रहने पर बल देते हैं। मैं आप सभी को बताना चाहता हूँ कि यह बात "सभी अलग-अलग मार्गों से महत्वपूर्ण बातों को लेना" साधारण लोगों की एक कहावत है, यह साधकों के शब्द नहीं है। जब हम तकनीकी वस्तुएं सीखते हैं, तो जो कोई भी तकनीकी में कुशल है, उससे सीखने में कोई समस्या नहीं है। किन्तु उच्च स्तर के सिद्धांत मानवजाति के सिद्धांतों से विपरीत हैं। जिन बातों को मानवजाति अच्छा समझती है वे बुरी हो सकती हैं, वह सबकुछ विपरीत हो जाता है। आप देखते हैं कि यहां पर दिन है, लेकिन वहां पर रात होती है; आपको जो उचित लगता है वह अनुचित हो सकता है। क्यों? मैं आप सभी को एक सरल सिद्धांत समझाता हूँ। आप सभी जानते हैं कि जब लोग दुःखी होते हैं, तो उन्हें लगता है कि यह बुरा है, या यदि कोई आपको धमकाता है, तो आप असहज अनुभव करते हैं और आप सोचते हैं कि यह बुरा है। मैं आपको बता रहा हूँ, जब लोग थोड़ा कष्ट उठाते हैं और थोड़ी कठिनाई सहते हैं, तो यह अच्छी बात है! इसलिए आप देख सकते हैं कि जो मैं आपको सिखा रहा हूँ वह अलग है। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके उच्च स्तर के आयामों तक पहुँचने पर यह सिद्धांत पूरी तरह से विपरीत हो जाते हैं। वहाँ वे सोचते हैं कि मनुष्य होना मानव अस्तित्व का उद्देश्य नहीं है। यदि आप मानव जगत में थोड़ी कठिनाई उठाते हैं और पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के ऋण का भुगतान करते हैं, तो आप उच्च स्तर के आयाम पर लौट सकते हैं, और आप उस स्थान पर भी लौट सकते हैं जहाँ आपके जीवन का सृजन हुआ था, जो कि सबसे अद्भुत स्थान है। यदि आप ऊंचे स्तर तक पहुँचने में असमर्थ भी रहते हैं तो, आपके अगले जीवन में दुःख कम होंगे क्योंकि अब आपके बुरे कर्म कम हो जाएंगे।

लेकिन यदि आप उस बुरे कर्म का भुगतान नहीं करते हैं जो आप पर ऋण है, तो आप उच्च-स्तरीय दिव्य लोक में जाने में असमर्थ होंगे। यह उस सिद्धांत की तरह ही है जिसका मैंने वर्णन किया है : यदि कोई बोतल गंदगी से भरी हुई है, चाहे आप बोतल को कितनी भी अच्छी तरह से बंद कर लें, जब आप उसे पानी में फेंकेंगे, तो वह छपाक से नीचे डूब जाएगी। यदि आप थोड़ी गंदगी निकाल देते हैं, तो यह थोड़ी ऊपर की ओर आ जाएगी; थोड़ी और निकालने पर यह थोड़ी और ऊपर आ जाएगी; जैसे-जैसे आप और अधिक निकालते जाएंगे, और बंद करने के बाद आप इसे फिर से पानी में फेंकने की कोशिश करेंगे, तो चाहे आप इसे कितना भी नीचे धकेल दें, आप इसे डुबोने में सक्षम नहीं होंगे, क्योंकि यह अपने आप ही ऊपर तैरने लगेगी। यह वैसा ही है जब लोग साधना करते हैं। कई जीवनकालों से होकर आपका शरीर निकला है, संभवतः हर जीवनकाल में आपने ऐसे कार्य किये होंगे जैसे कि दूसरों का लाभ उठाना, दूसरों को धोखा देना, हानि या दूसरों की हत्या करना, या फिर इससे भी बुरे कर्म। इसलिए, इन कार्यों के कारण आप पर जो बुरे कर्मों का ऋण है उसका भुगतान करना होगा। इस ब्रह्मांड में एक सिद्धांत है : बिना कुछ खोए आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते, और यदि आप कुछ प्राप्त करते हैं, तो आपको कुछ खोना पड़ेगा। आपको उन कर्मों की भरपाई करनी होगी जो आप पर उधार हैं, यदि इस जीवन में नहीं तो अगले जीवन में—निश्चित रूप से यह ऐसा ही है। इसलिए, आजकल जब लोग दुःखदायी परिस्थितियों से गुजरते हैं, वे सोचते हैं कि यह एक संयोग है और यह दूसरों द्वारा उनके प्रति अन्यायी और बुरे होने के कारण हुआ था। मैं आप सभी को बता रहा हूँ कि उन परिस्थितियों में से कोई भी संयोग नहीं है और ये सभी उन कर्मों के कारण हुआ है जो आप पर अतीत से उधार था। यदि आपके कोई बुरे कर्म नहीं होते,

तो सड़क पर चलते हुए हर कोई आपको देखकर मुस्कुराता, और जिन लोगों को आप जानते भी नहीं हैं वे आपके लिए कुछ भी काम करने आ जाते। आप पूरी तरह से निश्चिंत होते! लेकिन इस प्रकार का व्यक्ति मानवीय आयाम में निश्चित ही नहीं रह सकता, क्योंकि उसे दिव्यलोक लौट जाना चाहिए। मनुष्य ऐसे ही होते हैं। क्योंकि लोगों के पास बुरे कर्म हैं, यदि वे अपने मन को शुद्ध नहीं कर सकते हैं, तो वे कभी साधना में आगे नहीं बढ़ पाएंगे। यह उस सिद्धांत की तरह है जिसका मैंने अभी उल्लेख किया था।

यह वास्तव में, लोगों के लिए बुरा नहीं है कि वे थोड़ा कष्ट सहें और थोड़ी कठिनाई उठाएं। यदि आप थोड़ा कष्ट सहते हैं, तो आप अपने बुरे कर्म को चुका पाएंगे, और आप वास्तव में एक अद्‌भुत स्थान पर चले जाएंगे जहाँ आप फिर कभी दुःखी नहीं होंगे। भले ही आपको लगता है कि आप मानव जगत में बहुत खुश हैं, आपके पास लाखों हो सकते हैं, या आप कितने भी उच्च अधिकारी बन गए हों, यह शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा, केवल कुछ दशकों तक चलेगा। इसके बारे में सोचें : आप इस संसार में कुछ लेकर नहीं आये थे, और आप इस संसार से खाली हाथ ही जाएंगे। आप अपने साथ क्या ले जा सकते हैं? कुछ भी नहीं। आपने [जो प्राप्त किया है] किसे देंगे? आपको लगता है कि आपने उसे अपने वंशजों को दे दिया है, लेकिन जब आप अपने अगले जीवन में पुनर्जन्म लेते हैं, तो वे आपको पहचान नहीं पाएंगे, और यदि आप उनके लिए काम भी करते हैं और उनके लिए फर्श पर झाड़ू लगाते हैं, तब भी आपको उनसे दया भाव या एक पैसा भी अधिक न मिले। यह वास्तव में ऐसा ही है! लोग बस इसी तरह से भ्रम में हैं।

हम यहां मानव जीवन के आवश्यक सिद्धांतों के बारे में बात कर रहे हैं। [ये सिद्धांत] विशेष रूप से साधकों पर लागू होते हैं। इसके बारे में सोचें : जैसा कि मैं इसे देखता हूँ, जब आप दुःखी होते हैं, जब दूसरे आपका लाभ उठाते हैं, आपके लिए कठिनाई पैदा करते हैं, या जब आपको कुछ भौतिक हितों की हानि होती है, तो ऐसा नहीं है कि यह बुरी बात है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस ब्रह्मांड में एक सिद्धांत है कि जो कुछ खोते नहीं हैं वे कुछ पाते नहीं, और यदि आप कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको कुछ खोना होगा। यह भी एक सत्य है कि यदि आप कुछ पाते हैं और खोते नहीं हैं, तो आपको बलपूर्वक कुछ खोने के लिए विवश किया जाएगा—यही ब्रह्मांड की प्रकृति है। विशाल ब्रह्मांड में सभी पदार्थ जीव हैं, और सभी पदार्थ सत्य, करुणा और सहनशीलता से बनते हैं। इस प्रकार, सभी पदार्थ—चट्टानें, लोहा और स्टील, हवा, मानवजाति द्वारा बनाया गया कोई भी उत्पाद, और अन्य पदार्थ को मिलाकर—यह सब अपने सूक्ष्म स्तर पर, इस सत्य, करुणा, सहनशीलता की विशेषता से बने हुए पदार्थ हैं। सत्य, करुणा, सहनशीलता इस विशाल ब्रह्मांड में सब कुछ निर्माण करते हैं, और ये ब्रह्मांड में सब कुछ संतुलित करते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी को मारता है, कोसता है, लाभ उठाता है, या किसी अन्य व्यक्ति के दुःख का कारण बनता है, तब वह खुशी अनुभव करता है क्योंकि वो वह पक्ष है जिसने लाभ उठाया है। एक साधारण व्यक्ति उसे कहेगा, "आप वास्तव में शक्तिशाली हैं!" [इस व्यक्ति] को कोई हानि नहीं हुई है। लेकिन मुझे लगता है कि उसकी बहुत हानि हुई है। क्यों? जब वह बुरे कार्य करता है, तो वह लाभ उठाने वाला पक्ष बन जाता है। जब वह दूसरों का लाभ उठाता है, तो इसका अर्थ है कि उसे कुछ मिला है, और इसलिए उसे खोना चाहिए। क्योंकि दूसरे पक्ष को हानि हुई है और उसने अपने सुख खोए हैं, तब उस पक्ष को कुछ मिलना चाहिए। वह कैसे कुछ प्राप्त कर सकता है? जब आप उसे मारते या कोसते हैं, तो आपके शब्दों या आपके प्रहार की शक्ति के आधार पर, सफेद पदार्थ जिसे सद्‌गुण कहा जाता है जो आपके शरीर को घेरे हुए होता है उसका उसी के जितना बड़ा भाग आपको छोड़कर उसके पास चला जाएगा। लेकिन वह भी एक मनुष्य है और संभवतः वह इस सिद्धांत को नहीं समझता है। [वह कहता है,]

"आपने मुझे मारा," और वह वास्तव में क्रोधित हो जाता है। जब वह क्रोधित हो जाता है, तो वास्तव में वह सद्‌गुण को अपने तक नहीं पहुंचने देता है। जब वह घूमकर एक मुक्का मारता और कोसता है, तो वह सद्‌गुण वापस लौटा देता है। अब, दोनों में से किसी भी व्यक्ति ने न कुछ खोया और न कुछ पाया, दोनों में से किसी ने कुछ नहीं पाया। ब्रह्मांड के सिद्धांत निष्पक्ष हैं।

यदि, एक साधक के रूप में, वह इस मोहभाव को छोड़ देता है और कहता है : "चाहे आप मुझे मारें या कोसें, मेरा मन स्थिर रहेगा और मैं इस पर कोई ध्यान नहीं दूंगा, क्योंकि मैं एक साधक हूँ। आप एक साधारण व्यक्ति हैं और मैं वस्तुओं को उस तरह नहीं देखता जैसे आप देखते हैं।" तब इसके बारे में सोचें : क्या इस व्यक्ति का नैतिक आदर्श साधारण व्यक्ति से ऊपर नहीं बढ़ा है? जब कोई दूसरा व्यक्ति उसे मारता है, तो क्या वह उसे सद्‌गुण नहीं देता है? और सद्‌गुण का यह पदार्थ गोंग में विकसित हो सकता है। ब्रह्मांड से एकत्रित कुछ पदार्थों को सद्‌गुण के साथ मिलाकर ही आपका गोंग विकसित होता है। सद्‌गुण के बिना, आप अपने साधना में गोंग उत्पन्न करने में असमर्थ होंगे। इसलिए जब वह आपको मारता है, तो वह आपको अपना सद्‌गुण देता है, आप अपना सद्‌गुण बढ़ाते हैं, और आप उच्च स्तर पर साधना कर सकते हैं—क्या यह सिद्धांत ऐसे ही काम नहीं करता है? आपको मिलने वाली क्षतिपूर्ति उस साधारण व्यक्ति द्वारा दिए गये कष्ट से कहीं अच्छी है, है न? तब जब वह आपको मारता है, आपको कोसता है, या आपके लिए कुछ समस्या पैदा करता है, जिसके कारण आप दुःखी होते हैं। जब आप दुःख सहते हैं, तो आपके शरीर का काला पदार्थ जिसे बुरा कर्म कहा जाता है, जो आपके पिछले जन्मों का उधार है, वह सद्‌गुण के बराबर भाग में बदल जाएगा, और उसे आपको सद्‌गुण का एक भाग भी देना होगा [जो आपके दुःख के बराबर होगा]। इसके बारे में सोचें : एक साधारण व्यक्ति यह सोचता है कि आपको एक ही समय में दो लाभ मिल रहे हैं—"आपने मुझे थोड़ा दुःख दिया, लेकिन मुझे दो रूपों से इसका लाभ मिला है।"

वास्तव में एक साधक को चार प्रकार से लाभ प्राप्त होगा। जब आप यह सब सह चुके होते हैं, आपने बातों को वैसे नहीं लिया जैसा कि उसने, और आपका मन शांत था, मतलब, आपने बदला नहीं लिया जब मारा गया या पलटकर जवाब नहीं दिया जब कोसा गया। इसके बारे में सोचें : जब आपका मन शांत रहा, तो क्या साधना के माध्यम से आपके नैतिकगुण में सुधार नहीं हुआ? यदि वह आपके लिए कष्ट और दुःख पैदा नहीं करेगा तो आप साधना कैसे कर पाएंगे? यह विचार कि आप बस आराम से बैठे हुए, चाय पीते हुए और टीवी देखते हुए, साधना में प्रगति कर सकते हैं, जहाँ तक आप चाहते हैं वहां तक बढ़ सकते हैं, यह निश्चित ही असंभव है। जब आप इस जटिल वातावरण के बीच में रहकर, कठिनाइयों के माध्यम से और कष्टों को सहते हैं, तभी आप अपने नैतिकगुण में सुधार कर सकते हैं और उच्च आदर्श और अध्यात्मिक स्तर तक पहुँच सकते हैं। तब, यदि आपका नैतिकगुण उसके जैसा नहीं है, तो क्या आपके नैतिकगुण में सुधार नहीं हुआ है? और क्या आपने एक ही बार में तीन लाभ प्राप्त नहीं कर लिये? तब एक साधक के रूप में, क्या आप अपने स्तर में सुधार नहीं करना चाहते हैं और जितना जल्दी हो सके आध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचना नहीं चाहते? तब यदि आपके नैतिकगुण में सुधार होगा, तो क्या आपके गोंग में भी वृद्धि नहीं होंगी? निश्चित ही! एक सिद्धांत है जिसमें कहा गया है, "किसी का भी गोंग उसके नैतिकगुण के जितना ही ऊँचा होता है।" यदि हम कहें कि व्यक्ति का नैतिकगुण ऐसा है जिसे वह सुधार नहीं सकता, तो क्या वह अपने गोंग को बढ़ाने में सक्षम हो सकता है? यह निश्चित ही असंभव है! ऐसी कोई बात नहीं होती और ऐसा होना पूरी तरह से असंभव है। कुछ लोग सोचते हैं कि दूसरों के चरित्र उनके जितने अच्छे नहीं हैं, तो फिर उन दूसरों के पास गोंग क्यों है? एक बात में वे आपसे उतने

अच्छे नहीं हैं, लेकिन ऐसी अन्य बातें हो सकती हैं जिनमें वे आपसे अच्छे हों। क्योंकि साधना एक के बाद एक मोहभाव को हटाने की प्रक्रिया है, जब वे मोहभाव प्रकट होते हैं जिन्हें हटाना बाकी रह गया है, तो वे साधारण लोगों की तरह व्यवहार करते हैं, लेकिन एक बार उन मोहभावों को हटा दिया जाता है तो वे [मोहभाव] वास्तव में फिर से प्रकट नहीं होंगे। एक साधक के रूप में, जब आप दुःख सहते हैं, तो आप एक ही साथ चार वस्तुएं प्राप्त कर रहे होते हैं। इसे परिहास में कहा जाए तो—आपको इस तरह का लाभ कहां मिल सकता हैं?

कुछ लोग वास्तव में व्याकुल और क्रोधित हो जाते हैं जब कोई उन्हें मारता या कोसता है। जब कोई उनका लाभ उठाता है या उनको पैसे का धोखा देता है, तो वे बहुत क्रोधित हो जाते हैं! लोग इन बातों को बहुत गंभीरता से लेते हैं और अपने व्यक्तिगत लाभ को थोड़ा सा भी नहीं जाने देते। इसके बारे में सोचें : यह व्यक्ति कितना दयनीय जीवन जीता है! जब वह एक छोटा सा लाभ प्राप्त करता है, तो वह केवल उस छोटे से लाभ के लिए, मन से प्रसन्नता अनुभव करता है। आजकल लोग ऐसे ही हैं। वह यह अनुभव नहीं करता कि उसने वास्तव में क्या गंवा दिया है—इस वस्तु को गंवाना सबसे भयावह है! सद्‌गुण इतना मूल्यवान क्यों है? आप सभी जानते हैं कि पूर्व के बुजुर्ग लोग कहते हैं, "केवल सद्‌गुण से ही किसी को सौभाग्य मिल सकता है।" सौभाग्य के कई पक्ष होते हैं : एक उच्च पदस्थ अधिकारी बनना, बहुत सा धन प्राप्त करना, घर और जमीन होना, खुशियाँ होना, इत्यादि। ये सभी वस्तुएं सद्‌गुण के बदले में प्राप्त होती हैं। एक व्यक्ति जीवनभर इसे अपने साथ रख सकता है। जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो यह उसकी मूल चेतना के साथ-साथ जाता है—जब आप पुनर्जन्म लेते हैं, तो यह आपके साथ जाता है। केवल सद्‌गुण ही नहीं—काला पदार्थ, बुरे कर्म, जिसका मैंने अभी उल्लेख किया है, वह भी आपके पूरे जीवन में आपके साथ-साथ रहेगा। ये दोनों पदार्थ व्यक्ति के साथ-साथ जाते हैं। अतीत में, बुजुर्ग लोग कहा करते थे, "जो अधर्म करेगा, उसे भोगना पड़ेगा।" भुगतान का प्रबंध कौन करेगा? ऐसा लेखा-जोखा कौन रखेगा? आपके इन मामलों से निपटने का कष्ट कौन उठाएगा? फिर भी सद्‌गुण आपके शरीर पर रहता है और इससे कसकर चिपका रहता है, और आपका अगला जीवन इस पर निर्भर होता है। यदि आपके पास बहुत सारे बुरे कर्म हैं, तो आपके जीवन में बहुत दुःख, रोग और आपदाएं होंगी; बहुत सारे सद्‌गुण के साथ, आपके जीवन में बहुत सारा पैसा, सौभाग्य और एक उच्च स्तर के अधिकारी के रूप में पद प्राप्त होंगे। ये [वास्तविकताएँ] इन [पदार्थों] द्वारा लायी जाती हैं। और एक साधाक के लिए, सद्‌गुण और भी अधिक मूल्यवान है, क्योंकि यह गोंग में परिवर्तित हो सकता है—ऐसा ही है।

आधुनिक विज्ञान इस मुद्दे को नहीं देख सकता क्योंकि यह इस आयाम से बाहर नहीं जा सकता। उस आयाम का रूप कैसा है जिसमें मनुष्य रहते हैं? मैं आप सभी को यह बताऊंगा कि यह आयाम जिसमें मानवजाति रहती है, उसका अस्तित्त्व पदार्थ के दो प्रकार के कणों के बीच में है। हम में से जिन्होंने भौतिकी का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि अणु, परमाणु, परमाणु नाभिक, क्वार्क और न्यूट्रिनो ये सभी स्तरों के कण हैं और ये भौतिक तत्व हैं जो बड़े कणों का निर्माण करते हैं। हम मनुष्य किस स्तर के कणों के बीच रहते हैं? सबसे बड़ी वस्तु जिसे हम मनुष्य खुली आंखों से देख सकते हैं वह है एक ग्रह और एक सूक्ष्मदर्शी से हम जो सबसे छोटी वस्तु देख सकते हैं वह है एक अणु। वास्तव में, हम मनुष्य ग्रहों और अणुओं के एकदम बीच के आयाम में रहते हैं। हम सोचते हैं कि यह व्यापक, विशाल और अतुलनीय रूप से बड़ा है। मैं कहूँगा कि आधुनिक विज्ञान उन्नत नहीं है; कोई अंतरिक्ष यान कितनी भी ऊंची उड़ान भर लें, आप हमारे भौतिक आयाम से बाहर नहीं जा सकते; कंप्यूटर कितना भी उन्नत क्यों

न हो, वह मानव मस्तिष्क की बराबरी नहीं कर सकता, क्योंकि मानव मस्तिष्क अभी भी एक रहस्य बना हुआ है। इस प्रकार, मानव विज्ञान बहुत ही उथला है।

सभी, यह कल्पना करने की कोशिश करें : हमारी मानवजाति ग्रहों और अणुओं के बीच रहती है। क्योंकि अणु परमाणुओं से बने होते हैं, तो परमाणुओं और अणुओं के बीच का आयाम कैसा होगा? आधुनिक वैज्ञानिक परमाणुओं को केवल एकाकि रूप से समझने में सक्षम रहे हैं, उनकी अलग-अलग संरचनाओं को समझते हुए। वास्तव में, जिस स्थान पर परमाणु रहते हैं, वह स्वयं में एक स्तर है, और इस स्तर द्वारा निर्मित भौतिक आयाम बहुत विशाल है; बस यह है कि आपने जो ढूंढा है वह एक बिंदु तक ही सीमित है। फिर इस सतह [परमाणुओं] के स्तर का आयाम कितना विशाल है? हम हमेशा दूरी को नापने के लिए मानवजाति के आधुनिक विज्ञान के दृष्टिकोण के आधार पर अपने आदर्श बनाते हैं। आपको उस रूपरेखा से और अनुभवजन्य विज्ञान द्वारा तैयार की गई अवधारणाओं से बाहर निकलने की आवश्यकता है। आपको इसमें प्रवेश करने के लिए उस आयाम के अपने स्वरूप के अनुरूप होना होगा। परमाणुओं और अणुओं के बीच की दूरी की बात करें तो, विज्ञान यह जानता है कि एक अणु की चौड़ाई नापने के लिए बीस लाख परमाणुओं को पंक्तिबद्ध करना होता है। यह कि, उन्होंने मान लिया है कि यह दूरी बहुत विशाल है, इसलिए आप अनुभवजन्य विज्ञान की रूपरेखा और मानसिकता से बातों को समझ नहीं सकते हैं। तब यह कल्पना करने की प्रयत्न करें : क्या परमाणुओं और परमाणु नाभिक के बीच (का क्षेत्र) एक आयाम नहीं है? तब, परमाणु नाभिक और क्वार्क के बीच की आयामी दूरी कितनी विशाल है? तब, क्वार्क और न्यूट्रिनो के बीच की दूरी का क्या? वास्तव में, आज का विज्ञान केवल न्यूट्रिनो तक का पता लगा पाया है। वे वास्तव में उन्हें देख नहीं सकते हैं; वे केवल उपकरणों का उपयोग करके उनका पता लगा सकते हैं और उनके अस्तित्व को जान सकते हैं। वास्तव में, [उन्होंने जो कुछ भी पता लगाया है] वह अभी भी मूल पदार्थ के निर्माण को समझ पाने से बहुत परे है!

मैंने अभी जिसकी चर्चा की है वह आयामों के अस्तित्व का सबसे सरल रूप है। मानव स्तर के सभी पदार्थ, जिसमें हवा में पाए जाने वाले सभी पदार्थ शामिल हैं जिन्हें आप देख नहीं सकते हैं और वे भी जिन्हें आप देख सकते हैं, जैसे कि लोहा, काँक्रीट, जानवर, पौधे, अन्य पदार्थ, और मानव शरीर, अणुओं से बने हैं। मनुष्य अणुओं के सतह पर निवास करता है, जैसे कि एक त्रि-आयामी चित्र में होता है। आप केवल इस सतह पर निवास कर सकते हैं और इसे छोड़ नहीं सकते। मानव विज्ञान इस छोटे से आयाम के अंदर की वस्तुओं तक ही सीमित है और इससे बाहर नहीं निकल सकता। और तब भी लोग कहते हैं कि विज्ञान बहुत उन्नत है और अन्य सभी सिद्धांतों को नकार देते हैं। मानव तकनीकी ब्रह्मांड के उच्च ज्ञान तक नहीं पहुँच सकती है। यदि यह वास्तव में इस आयाम के बहार निकलने में सक्षम होता है, तो यह अन्य आयामों और उनके काल अवकाशों द्वारा निर्मित संरचनाओं में जीवन और पदार्थों के रूपों को देख पायेगा। तब भी हम साधक इन वस्तुओं को देख पा रहे हैं, क्योंकि बुद्ध उच्चतम-स्तर के वैज्ञानिक होते हैं।

मैंने इस मुद्दे पर चर्चा की थी जब मैंने दिव्य नेत्र के विषय में बात की थी। जब लोग मानव नेत्रों का उपयोग किए बिना वस्तुओं को देखते हैं, तो वे दिव्य नेत्र का उपयोग करते हैं, जो व्यक्ति की भौहों के बीच से या किसी की नाक के शुरुआत की जगह से (जिसे ताओवादी पर्वत का आधार कहते हैं) सीधे पिनियल ग्रंथि तक जुड़ने का मार्ग है।

मेडिकल ग्रंथों में इसे पीनियल ग्रंथि कहा जाता है, जबकि ताओवादी इसे नीवान महल कहते हैं। वे इसी के विषय में बात कर रहे हैं। लेकिन चिकित्सा शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि पीनियल ग्रंथि के सामने के आधे हिस्से में मानव नेत्र की पूरी संरचना बनी होती है। आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों को यह बहुत विचित्र लगता है : "यहाँ एक आँख क्यों है?" उन्हें लगता है कि यह बची रह गयी आँख है, क्योंकि वे अभी भी इन बातों को समझाने के लिए क्रम विकास के सिद्धांत का उपयोग करते हैं। वास्तव में, यह ऐसा ही होना चाहिए और यह बची हुई संरचना निश्चित ही नहीं है। जब लोग अपनी आंखों का उपयोग किए बिना वस्तुओं को देखते हैं... वास्तव में, तब ही जब आंखों की अच्छी तरह से साधना की गयी हो, तो वे वस्तुओं के आरपार भी देख सकते हैं और [दिव्यनेत्र के समान] उनमें शक्तियां भी होती हैं, क्योंकि बुद्ध मार्ग असीम है। साधरणतौर पर, जब कोई व्यक्ति मानव नेत्रों का उपयोग नहीं करता है, वस्तुओं को देखने के लिए अणुओं से बनी इन नेत्रों का उपयोग नहीं करता है, तो वह इस आयाम को पार कर और अन्य आयामों में दृश्यों को देख सकता है। बस यही बात है। इस प्रकार, साधक वह देख सकते हैं जो साधारण लोग नहीं देख पाते हैं। वास्तव में, जीवन में कभी-कभी कुछ साधारण लोग धुंधले रूप से कुछ अस्पष्ट घटनाएं देख पाते हैं, जैसे कि अपने सामने किसी व्यक्ति को देखना जो अचानक अदृश्य हो जाता है, या एक या दूसरी वस्तु देखना या सुनना। यह संभव है कि आपके द्वारा देखी या सुनी गई धुंधली वस्तुएं वास्तव में अन्य आयामों की वस्तुएं थीं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे लोग जिनके दिव्यनेत्र या कान पूरी तरह से बंद नहीं हैं, वे कभी-कभार दूसरे आयामों की वस्तुओं को देख या सुन सकते हैं।

मैंने केवल उस आयाम पर चर्चा की जिसमें मनुष्य रहते हैं। वास्तव में, जिस ग्रह पर हम मनुष्य रहते हैं, वह सबसे बड़ा कण या पदार्थ नहीं है। इस ग्रह से परे इससे भी बड़े पदार्थ हैं! इस प्रकार, बुद्ध शाक्यमुनि की आंखें, अत्यंत सूक्ष्म पदार्थों की बात की जाए तो, बहुत ही सूक्ष्म पदार्थ भी देख सकती थीं; बड़े पदार्थों की बात की जाए तो, वह बहुत बड़े और विशाल पदार्थों को भी देख सकती थीं। लेकिन बुद्ध शाक्यमुनि अभी भी यह नहीं देख सके कि ब्रह्मांड वास्तव में कितना विशाल था, और इसलिए उन्होंने कहा, "यह इतना बड़ा है कि इसका कोई बाह्य नहीं है और इतना सूक्ष्म है कि इसका कोई आंतरिक नहीं है।" यह ब्रह्मांड कितना विशाल है! इस बारे में सोचें कि यह कितना जटिल है; यह वैसा नहीं है जैसा मानवजाति समझती है। हमारे इस आयाम को ही लें तो, और जिस रूप में इसका अस्तित्व है—यही अपने आप में बहुत जटिल है! इस आयामी रूप के साथ-साथ, समानांतर आयामी रूप भी विद्यमान हैं, और इन समानांतर आयामों में कई विभिन्न अलग-अलग विश्व हैं—यह बहुत ही जटिल है। मैं जिन अलग-अलग विश्वों का उल्लेख कर रहा हूँ, वे दिव्य लोक हैं और इत्यादि। प्रत्येक आयाम का एक अलग काल-अवकाश भी होता है। इसके बारे में सोचें : क्या परमाणुओं से बना एक आयाम का समय अणुओं से बने हमारे आयाम के समान हो सकता है? इनकी अंतरिक्ष की अवधारणा और इनकी दूरियां हमसे भिन्न हैं, क्योंकि सब कुछ अलग हो जाता है। परग्रहियों की उड़नतश्तरियां बिना कोई पहचान छोड़े प्रकट और अदृश्य कैसे हो जाती हैं, और वे इतनी तेजी से यात्रा कैसे कर पाती हैं? वे अन्य आयामों में यात्रा करते हैं—बस यही बात है। यदि मानवता ब्रह्मांड की अकथनीय घटनाओं को समझने के लिए आज के विज्ञान के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, या इस पद्धति का उपयोग साधना या धर्म को जानने के लिए करती है, तो यह इन बातों को कभी नहीं समझ पायेगी। इसे अपने सोचने का माध्यम बदलने और वस्तुओं को एक अलग दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। मानवजाति के इतिहास में, विज्ञान आज के यूरोपीय लोगों द्वारा खोजें और आविष्कार किये गये तथाकथित अनुभवजन्य विज्ञान तक सीमित नहीं था, और यह एकमात्र मार्ग नहीं था—और भी अन्य मार्ग थे। पृथ्वी पर प्राचीन सभ्यताओं के अस्तित्व की विकास प्रक्रियाएं जो पृथ्वी पर पाई गयी थीं वे जीवन, पदार्थ और ब्रह्मांड को समझने के अलग-अलग

मार्ग थे। चीन के प्राचीन विज्ञान ने एक भिन्न मार्ग अपनाया था। वास्तव में, चीनी सभ्यता में बहुत उच्च स्तर के पक्ष सम्मिलित हैं, क्योंकि मनुष्य की नैतिकता उचित नहीं है, इसलिए [प्राचीन चीनी विज्ञान का हस्तांतरण] प्रतिबंधित किया गया। इसलिए, [प्राचीन चीनी विज्ञान] को आगे नहीं बढ़ाया गया, और जिसे बढ़ाया गया वह पश्चिम का यह सबसे निम्न स्तर का विज्ञान था। इसलिए यह बहुत अपूर्ण है।

मैंने अभी इस विषय में बात की कि कैसे मनुष्य को मूल रूप से इस भौतिक आयाम में नहीं बनाया गया था और मानव होने के उद्देश्य के विषय में। यदि मनुष्य निरंतर नीचे की ओर गिरता रहा तो वह उन्मूलन—पूर्ण उन्मूलन—का सामना करेगा जिसे "मन और शरीर का पूर्ण उन्मूलन" कहा जाता है, और यह एक भयानक संभावना है! इसलिए, जब बुद्ध मनुष्य को बचाते हैं, ताकि आपको इस भयानक संकट का सामना नहीं करना पड़े और आपको मानवीय दुःख से दिव्य लोक में पहुंचा सकें। यह वास्तव में, मौलिक रूप से मनुष्य का दुःख के मुद्दे का समाधान है। बुद्ध पर विश्वास करने के लिए मनुष्य का जो प्राचीन समय में शुरुआती बिंदु था अब यह उससे अलग है। अतीत में, जब लोग बुद्ध पर विश्वास करते थे, तो वे बुद्ध की अर्चना करते थे, बुद्धत्व की साधना करते थे, और वे बुद्ध का आदर करते थे—इसमें कोई अन्य विचार सम्मिलित नहीं थे। आज, मनुष्य बुद्ध पर विश्वास करता है क्योंकि उसे बुद्ध से वस्तुओं की चाह होती है। लेकिन यह वस्तुओं को पाने का मोहभाव बुद्धों की दृष्टि में सबसे गंदा, घिनौना मोहभाव है। तो इसके बारे में सोचें : बुद्ध आपको बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं, और आप है कि साधारण लोगों के बीच रहकर आराम और सुख चाहते हैं। यदि आपको वास्तव में साधारण लोगों के बीच रहकर पूरी तरह से सुख और आराम से रखा जाए, तो आप कभी भी वास्तव में बुद्ध नहीं बनना चाहेंगे, क्योंकि आप पहले से ही बुद्ध बन गए होंगे। ऐसी अवस्था कैसे संभव हो सकती है? मनुष्य पर एक जीवन से दूसरे जीवन तक बुरे कर्मों का उधार रहता है और बुरे कर्मों का भुगतान नहीं करता है जो उसने किए हैं, और अब आप केवल सुख की आशा कर रहे हैं। आप इसे इस तरह कैसे पा सकते हैं? केवल एक ही विधि काम करती है : साधना करें और तब ही आप अपने द्वारा किए गए बुरे कर्म को समाप्त कर सकते हैं। और यदि आप यह भी कहते हैं कि आप बुद्ध नहीं बनना चाहते हैं, तो आपको एक अच्छा व्यक्ति तो होना ही चाहिए और अधिक अच्छे कार्य और कम बुरे कर्म करने चाहिए। केवल इस तरह से ही आप भविष्य में सुखी रह सकेंगे और आपके वास्तविक जीवन का समय बढ़ जाएगा। तब यह भी संभव हो सकता है कि पुनर्जन्म लेते समय, व्यक्ति के मस्तिष्क से यादों को पूरी तरह से हटा दिया जाए, और वह एक बुरे परिवेश में पुनर्जन्म ले, और [समाज के] साथ-साथ विनाश की ओर बह जाए।

अभी-अभी मैंने उल्लेख किया कि बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा कि यह ब्रह्मांड इतना बड़ा है कि इसका कोई बाह्य नहीं है और इतना छोटा है कि इसका कोई आंतरिक नहीं है। यह संभव है कि कुछ लोग अभी भी इसका अर्थ अच्छी तरह समझ नही पाते हैं। अर्थात, बुद्ध शाक्यमुनि ने किस बात को देखा था? उन्होंने तीन हजार असीम विश्वों के सिद्धांत की बात की थी। बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा था : न केवल हमारे जैसे भौतिक शरीर वाले लोग अन्य आयामों में रहते हैं, बल्कि यह भी कि हमारे मानव विश्व की तरह तीन हजार विश्व हैं। हमारी आकाशगंगा में तीन हजार ऐसे ग्रह हैं। उन्होंने यह भी कहा कि रेत के एक कण में भी तीन हजार असीम विश्व होते हैं। उन्होंने कहा कि रेत के एक कण में तीन हजार आयाम होते हैं जिसमें हम जैसे मनुष्य रहते हैं। लेकिन आप वहां रहने वाले मनुष्यों के आकार के अनुपात को समझने के लिये उन अवधारणाओं की समझ का उपयोग नहीं कर सकते हैं जो आज के विज्ञान से आते हैं, क्योंकि वे विभिन्न काल-अवकाशों के रूपों में रहते हैं।

कुछ लोग शायद यह सोचेंगे कि मैंने अभी जो कथन कहे हैं वह विचित्र है और इसे समझ नहीं सकते हैं। कुछ कल्पना करने का प्रयत्न करें : पृथ्वी नियमित क्रम के अनुसार घूम रही है। तो एक परमाणु की परिक्रमा करने वाले इलेक्ट्रॉन और सूर्य की परिक्रमा करने वाली पृथ्वी के बीच क्या अंतर है? यह एक ही रूप में होता है। यदि आप एक इलेक्ट्रॉन को बड़ा करते हैं ताकि यह पृथ्वी के जितना बड़ा हो जाए, तो क्या आप इस पर जीवन पाएंगे? उस पर किस तरह के पदार्थ होंगे? बुद्ध शाक्यमुनि ने कहा कि ब्रह्मांड अंतहीन रूप से छोटा है। उन्होंने कितनी दूर तक देखा? उन्होंने बहुत सूक्ष्म पदार्थ देखे थे। उन्होंने कहा था कि रेत के एक कण में तीन हजार असीम विश्व होते हैं—रेत के एक छोटे से कण में तीन हजार असीम विश्व होते हैं। तब यह कल्पना करने का प्रयत्न करें : यदि बुद्ध शाक्यमुनि ने जो कहा है वह सत्य है, तो क्या उस रेत के कण के विश्वों में नदियां, झीलें और सागर नहीं होंगे? और क्या उन नदियों, झीलों और सागरों में रेत नहीं होगी? और क्या वहां के रेत के कण में भी तीन हजार असीम विश्व नहीं होंगे? और तब क्या रेत के कण के रेत के कण में भी तीन हजार असीम विश्व नहीं होंगे? बुद्ध शाक्यमुनि ने और आगे पता लगाने के बाद पाया कि ऐसा अंतहीन चलता रहा। इस प्रकार, उन्होंने कहा कि यह ब्रह्मांड इतना छोटा है कि इसका कोई आंतरिक नहीं है। उन्होंने मूल पदार्थ की उत्पत्ति को नहीं देखा। निश्चित रूप से, मैंने अतीत में इस मूल पदार्थ की उत्पत्ति पर चर्चा की है। मैं आज इस पर अधिक बात नहीं करुंगा। क्योंकि मैंने इतने ऊंचे और गूढ़ स्तर पर बात की है, और विशेषत: जब बहुत सारे लोग मैंडरिन भाषा को अच्छी तरह से समझ नहीं पाते हैं, मैं इन बातों के विषय में और अधिक नहीं बोलूँगा। मुझे लगता है कि अभी के लिए इतना पर्याप्त है। अब आप कुछ प्रश्न कर सकते हैं जो साधना से और फा का अध्ययन करते समय उत्पन्न हुए हैं, और मैं उनका आपके लिए उत्तर दूंगा।

शिष्य : हमने जुआन फालुन (भाग I और II) पढ़ी है, और उसमें एक वाक्यांश है जिसे मुझे समझना कठिन लग रहा है, क्योंकि मैं तंत्रवाद का शिष्य हुआ करता था। उसमें एक विषय है जो यह कहता प्रतीत होता है कि वर्तमान में बोधिसत्वों और बुद्धों के स्तर आपदा का सामना कर रहे हैं।

गुरु जी : यह एक उच्च-स्तरीय प्रश्न है। आप उच्च स्तर तक साधना करने के बाद ही इन बातों को देख और समझ पाएंगे। वास्तव में, मैं केवल इस मुद्दे की व्यापक रूपरेखा पर ही चर्चा कर सकता हूँ। यह *मार्ग* मनुष्य के इस स्तर पर काम नहीं करता है क्योंकि समाज में नैतिकता गिरती जा रही है और क्योंकि मनुष्य के मन के नैतिक मूल्यों का नाश हो गया है। जब लोगों के विचार सच्चे नहीं रहते हैं, तो वह *मार्ग* काम नहीं करता है। जब मानव समाज का *मार्ग* काम नहीं करता है, तो मानवता नीचे गिरने लगती है। यदि मानव समाज के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान पर यह *मार्ग* काम करना बंद कर देता है, और यदि [*मार्ग* से] भटकाव बहुत उच्च-स्तरीय आयामों में होने लगता है, तो पदार्थ और जीवन नीचे गिरने लगेंगे। वे बुरे बन गए होते, इसलिए वे नीचे गिर जाते। इसलिए यदि यह समस्या बड़े पैमाने पर होने लगती है, तो यह बात केवल मानव जगत तक ही सीमित नहीं होगी। उदाहरण के लिए, यह *मार्ग* ऊपर से नीचे की ओर फैलता जाता है, इसलिए यदि ऊपर के स्तर थोड़े से भी भटक जाते हैं, तो नीचे के स्तर पूरी तरह से अलग हो जाएंगे। यह वैसा ही है जब आप बन्दूक चलाते हैं, यदि बन्दूक चलाते समय आपका निशाना थोड़ा सा भी हट जाए, तो गोली निशाने से बहुत ज्यादा हट कर लगेगी। निचले स्तरों पर ऐसे विशाल परिवर्तन क्यों होते हैं? समाज भयावह हो गया है! नशीली दवाओं का दुरुपयोग, मादक पदार्थों की तस्करी—लोग सभी प्रकार के बुरे कार्य करते हैं। बहुत से लोगों ने कई बुरे कार्य किये हैं, जैसे कि छिपे हुए आपराधिक गिरोह में होना, समलैंगिक होना, चरित्रहीन होना, और इत्यादि, जो मानवजाति के आदर्शों से निम्न हैं। बुद्ध इन मुद्दों को कैसे देखते हैं? आपकी सरकारें उन्हें अनुमति देती हैं, और कानून

उन्हें अनुमति देता है, लेकिन यह केवल मनवीय अनुमति है—दिव्य लोक के सिद्धांत उन्हें अनुमति नहीं देते हैं! अतीत में, मानवजाति सुंदर और अच्छी वस्तुओं की चाह रखती थी। लेकिन अब, जब आप उन खिलौनों को देखते हैं जिन्हें लोग बेचते हैं और जिन चित्रों की लोग चित्रकारी करते हैं, वे सभी आड़े-तिरछे धब्बे है, और इसे अब कलाकृति माना जाता है। वे क्या दर्शाते हैं? कोई स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता। मनुष्य के सभी मूल्य विपरीत दिशा में जा रहे हैं। कचरे का एक ढेर किसी निपुण कलाकार की कला मानी जा सकती है। पूरे समाज में अब यही चलन है। मल के आकार के खिलौने भी दुकानों में अब बेचे जा रहे हैं। अतीत में, लोग केवल ऐसी ही गुड़िया खरीदते थे जो बहुत ही सुंदर हो, लेकिन अब खोपड़ी, दुष्ट-दिखने वाले लोग, राक्षस, और भूत-पिशाचों वाले खिलौने भी बनाये जा रहे हैं और वे बहुत जल्दी बिक भी जाते हैं, क्योंकि बुरे विचारों वाले लोग उन्हें खरीदने के लिए तैयार हैं। यह क्या दर्शाता है? यही कि मनुष्य के मूल्यों में भारी गिरावट आ गयी है! अतीत में, संगीत विद्यालय से स्नातक बनने के लिए, और स्वयं को शिष्ट रूप से पेश करने के लिए, गायकों की आवाज सुरीली होनी आवश्यक थी, क्योंकि आपके संगीत से लोगों को सुंदरता का अनुभव करवाने की आवश्यकता होती थी। आजकल, जिन्हें देखकर आप यह नहीं बता सकते हैं कि वे पुरुष हैं या महिला, जिनके बाल लंबे हैं और जो "आह! आह!" चिल्लाते हुए सितारे बन जाते हैं क्योंकि टेलीविजन वाले उन्हें बढ़ावा देते हैं। सब कुछ नष्ट हो रहा है और मानवता की हर बात गिरती जा रही है। ऐसी कई और परिस्थितियाँ हैं जो बहुत भयावह हैं! यदि आप साधना नहीं करते हैं तो आपका ध्यान उनपर नहीं जाएगा। धर्म के बारे में मनुष्य की समझ भी बदल गयी है। वह इसे राजनीति के रूप में मानने लगा है। कुछ लोग हर बार अपना मुंह खोलते ही बुद्ध का अपमान करते हैं, और आजकल भोजन सूची में भोजन के ऐसे नाम है जैसे "बुद्ध दीवार कूद रहे हैं।" यह बुद्ध का अपमान करना है! क्या हो गया है आजकल के समाज को? यदि आप साधना नहीं करते हैं तो आपको इन बातों के बारे में पता नहीं चलेगा, लेकिन जब आप साधना करते हैं और इन बातों को बाद में देखते हैं, तो आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे! इसके बारे में सोचें : समाज का इस स्तर तक गिर जाना कोई पृथक घटना नहीं है। यह इसलिए हैं क्योंकि इस *मार्ग* के साथ किसी आयाम में समस्याएँ हुई हैं। यह कई पदार्थों और जीवों के कारण हुआ है जो इस *मार्ग* से भटक गये हैं। मैं इसे आपको केवल इस तरह समझा सकता हूँ क्योंकि यदि मैं इसमें अधिक गहराई तक जाऊंगा, तो यहां बैठे बहुत से लोग इसे समझ नहीं पाएंगे। मुझे लगता है कि यदि मैं इसे इस तरह समझाऊंगा तो आप समझने में सक्षम होंगे।

शिष्य : मैं पहले तो यह पूछने में लज्जित अनुभव करता था, लेकिन यदि मैं इस अवसर का लाभ नहीं उठाता हूँ तो मैं सचमुच इस अवसर को गंवा दूंगा। बहुत से लोग इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ रहे हैं, लेकिन आज गुरु जी का यहां होना बहुत ही अनमोल अवसर है। कुछ वर्ष पहले की एक रात, मैं तांत्रिक पद्धति में आधी रात के बाद ध्यान लगा रहा था, क्योंकि मैं तंत्रवाद की साधना करता था। लेकिन मैं एक विमान की तरह गोल-गोल घूमने लगा, अप्रत्याशित तेजी से, और मैं इस तरह हवा में उठने लगा। मैं इस ऊंचाई तक उठ गया और फिर मेरे सिर के ऊपर से बाहर आ गया। जब मैं अपने सिर के ऊपर से बाहर निकला तो तेज दर्द हुआ, और दर्द में होते हुए मैं और ऊंचा उठ गया। मैं बहुत डर गया था, मुझे लगा कि संभवतः मेरी चेतना चली गई है, और मैं अपना शरीर नहीं देख पा रहा था। दूसरे दिन, कुछ अजीब हुआ : जब मैं दिन के उजाले में अपने कमरे में बैठा था, मैंने चाँदी जैसे प्रकाश का छल्ला देखा और चाँदी जैसी रोशनी देखी, लेकिन वे पांच मिनट के बाद अदृश्य हो गए। तीसरे दिन, मैंने एक फालुन देखा। यह सब क्या हो रहा था?

गुरु जी : भले ही आप अतीत में तंत्रवाद का अभ्यास करते थे, लेकिन इसने आपके लिए कुछ नहीं किया। आप फालुन क्यों देख पा रहे थे? ऐसा इसलिए है क्योंकि आपके साधना शुरू करने से पहले ही हमने आपकी देखभाल शुरू कर दी थी। साधकों के लिए हवा में उठना बहुत सरल है; यह कुछ ऐसा है जिसे आज का विज्ञान नहीं समझा सकता है। वास्तव में, व्यक्ति हवा में उठ सकता है जब उसके शरीर की सभी ऊर्जा नाड़ियां खुल जाती हैं। यदि वह हवा में नही भी उठता है, तब भी जब वह चलता है, ऊंचाई पर चढ़ता है, या सीढ़ियां चढ़ता है, तो उसे ऐसा अनुभव होता है कि वह हवा में उठ रहा है, और वह थकता नहीं है। यही सब होगा जब ऊर्जा नाड़ियां खोली जाती हैं। मुख्य चेतना के विषय में बात करें तो, कुछ लोगों की मुख्य चेतनाओं के लिए शरीर को छोड़ना सरल होता है और दूसरों के लिए यह कठिन होता है। आपने जब शरीर को छोड़ दिया, तो फालुन आपके तैरते हुए शरीर को गोल घुमाने लगा, और इसलिए आप तेजी से घूमने लगे। और आप जो अधिक ऊँचाई पर जाने से डरने गले, वह इसलिए कि उस समय आपकी ऊर्जा का स्तर केवल उतना ही ऊंचा था। जब पहली बार आप कुछ इस तरह की घटना का सामना करते हैं तो आपको डर लगेगा; यह सभी के लिए ऐसा ही है। वास्तव में, हम में से कई लोग जो फालुन दाफा का अभ्यास करते हैं, वे उड़ सकते हैं, और यह सब सामान्य है। एक बार जब कोई व्यक्ति साधना में प्रवेश करता है, तो उसकी ऊर्जा नाड़ियाँ खुलने लग जाएंगी, और जब संपूर्ण दिव्य परिमार्ग खुल जाएगा, तो वह व्यक्ति हवा में उठने में सक्षम हो जाएगा। जब आपने डरने की बात की, वास्तव में, डरने की कोई बात ही नहीं है; यदि आप हवा में उड़ रहे हैं, तो बस उड़ते रहें। उस समय [आप डरे हुए थे] क्योंकि किसी ने आपको इस [घटना] के बारे में नहीं बताया था, और क्योंकि साधारण लोगों के बीच आपको सिखाने के लिए कोई गुरु जी नहीं थे। उड़ना एक सामान्य घटना है और यह व्यक्ति के मन से नियंत्रित होता है। यदि आप कहते हैं, "मैं नीचे आना चाहता हूँ," जैसे ही आप यह सोचेंगे, आप नीचे आ जाएंगे; यदि आप कहते हैं कि आप ऊपर उठना चाहते हैं तो आप ऊपर उठेंगे। यदि आप अधिक डरेंगे, तो यह मोहभाव बन जाएगा, और आप आसानी से नीचे गिर सकते हैं, इसलिए सुनिश्चित करें कि आप इससे डरें नहीं। अतीत में, एक व्यक्ति थे जिन्होंने अर्हत बनने के बिंदु तक साधना की थी, लेकिन जैसे ही वे उत्साहित हो गये उनका स्तर नीचे गिर गया। क्यों? मानवीय उत्साह भावना की एक अभिव्यक्ति है और यह एक मोहभाव है। एक साधक यह कहेगा, "यदि आप मुझे कोसते हैं या मेरे बारे में अनिष्ट बातें कहते हैं, तो मैं विचलित नहीं होऊंगा; यदि आप कहते हैं कि मैं अच्छा हूँ तो भी मैं विचलित नहीं होऊंगा; यदि आप कहते हैं कि मैं बुरा हूँ तो भी मैं यह बात अपने मन पर नहीं लूँगा।" तो जब वे व्यक्ति उत्साहित हो गये तो वे नीचे गिर गये। अर्हत बनने तक की साधना करनी कितनी कठिन बात है, लेकिन तब भी, इन व्यक्ति ने साधना करनी जारी रखी! कुछ वर्षों के बाद, उन्होंने फिर से अर्हत बनने तक की साधना की, लेकिन इस बार उन्होंने सोचा, "मैं फिर से उत्साहित नहीं हो सकता हूँ। अन्यथा, मैं फिर से नीचे गिर जाऊंगा।" वे उत्साहित होने से डरने लगे। लेकिन एक बार जब वे डर गये तो वे फिर से नीचे गिर गये। ऐसा इसलिए है क्योंकि डर भी एक मोहभाव है। बुद्धत्व की साधना करनी बहुत ही गंभीर बात है। यह कोई छोटी बात नहीं है! इसलिए आपको इस मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए।

इससे पहले कि लोग और अधिक प्रश्न करें, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ : जब हम साधना करते हैं तो हमें एक ही पद्धति पर प्रतिबद्ध होना चाहिए। मैं जानता हूँ कि अतीत में बहुत से लोगों ने तंत्रवाद का अभ्यास किया है; बहुत से लोग बुद्धमत को मानते हैं; कई अन्य लोग ईसाई धर्म या कैथोलिक धर्म को मानते हैं। मुझे लगता है कि साधना में, आपको एक ही पद्धति पर प्रतिबद्ध होना चाहिए! आपको एक ही पद्धति पर प्रतिबद्ध क्यों होना चाहिए? यह एक अटल, परम सत्य है! [एक पद्धति पर प्रतिबद्ध नहीं होना] यह एक प्रमुख कारण है कि *मार्ग* के अंतिम समय में साधना का सफल होना क्यों असंभव हो गया है।

इसके पीछे कुछ कारक हैं : लोग शिक्षाओं को नहीं समझ पा रहे हैं, और लोग साधना में बातों को मिलाने लगे हैं। साधना में बातों को मिलाना एक प्राथमिक कारण है। एक बार जब आप एक पद्धति का अभ्यास करते हैं, तो आप अन्य पद्धतियों का अभ्यास नहीं कर सकते हैं। मैं आपको इस तरह से बातें क्यों समझाता हूँ? यह इसलिए है क्योंकि "सभी पद्धतियों में से सर्वश्रेष्ठ को चुनना" यह तर्क साधारण लोगों द्वारा दिया जाता है, और यह बातें केवल सामान्य तकनीकों और ज्ञान प्राप्त करने में काम करती हैं। हालांकि, साधना के लिए सिद्धांत, एक ही पद्धति पर प्रतिबद्ध रहना है। बुद्धमत में वे इसे "कोई दूसरी पद्धति नहीं" कहते हैं। यदि आप कहते हैं कि "मैं बुद्धमत और ताओवाद, दोनों पद्धतियों की साधना करूंगा," तो आप किसी की भी साधना करने में सफल नहीं होंगे, और कोई आपको गोंग नहीं देगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि "साधना व्यक्ति पर निर्भर करती है, जबकि गोंग गुरु पर निर्भर करता है।" इसके बारे में सोचें : क्या आप साधना के माध्यम से केवल कुछ चीगोंग का प्रशिक्षण करके बुद्ध बन सकते हैं?

यदि आप तंत्रवाद का अभ्यास करते हैं, तो क्या आप जप करके, थोड़ी सी समझ जोड़कर, और कुछ मुद्राएँ करके बुद्ध बन सकते हैं? मानव अभिप्राय का कोई महत्व नहीं होता—यह केवल एक इच्छा है। केवल गुरु ही हैं जो सच में कुछ कर सकते हैं! कुछ लोग सोचते हैं, "हम बुद्ध के नाम का जाप करेंगे, तंत्रवाद का अभ्यास करेंगे, और बुद्धमत के चीगोंग का अभ्यास करेंगे क्योंकि [ये अभ्यास] सभी बुद्धमत अभ्यास हैं। इसमें क्या अनुचित है?" मनुष्य इसके विषय में इस तरह सोचते हैं, लेकिन दिव्य प्राणी इसके बारे में ऐसा नहीं सोचते हैं। इसके बारे में सोचें : तथागत बुद्ध या बुद्ध अमिताभ ने कैसे साधना में सफलता प्राप्त की? उन्होंने अपनी स्वयं की साधना विधियों को अपनाकर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की है, और उनका गोंग स्वयं उनकी बनायी विधि से आया है। इस प्रकार उन्होंने अपने दिव्य लोक [बनाने] की प्रक्रिया पूरी की और स्वयं साधना करने में सफल हुए। उनकी सभी वस्तुएं उनकी साधना पद्धतियों के तत्वों से उत्पन्न हुई थी [जिन्होंने उन्हें प्रभावित किया] जैसे-जैसे वे साधना करते गए।

बुद्ध शाक्यमुनि की अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचने की विधि को "शील, समाधि, प्रज्ञा" कहा जाता है। आपको चार प्रकार के ध्यान, आठ प्रकार की एकाग्रता का अभ्यास करना होगा और उनकी विधियों के अनुसार साधना करनी होगी। इस पद्धति का साधना अभ्यास करने से, आप केवल बुद्ध शाक्यमुनि के स्तर तक ही पहुँच पाएंगे यदि आपका गोंग भी उनके जितना होगा जितनी उन्होंने साधना की थी। यदि आप तंत्रवाद की साधना करना चाहते हैं, यदि आप वैरोचन के दिव्य लोक में जाना चाहते हैं, तो आपको तंत्रवाद की आवश्यक्ताओं "शरीर, वाणी, और मन" का पालन करना होगा। यदि आप सभी का अभ्यास करते हैं, तो आपको कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। यदि आप पवित्र भूमि की साधना करते हैं और "बुद्ध अमिताभ" का पाठ करते हैं और फिर वापस जाकर जेन सिद्धांतों का अभ्यास करते हैं, तो उसी प्रकार आपको कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। लोगों के पास केवल एक ही शरीर होता है, और आपके शरीर को बुद्ध-शरीर में बदलना—बुद्ध शरीर में, आप जानते हैं—यह इतना सरल काम नहीं है, और आप इसे स्वयं करने में सक्षम नहीं होंगे। एक बुद्ध को स्वयं ही ऐसा करना होगा, क्योंकि आपके शरीर को बुद्ध-शरीर में बदलना एक अत्यंत जटिल कार्य है, जो कि मानवजाति के पास पाए जाने वाले सबसे सटीक औजार [से जो किया जा सकता है] की तुलना में बहुत अधिक जटिल है। उन्हें आपके शरीर में एक संरचना जिसे "यंत्र" कहा जाता है को स्थापित करना होगा और आपके उदर के निचले भाग में कई बीज डालने होंगे जो *बुद्ध मार्ग* की दिव्य शक्तियों के विभिन्न रूपों को विकसित करेंगे। ये सभी वस्तुएं उनकी साधना पद्धति से उत्पन्न हुई हैं, और केवल उन्हीं के साथ आप उनकी साधना पद्धति का अभ्यास

कर सकते हैं, और उस स्तर तक साधना करने में सक्षम हो सकते हैं जो बुद्ध के दिव्य लोक में प्रवेश का स्तर होता है। यदि आप एक पद्धति पर प्रतिबद्ध नहीं होते हैं, तो आप कैसे, केवल एक शरीर के साथ, सफलतापूर्वक दो अलग-अलग बुद्ध दिव्य लोकों में [प्रवेश] कर सकते हैं? जब बुद्ध आपको इस तरह का व्यवहार करते हुए देखते हैं तो वे आपको वे वस्तुएं नहीं देंगे और यह सोचेंगे कि आपकी नैतिकता सही नहीं है। इसे स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, आप एक ऐसे मनुष्य हैं जो *बुद्ध मार्ग* को क्षति पहुँचाने की कोशिश कर रहा है। एक तथागत बुद्ध के लिए अपनी स्थिति तक पहुँचने के लिए साधना करना इतना कष्टदायक और कठिन होता है! एक तथागत बुद्ध को अपने स्तर तक पहुँचने के लिए साधना करने में इतना कष्ट उठाना पड़ता है! यदि आप एक साधारण व्यक्ति होते हुए, उनकी वस्तुओं को बदलने और बिगाड़ने करने का प्रयत्न करते हैं, दो वस्तुओं को मिश्रित करते हैं, और उन वस्तुओं को उलझाते हैं जिन पर दो बुद्ध ज्ञानप्राप्त हुए हैं, तो क्या आप *बुद्ध मार्ग* को क्षति नहीं पहुंचा रहे हैं? यह इतना गंभीर है! लेकिन आज के भिक्षुओं और आज के मानवजाति को यह भी पता नहीं है कि वे *बुद्ध मार्ग* को क्षति पहुंचा रहे हैं। हालांकि, आपको पूरी तरह से दोषी नहीं ठहराया जा सकता है क्योंकि आप नहीं जानते हैं, किन्तु चाहे आपको दोष नहीं दिया जाएगा, आपको फिर भी कुछ नहीं दिया जाएगा। किसी को भी *बुद्ध मार्ग* को ऐसे ही क्षति पहुँचाने नहीं दिया जा सकता। आप दो बुद्धों के *मार्गों* को, दो तथागत बुद्ध के *मार्गों* को क्षति पहुंचा सकते हैं। ऐसा कभी नहीं होगा! इसलिए, जबतक आप साधना में वस्तुओं को मिलाते रहेंगे, तब तक आपके लिए कुछ भी प्राप्त करना असंभव होगा। ऐसा नहीं है कि आप यह कह सकते हैं, "मैं केवल बुद्धमत की पद्धतियों की ही साधना करता हूँ, और ताओवादी पद्धतियों की नहीं; जबतक वे सभी बुद्धमत हैं तबतक सब ठीक है।" यदि आप जेन बुद्धमत की साधना करते हैं, और तंत्रवाद, पवित्र भूमि, ह्वायान, और तिआनताई की भी, तो आप बिना विचारे काम कर रहे हैं और अनिष्टता पैदा कर रहे हैं, और आप कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आप वास्तव में कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएंगे, इसलिए यदि आप अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचने में सक्षम होना चाहते हैं, तो आपको एक ही पद्धति के प्रति प्रतिबद्ध होना होगा।

मैं यहां जो समझा रहा हूँ वह एक सिद्धांत है। मेरा यह कहना नहीं है कि आपको ली होंगज़ी के फालुन दाफा का ही अभ्यास करना चाहिए। प्रागैतिहासिक काल के समय, हमारे फालुन दाफा ने एक बार समाज में लोगों को व्यापक रूप से बचाया था, ठीक वैसे ही जैसे कि शाक्यमुनि के बुद्धमत ने, लेकिन मानव सभ्यता के इस काल में ऐसा कुछ नहीं हुआ है। यह पहली बार है कि इसे इस वर्तमान मानवजाति के अस्तित्व में आने के बाद सार्वजनिक किया गया है, और यह कदाचित अंतिम बार होगा कि इसे सार्वजनिक किया जाएगा, लेकिन यह सदैव के लिए रहेगा। निःसंदेह, हमारे पास फालुन दिव्य लोक है, और अध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने वाले अभ्यासी वहां जा सकते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि आपको मेरी ही शिक्षाओं की साधना करनी है। आप किसी की भी शिक्षाओं की साधना कर सकते हैं। जबतक यह एक सच्चा अभ्यास है, जबतक आप इसकी सच्ची शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम हैं, और जबतक आपको लगता है कि आप उस पद्धति में आध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंच सकते हैं, तो आप वहां साधना करने के लिए जा सकते हैं। लेकिन मैं आपसे एक ही पद्धति के प्रति प्रतिबद्ध रहने का आग्रह करता हूँ।

मैं आपको यह भी बता दूं कि आपको बचाने के लिए बुद्ध अपने वास्तविक रूप में नहीं आ सकते। यदि एक बुद्ध यहां बैठकर, अपनी दिव्य शक्तियों के भव्य रूप को प्रदर्शित करते हैं, और आपको उपदेश देते हैं, तो वह लोगों को बचाना नहीं होगा—यह *मार्ग* को क्षति पहुँचाना होगा। यहां तक कि ऐसे लोग जो अक्षम्य पाप कर चुके हैं, वे भी सीखने आ जाएंगे, और ज्ञानप्राप्ति का कोई [प्रश्न] नहीं रहेगा। जैसे ही

लोग देखेंगे कि एक वास्तविक बुद्ध यहाँ थे, तो उनसे कौन नहीं सीखेगा? सारी मानवजाति सीखने आ जाएंगी। क्या ऐसा ही नहीं होता है? इसलिए, केवल ऐसे गुरु जिन्होंने साधारण लोगों के बीच पुनर्जन्म लिया है लोगों को सिखा और बचा सकते हैं। इसमें ज्ञानप्राप्ति की बात अंतर्निहित होती है, क्योंकि यह आपके ऊपर निर्भर है कि आप विश्वास करते हैं या नहीं। लेकिन आप स्वयं उनकी शिक्षाओं पर विचार कर सकते हैं। चाहे जो भी हो, मैं आपको यह सिद्धांत इसलिए समझा रहा हूँ क्योंकि मैं आपके प्रति उत्तरदायी हूँ। मैं आपको ये बातें इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि आप साधना करना चाहते हैं। [यदि मैं आपको नहीं बताऊंगा,] मैं आपके प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं निभा रहा हूँ। क्योंकि आपके पास यहां होने का पूर्वनिर्धारित अवसर है, मैं आपको ये बातें बताऊंगा। वर्त्तमान में किसी भी साधना पद्धति में सफल होना बहुत कठिन है। कोई भी उनकी देखभाल नहीं कर रहा है, इसका प्रमुख कारण यह है कि लोग बिना सोचे-समझे साधना करने लगे हैं। लेकिन, यदि आप वस्तुओं को संभालने और स्वयं ही साधना करने में सक्षम हैं, और यदि आपको लगता है कि आप साधना के माध्यम से अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंच सकते हैं, तब यह ठीक है चाहे आप किसी भी पद्धति में साधना करें। ऐसा ही है। क्योंकि बुद्ध मनुष्य के हित के लिए ही कार्य करते हैं, मुझे आपको यह बताना होगा कि यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो आपको एक ही पद्धति के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। आप न केवल अन्य पद्धतियों की मुद्राओं का अभ्यास नहीं कर सकते हैं, बल्कि आप अन्य पद्धतियों के शास्त्रों का पाठ भी नहीं कर सकते, आप अपने मन में अन्य पद्धतियों के बारे में सोच भी नहीं सकते, और आपको इन सब बातों को छोड़ना होगा। क्योंकि अभ्यास करते समय बहुत सी बातें आपके विचारों पर निर्भर करती हैं, यदि आपकी इच्छा उभरती है, तो इसका अर्थ है कि आप उसके पीछे जा रहे हैं। यदि आप कुछ वस्तुएं चाहते हैं, तो वे वस्तुएं आ जाएंगी [और आप में प्रवेश कर जाएंगी]। तब आपके शरीर का गोंग अस्त-व्यस्त हो जाएगा, आपका फालुन विकृत हो जाएगा और अपनी प्रभावशीलता गंवा देगा, और आपकी साधना व्यर्थ जाएगी।

मैं आपको बता दूं कि यह फालुन बहुत अधिक मूल्यवान है। हालाँकि मैंने इसे आपको दिया है, लेकिन मेरे इसे प्रचारित करने से पहले, किसी को भी यह नहीं मिल सकता था चाहे उसने हजार वर्ष तक साधना की हो। जब यह किसी को मिल जाता था, तो यह कहा जाता था कि इस व्यक्ति ने अपनी आधी साधना पूरी कर ली है। आपका गोंग स्वतः फालुन द्वारा बन जाएगा। जब तक कि आप अपने मन से साधना करते रहेंगे, आप गोंग उत्पन्न करते रहेंगे और [अपना स्तर] ऊंचा उठाएँगे। [फालुन] एक उच्च स्तर का जीव है, अर्थात्, यह आपके स्वयं के जीवन से भी एक स्तर ऊँचा है। हालाँकि मैंने आपको यह दिया है, इसलिए क्योंकि आप साधना करना चाहते हैं, जो आपके बुद्ध स्वभाव को प्रदर्शित करता है। यह विचार जब आपके मन में आता है, तो [मैं] आपको बचाऊंगा और [आपको एक फालुन देने का] कार्य करूंगा, और जो आपको प्राप्त होगा वह बहुत मूल्यवान होगा। बुद्धत्व की साधना एक अत्यंत गंभीर बात है, और मैं आपको [फालुन] बिगाड़ने या नष्ट करने नहीं दूंगा। यदि आप साधना करते समय अन्य वस्तुओं को इसमें मिलाते हैं, तो हम आपसे [फालुन] वापस ले लेंगे, क्योंकि हम आपको इस जीव, इस उच्च-स्तरीय जीव को नष्ट नहीं करने देंगे। कुछ लोग सोचते हैं, "मैंने अन्य वस्तुओं का अभ्यास किया है, लेकिन यदि यह फालुन इतना शक्तिशाली है, तो इसने मेरी रक्षा क्यों नहीं की?" ऐसा इसलिए है क्योंकि इस ब्रह्मांड में एक सिद्धांत है : आपको स्वयं यह निर्णय करना होगा कि आपको क्या चाहिए। यदि आप, अपने निर्णय स्वयं लेते हुए, दुष्ट वस्तुएं चाहते हैं... दुष्ट वस्तुएं सब जगह होती हैं, आपके न चाहते हुए भी, आपके अंदर घुसने का प्रयत्न कर रही होती हैं! यदि आप उन्हें चाहते हैं, तो वे तुरंत [आप के अन्दर] आ जाएंगी, एक क्षण से भी कम समय में। तो फालुन उनसे क्यों नहीं निपटता? यह इसलिए

क्योंकि आप उन वस्तुओं को चाहते थे। इसलिए आपको इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जब कोई व्यक्ति साधना अभ्यास करता है तो यह एक अत्यंत गंभीर बात है।

जब मैं चीन में इस प्रथा को प्रचारित कर रहा था, तब ऐसे कई लोग थे जिनके दिव्य नेत्र काफी ऊंचे स्तर पर खोले गए थे—किन्तु खुले दिव्य नेत्र से साधना करनी भी कठिन है। आपको कई विशाल दिव्य प्राणी दिखाई दे सकते हैं। क्योंकि वे अन्य आयामों के प्राणी हैं, वे बहुत विशाल बन सकते हैं। वे पीले वस्त्र पहनते हैं, विशाल होते हैं, और मनुष्यों को ऐसा लगता है जैसे कि उनमें महान दिव्य शक्तियां हैं। वे आपसे कहेंगे : "मैं आपको अपना शिष्य बनाउंगा। मुझसे आकर सीखो।" उस व्यक्ति की इच्छा उभर आती है और वह तुरंत ही उस दिव्य प्राणी से सीखना शुरू कर देता है, और उसी क्षण वह बर्बाद हो जाता है। [वह दिव्य प्राणी] चाहे कितना भी विशाल दिखता हो, उसने अब तक त्रिलोक को नहीं छोड़ा है और वास्तव में उसका कोई महत्व नहीं है; केवल इतना है कि वह इस आयाम में नहीं है और इच्छानुसार अपने शरीर को परिवर्तित कर सकता है। इसलिए आपको इन मुद्दों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। ऐसे भी असुर हैं जो आपके साथ हस्तक्षेप करने के लिए आ जाते हैं, [कहते हैं] "आओ मुझसे सीखो। मैं भी आपको कुछ सिखाऊंगा।" कुछ लोगों के लिए—विशेष रूप से वे जो अन्य पद्धतियों का अभ्यास करते हैं—जैसे ही वे बैठते हैं, साधारणतः वे स्वयं ही अपने व्यायामों को बनाते हैं, ऐसी मुद्राएं बनाते हैं जो बहुत अच्छी लगती हैं—लेकिन मैं आपको बता दूं कि असुरों को पता है कि उस तरह की वस्तुएं भी कैसे करनी है। आप यह नहीं जानते हैं कि आपको किसने [वे वस्तुएं] दी हैं, इसलिए जैसे ही आप उन प्रथाओं का पालन करने लगते हैं, वे आपके शरीर में वस्तुएं डाल देंगे, और आपका शरीर अस्तव्यस्त हो जाएगा। मैंने देखा है कि कुछ लोग हैं जो सब तरह की बातें सीखते हैं, और उनके शरीर भयंकर गड़बड़ हैं, सभी तरह की वस्तुओं से भरे पड़े हैं—[ये लोग] कभी भी साधना नहीं कर सकते हैं। हम पूर्वनिर्धारित संबंध पर बल देते हैं। यदि आपकी मुझसे भेंट होती है, तो यह आपके पूर्वनिर्धारित संबंध के कारण है। यदि आप वास्तव में साधना करना चाहते हैं, तो हमें आपको पूरी तरह से शुद्ध करना होगा। हम आपकी अच्छी वस्तुओं को रखेंगे और आपकी बुरी वस्तुओं को हटा देंगे, आपके शरीर को व्यवस्थित करेंगे, इसे शुद्ध करेंगे और आपको दुग्ध-श्वेत शरीर की अवस्था तक पहुंचाएंगे। यह एकमात्र ऐसा मार्ग है जिससे आप वास्तव में गोंग उत्पन्न कर सकते हैं और अपने स्तर को ऊंचा कर सकते हैं।

शिष्य : आपके पास कई सिद्धांत शरीर हैं जो लोगों की साधना का मार्गदर्शन कर सकते हैं, लेकिन हम ऑस्ट्रेलिया में हैं। हमारा मार्गदर्शन करने के लिए कौन आ सकता है? हमें किसे अपना गुरु समझना चाहिए?

गुरु जी : इस व्यक्ति ने यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया है। आप जानते हैं कि जब कोई व्यक्ति साधना करता है तो यह एक अत्यंत गंभीर बात होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों के पास जन्मों-जन्मों के बुरे कर्म होते हैं और उन्होंने अपने पिछले जन्मों में बुरे कर्म किये होते हैं, इसलिए उनके अन्य आयामों में शत्रु और लेनदार होते हैं। यदि [उन शत्रुओं और लेनदारों] को पता चलता है कि आपने साधना शुरू कर दी है, तो वे आपसे बदला लेने आ जाएंगे, इसलिए जो लोग साधना शुरू करते हैं वे जानलेवा विपत्ति का सामना करेंगे। इसलिए, मैंने उल्लेख किया है कि गुरु के बिना आपके लिए साधना में सफल होना पूरी तरह असंभव होगा। आप साधना में तभी सफल हो सकते हैं जब कोई गुरु आपकी देखरेख कर रहे होते हैं और आपकी रक्षा करते हैं। आप साधना में तभी सफल हो सकते हैं जब वे किसी भी बड़ी विपत्ति को सामने आने से रोकते हैं। विश्वभर में साधक होते थे और चीन में अपेक्षाकृत अधिक होते थे। कई ताओवादी साधक शिष्यों को अपनाते हैं। यद्यपि ताओवाद बड़ी संख्या में शिष्यों के

साथ उभरा है, [जिस तरह से अधिकांश ताओवादी साधक] काम करते हैं वह यह है कि वे केवल किसी एक ही व्यक्ति को वास्तविक शिक्षाएं प्रदान कर सकते हैं, क्योंकि यही एकमात्र मार्ग है जिससे वे निश्चित कर सकते हैं कि उनके शिष्यों के मार्ग में समस्याएँ नहीं आएंगी। [एक ताओवादी साधक] केवल एक ही व्यक्ति पर ध्यान देने में सक्षम होता है, क्योंकि ताओवाद की पद्धतियों में सभी प्राणियों को बचाने की मंशा नहीं होती है।

मैं [अभ्यास] को क्यों प्रदान कर सकता हूँ और इतने सारे लोगों को बचा सकता हूँ? चीन में अभी एक करोड़ लोग इसे सीख रहे हैं और इसमें विदेशों में सीखने वाले लोग सम्मिलित नहीं हैं। क्यों किसी को भी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा? आज हमारे साथ एक व्यक्ति है जो एक कार से टकरा गए थे। कार नष्ट हो गई थी, लेकिन यह व्यक्ति वास्तव में ठीक थे। उन्हें कोई दर्द या डर नहीं लगा था, और उन्हें कहीं भी चोट नहीं लगी थी। ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके लेनदार ऋण लेने आए थे, लेकिन हम आपको वास्तव में संकट में नहीं डाल सकते। फिर भी, इस ऋण का भुगतान तो किया जाना चाहिए। आपकी गुरु की रक्षा बिना, आप तुरंत मारे जा सकते हैं। यदि आप मर चुके होते तो आप साधना कैसे करते? मेरे पास अनगिनत सिद्धांत शरीर हैं जो मेरे जैसे ही दिखते हैं। वे अन्य आयामों में होते हैं और, निःसंदेह, बड़े या छोटे हो सकते हैं। वे बहुत बड़े और बहुत छोटे हो सकते हैं। उनका विवेक पूरी तरह से असीमित है, और उनकी दिव्य शक्तियां बुद्ध के समान ही हैं। मेरा मुख्य शरीर यहां मेरे साथ है, लेकिन [मेरे सिद्धांत शरीरों] में स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता है, और वे आपका ध्यान रखेंगे, आपकी रक्षा करेंगे, गोंग विकसित करने में आपकी सहायता करेंगे और कुछ कार्य करेंगे। वास्तव में, वे मेरे ही विवेक के प्रतिरूप हैं, और इस प्रकार मैं आपकी रक्षा करने में सक्षम हूँ। मैं ऑस्ट्रेलिया में नहीं रहता, लेकिन अभ्यास आपको सिखाया गया है, और आप इस *मार्ग* को अपना गुरु मान सकते हैं।

शिष्य : क्या सिद्धांत शरीर हमारी साधना का मार्गदर्शन और हमारी रक्षा कर सकते हैं?

गुरु जी : जब एक साधक का समस्याओं से सामना होने वाला होता है, तो मेरे सिद्धांत शरीर इन वस्तुओं को हटा देंगे और उन्हें होने से रोकेंगे, और वे आपको संकेत भी देंगे। जब आप वास्तव में किसी बात को समझ नहीं पाते हैं, लेकिन आप बहुत अच्छी तरह से साधना कर रहे हैं, तो [मेरे सिद्धांत शरीर] आपको कुछ बताने के लिए आपकी आंखों के सामने प्रकट होंगे या शायद आपको अपनी उपस्थिति का आभास करवायेंगे। हो सकता है आपकी साधना का स्तर पर्याप्त ऊँचा न हो, तो वे आपको उन्हें देखने नहीं देंगे, लेकिन वे आपको अपनी उपस्थिति का आभास करने देंगे। अधिकतर [मेरे सिद्धांत शरीर] आपको उन्हें तब देखने देंगे जब आप सो रहे होते हैं। यह ऐसा होगा जैसे कि आप कोई सपना देख रहे हैं, और आपको इस बात को समझना होगा कि क्या [जो आप देख रहे हैं] वह सच है या झूठ, इसलिए अधिकतर जब आप उन्हें देख पाएंगे, ऐसा आपके सपनों में ही होगा। यदि आपकी एकाग्रता की क्षमता बहुत प्रबल है, तो ध्यान करते समय संभवतः आप उन्हें देख सकते हैं। लेकिन यदि आप हमेशा मुझे देखना चाहते हैं, तो यह भी एक प्रकार से पीछे पड़ना है और एक मोहभाव है, तब आप [मेरे सिद्धांत शरीर] को नहीं देख पाएंगे। जब आप इसके बारे में सोचना बंद कर देंगे, तो आप निश्चित रूप से उन्हें भविष्य में देख पाएंगे, यदि आप साधना करते रहेंगे।

शिष्य : गुरुजी, आप मेरी रक्षा करते हैं, लेकिन मेरे साथ बुरे कर्मों की बहुत बड़ी बाधाएँ हैं, तो आप मेरी रक्षा कैसे करेंगे?

गुरु जी : यह भी एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है। क्योंकि आज के समाज के लोगों के बुरे कर्मों के ऊपर बुरे कर्म चढ़ते गये हैं, उनके बुरे कर्म अब बहुत अधिक हो चुके हैं। केवल मनुष्य ही नहीं है जिनके पास बुरे कर्मों की इतनी बड़ी मात्रा है; क्योंकि मनुष्य पुनर्जन्म ले सकते हैं, वे जानवरों, पदार्थों, पौधों और जीवों में उच्च-स्तरीय और निम्न-स्तरीय आयामों में पुनर्जन्म ले सकते हैं। क्योंकि पुनर्जन्म के छः मार्ग हैं, व्यक्ति उनमें से किसी में भी पुनर्जन्म ले सकता है। और लोग अपने सद्गुण और बुरे कर्मों को अपने साथ ले आते हैं। आज लोगों के पास कम मात्रा में सद्गुण और बड़ी मात्रा में बुरे कर्म हैं। ऐसा नहीं है कि केवल मनुष्यों के पास ही बुरे कर्म है; कंक्रीट और मिट्टी के भी बुरे कर्म होते हैं। आप जानते हैं, अतीत में, यदि चीन में किसी किसान का अपने खेत में काम करते समय हाथ काट जाता था, तो वह थोड़ी मिट्टी उठा लेता और उसे घाव पर छिड़क देता, और घाव ठीक हो जाता था। उस पर बस थोड़ी सी मिट्टी छिड़कने से ही घाव ठीक हो जाता था। आजकल, क्या आप मिट्टी छूने का साहस करेंगे? यदि आप इसे छूते भी नहीं हैं तब भी आपको टिटनस हो सकता है! बुरे कर्म सभी ओर हैं। पदार्थों और पौधों पर बुरे कर्म हैं, और जानवर और मनुष्य सभी बुरे कर्मों से घिरे हैं, इसलिए उच्च-स्तरीय आयामों से देखने पर, मानव संसार कलुषित लहरों में बह रहा है। महामारी क्यों होती हैं? गंभीर महामारी यही कलुषित लहरें हैं, जो विभिन्न स्थानों तक फैलते हुए उच्च घन्नत्व वाले बुरे कर्मों के समूह हैं। जहाँ भी वे बह कर जाते हैं वहां महामारी होती है। क्या किया जा सकता है, जब आज की मानवजाति के बुरे कर्म इतने विशाल हो चुके हैं? मैं आपको बताना चाहता हूँ यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो यह ऐसा है जैसा मैंने अभी-अभी उल्लेख किया है : यदि आप कुछ जीवों के ऋणि हैं और यदि आपको साधना शुरू करने से पहले उनके भुगतान की प्रतीक्षा करनी पड़ती है, [तब तक] संभवतः यह अवसर चला जाएगा, और आप मुझसे मिलने में सक्षम नहीं हो पाएंगे।

तब क्या किया जा सकता है? इस ब्रह्मांड में मनुष्य के अस्तित्व का उद्देश्य केवल मानव बनकर रहना नहीं है; साधना के माध्यम से वापस लौटना है, उस स्थान पर लौटना जहां आपका वास्तव में सृजन हुआ था। कुछ लोग कहते हैं, "मैं साधारण समाज में हूँ और मैं अपनी साधारण भावनाओं को नहीं छोड़ सकता। यदि मैं साधना करता हूँ, तो मेरी पत्नी, बच्चों, माता-पिता और भाई-बहनों का क्या होगा? [भावनाओं के बिना] मेरा जीवन व्यर्थ होगा।" यह आपके मानवीय दृष्टिकोण से आपकी समझ है; आप अपने वर्तमान स्तर के दृष्टिकोण से वस्तुओं के विषय में सोच रहे हैं। अपने स्तर को ऊंचा करेंगे के बाद, जब आप नये स्तर के दृष्टिकोण पर पहुंचेंगे, तब आप एक अलग आयाम में होंगे और आप इस तरह से नहीं सोचेंगे। लेकिन मैं आपको एक सिद्धांत बताना चाहता हूँ : आपके सच्चे संबंधी कौन हैं? मैं यहां आपके पारिवारिक संबंधों में हस्तक्षेप करने का प्रयत्न नहीं कर रहा हूँ; यह ऐसा है कि जब कोई व्यक्ति पुनर्जन्म के छः मार्गों से गुजरता है, तो आप इस जन्म में एक मनुष्य हो सकते हैं, और अगले जन्म में आप एक जानवर या पौधे हो सकते हैं, और एक जन्म से दूसरे जन्म से जाते हुए, आपके कितने माता-पिता, पत्नियां, बच्चे और भाई-बहन हुए होंगे? आपके अस्तित्व के इस लंबे प्रवाह की अवधि में उनकी अनगिनत संख्याएँ रही होंगी। कुछ मनुष्य रहे होंगे और कुछ नहीं। उनमें से कौन वास्तव में आपके परिवार के सदस्य हैं? वास्तव में मनुष्य भ्रम की बहुत गहराई में डूबे हुए हैं! आपके वास्तविक माता-पिता उस स्थान पर हैं जहाँ आपका सृजन ब्रह्मांड में हुआ था; आप उन्हें केवल वहीं पा सकते हैं। इसका कारण यह है कि प्राणियों की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है : एक का सृजन विशाल पदार्थों की

गति से होता है; और दूसरा जब ब्रह्मांड में पदार्थों की गति से बनने वाला एक मूर्त जीव प्रवेश करता है, स्वयं ही, ऐसी स्थिति जैसे मनुष्यों में गर्भधारण के समान होती है, जीवन की उत्पति करता है। इस [दूसरे] तरह के जीवन में माता-पिता होते हैं। इसलिए आपके वास्तविक माता-पिता अभी भी आपको देख रहे हैं और आपके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन आप वापस नहीं लौट रहे हैं और यहां भ्रम में रह रहे हैं, अभी भी ऐसा सोचते हैं कि यहां के लोग आपके परिवार के सदस्य हैं।

मनुष्य के अस्तित्व का उद्देश्य केवल मानव होना नहीं है; अपने वास्तविक रूप में वापस लौटना है। यदि किसी व्यक्ति को बुद्धत्व की साधना करने का विचार आता है, हालांकि उसके पास साधना करने का कोई पूर्वनिर्धारित अवसर नहीं है, वह बुद्धत्व की साधना की आधारशिला रख रहा है। मैं इस तरह से बातें क्यों समझा रहा हूँ? ऐसा इसलिए है क्योंकि यह विचार जो उसे आया है वह बहुत ही मूल्यावान है! इस प्रकार के दुःखदायक और भ्रम-भरे वातावरण में, वह अभी भी लौटने की इच्छा रखता है, बुद्धत्व की साधना करना, और करुणामयी होना चाहता है। इसलिए यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सब कोई आपको आगे बढ़ने का संकेत देने का प्रयत्न करेगा। जब किसी व्यक्ति को यह विचार आता है, तो यह दसों दिशाओं में कंपन पैदा कर देता है; यह सोने की तरह चमकदार होता है, और सब कोई इसे देख सकता है। यदि कोई व्यक्ति साधना करना चाहता है, तो यह ऐसा ही होता है, लेकिन इतनी बड़ी मात्रा में बुरे कर्मों के साथ, क्या किया जा सकता है? हमें आपके बुरे कर्मों को हटाने के लिए किसी विधि का उपयोग करना होगा। हम आपके बुरे कर्मों को ऐसे ही नहीं हटा सकते या पूर्णतः समाप्त नहीं कर सकते हैं। किस स्तर तक [आपके] बुरे कर्मों को दूसरे द्वारा हटाया जा सकता है? मैं इन बातों पर ध्यान नहीं देता हूँ, लेकिन बुद्धमत में वे कहते हैं कि आप एक जीवनकाल में अपनी साधना पूरी नहीं कर सकते हैं; सफल होने के लिए कई पुनर्जन्म लगते हैं। इसका अर्थ है, आप एक ही बार में इतने बुरे कर्मों को नहीं हटा सकते हैं। लेकिन यदि आप वास्तव में साधना करना चाहते हैं, तो हम इस जीवन में आपके साधना में सफल होने और अध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का कोई मार्ग निकाल सकते हैं। यदि आप वास्तव में वृद्ध हैं, या इस जीवन में आपका शेष समय बहुत कम रह गया है और आपके पास पर्याप्त समय नहीं है, तो आप मृत्यु के साथ और पुनर्जन्म में फालुन ले जा सकते हैं। जब आपका पुनर्जन्म होगा तो यह आपके साथ रहेगा और आप पूर्वनिर्धारित संबंध के अगले चरण पर आगे बढ़ पाएंगे।

जब कोई व्यक्ति सच्चे *मार्ग* की साधना करता है, तो मैं आपके लिए पर्याप्त मात्र में बुरे कर्मों को हटा दूंगा जिससे आप साधना कर पाएं और इसे सहन कर पाएं—मैं आपके बुरे कर्मों को इस स्तर तक हटाऊंगा। यह स्वीकार्य नहीं है कि आपके लिए इसे पूरी तरह से हटा दिया जाए और आपको इसका कुछ भी भुगतान न करना पड़े। तब आप बचे हुए भाग का भुगतान कैसे करेंगे? हम इसे आपके साधना मार्ग में रखेंगे, क्योंकि ये सब आपके ही बुरे कर्म हैं। हम इन्हें विभिन्न स्तरों पर रखेंगे जिनमें आपको साधना में ऊंचा उठने की आवश्यकता होगी, और ये आपके नैतिकगुण को ऊंचा उठाने में आपकी सहायता करने के लिए परीक्षाओं और कठिनाइयों के रूप में कार्य करेंगे। जब आपको अपने स्तर को ऊंचा उठाने की आवश्यकता होगी, आपके सामने कुछ समस्याएँ आएंगी, या आप अपने शरीर में कहीं कष्ट अनुभव करेंगे, और तब आपको इन वस्तुओं से ज्ञानप्राप्त करने की आवश्यकता होगी, यह देखने के लिए कि क्या आप स्वयं को एक साधक के रूप में मान सकते हैं या नहीं। यह देखने के लिए कि आप एक साधारण व्यक्ति की तरह इन विषयों को देखेंगे या नहीं, या फिर आप उन्हें छोड़ देंगे या उनकी तरफ ध्यान नहीं देंगे। जब आप प्रत्येक परीक्षा और कठिनाई को अपने स्तर को ऊपर उठाने और वस्तुओं को छोड़ने के अवसर के रूप में लेते हैं, तो आप परीक्षा में सफलता पाने में सक्षम होंगे। कुछ

लोग सोचते हैं कि जब वे साधना करते हैं, तो वे कड़ी कठिनाइयों का सामना करते हैं, लेकिन वास्तव में, ये कठिनाइयां इतनी कड़ी नहीं होती हैं। जितना अधिक आप सोचेंगे कि ये कड़ी है, वास्तव में ये उतनी ही बड़ी बन जाएंगी, और उतने ही आप छोटे बन जाएंगे। यदि आप इस पर कोई ध्यान नहीं देते हैं और मन पर नहीं लेते हैं, यह सोचते हुए कि "जब तक हरे पेड़ रहेंगे, मेरे पास छाया की कमी नहीं रहेगी। गुरु जी और *मार्ग* के मेरे साथ होते हुए, मुझे किस बात का डर है? मैं इसे भूल जाऊंगा!" जैसे ही आप वस्तुओं को छोड़ देते हैं तो आप पाएंगे कि कठिनाई छोटी हो जाएगी और आप बड़े बन जाएंगे, और आप इसे एक ही बार में पार कर पाएंगे। कठिनाई नहीं के बराबर बन जाएगी, और यह निश्चित है कि यह ऐसे ही होगा। जब कोई व्यक्ति किसी कठिनाई को पार नहीं कर पाता, इसका कारण यह है कि वह अपने मोहभाव को छोड़ने में असमर्थ है या उसे इस *मार्ग* पर विश्वास नहीं है। अधिकांश लोगों की कोई न कोई इच्छा होती है जिसे वे छोड़ नहीं पाते हैं, और इसी कारण वे इसे पार नहीं कर पाते हैं। कोई व्यक्ति इसे पार नहीं कर पाता क्योंकि वह मानवीयता नहीं छोड़ पाता है।

शिष्य : मेरा एक प्रश्न है। मैं लंबे समय से फालुन दाफा का अभ्यास कर रहा हूँ और उत्साहपूर्वक गुरु जी की पुस्तकें पढ़ता हूँ और गुरु जी की वीडियोटेप देखता हूँ। लेकिन एक ऐसा वाक्यांश है जो मुझे समझ में नहीं आ रहा है : गुरु जी ने कहा है, "आप स्वयं के अभ्यास से फालुन का सृजन करने में सक्षम नहीं हैं, और गुरु जी को व्यक्तिगत रूप से आप में फालुन स्थापित करना होगा।" इसलिए, मैं चीन जाकर गुरु जी को मेरे लिए फालुन स्थापित करने के लिए कहने के बारे में सोच रहा था। यह एक प्रश्न है। दूसरा यह है कि, हम कैसे सत्यापित कर सकते हैं कि हमारे पास वास्तव में फालुन है? ये मेरे दो प्रश्न हैं।

गुरु जी : बहुत से लोग इस बारे में चिंता करते हैं : "हम इस अभ्यास को सीखना चाहते हैं, लेकिन हम आपकी कक्षा में नहीं आए हैं, ना ही हमने आपको व्यक्तिगत रूप से देखा है। क्या हम फालुन प्राप्त कर सकते हैं?" कुछ लोग कुछ भी अनुभव नहीं कर पाते हैं [और सोचते हैं], "क्या गुरु जी मेरी देखभाल नहीं कर रहे हैं?" बहुत से लोगों का यह प्रश्न होगा। वास्तव में, मैंने पुस्तक में लिखा है कि आपके पास फालुन होगा। क्योंकि मैं यहां सभी प्राणियों को बचाने के लिए आया हूँ, यदि मैं आपके प्रति उत्तरदायी नहीं होता हूँ, तो इन [उच्च स्तरीय] बातों को पढ़ने से आप पर संकट आ सकता है—इसलिए मुझे आपकी देखभाल करनी होगी। यदि आप वास्तव में साधना करते हैं और मैंने आपका ध्यान नहीं रखा, तो वास्तव में मैं लोगों को क्षति पहुँचाऊंगा और उन्हें उनकी मृत्यु की ओर भेजूंगा, और फिर मुझे उसके प्रतिदण्ड का सामना करना पड़ेगा, इसलिए मैं इस तरह की बातें नहीं कर सकता। क्योंकि मैं ऐसा कर रहा हूँ [जैसा मैं हूँ], मुझे आपके लिए उत्तरदायी होना होगा। अच्छे जन्मजात गुणों वाले कई लोगों ने देखा है कि इस पुस्तक का प्रत्येक शब्द एक फालुन है। क्योंकि प्रत्येक आयाम भिन्न है, जब आप इसे और भी उच्च आयाम से देखते हैं, तो प्रत्येक शब्द मेरा सिद्धांत शरीर हैं और बुद्ध की छवि है, और यहां तक कि प्रत्येक अक्षर का प्रत्येक घटक और मूल एक अलग बुद्ध है। इसके बारे में सोचें : यहां तक कि एक बुद्ध के पास भी महान शक्ति होती है। जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं तो आपके रोग का उपचार क्यों हो सकता है? यदि आपकी आँखें खराब हैं, तो ऐसा क्यों है कि जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं, तो शब्द बड़े और भी बड़े हो जाते हैं जितना अधिक आप पढ़ते हैं और आपकी आंखें थकती नहीं हैं? जब आप इस पुस्तक को पढ़ते हैं तो दिव्य परिवर्तन क्यों होते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे शब्द *मार्ग* में से बने हैं, और वे आपके लिए कुछ भी कर सकते हैं और आपके लिए फालुन स्थापित कर सकते हैं। मेरे पास सिद्धांत शरीर भी है जो आपकी देखरेख करते हैं, और वे इनमें से कोई भी काम कर सकते हैं, इसलिए आप इन वस्तुओं को पा सकते हैं भले ही आप मुझे व्यक्तिगत रूप से न देखें।

आपकी संवेदनाओं के अनुसार, कुछ लोग संवेदनशील हो सकते हैं और उन्हें अनुभव होता हैं [कि कुछ] उनके पेट के निचले भाग में घूम रहा है। केवल यही एक स्थान नहीं है जहां वस्तुएं घूम रही होंगी, क्योंकि पूरे शरीर में वस्तुएं होंगी जो घूम रही होंगी। आज यहाँ बैठे कुछ लोगों ने त्रुटिपूर्ण बातें कही हैं; कृपया भविष्य में इस पर ध्यान दें। वे कहते हैं कि हमारे फालुन दाफा में नौ फालुन की साधना होती है। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैं वास्तव में आपके लिए केवल एक फालुन स्थापित करता हूँ, और यह फालुन अतुलनीय रूप से शक्तिशाली है और स्वयं को अंतहीन रूप से विभाजित कर सकता है। आपकी साधना के प्रारंभिक चरणों में, मैं कई सौ फालुन स्थापित करता हूँ जो आपके शरीर को व्यवस्थित करने के लिए उसके बाहर के सभी अलग-अलग भागों पर घूमते हैं। कुछ लोग कहते हैं, "वस्तुएं यहाँ, वहाँ घूम रही हैं—वाह—वे मेरे पूरे शरीर पर फैली हुई हैं [और सभी स्थानों पर घूम रही हैं]।" ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें आपके शरीर को शुद्ध और आत्मसात करने की आवश्यकता है। मैं आपको व्यवस्थित करने के लिए हमारे अभ्यास के गोंग की विशेषता का उपयोग करता हूँ, इसलिए आपको आभास होगा कि सभी स्थानों पर अनगिनत फालुन घूम रहे हैं। कदाचित आपको ऐसा अनुभव हो सकता है कि ऐसे नौ हैं, इसलिए आप जाकर कहते हैं कि ऐसे नौ हैं। तो मैं आपके शरीर को व्यवस्थित करने के लिए कई बाहरी फालुन का उपयोग करुंगा। कुछ लोग संवेदनशील होते हैं और कुछ नहीं। जो लोग संवेदनशील नहीं हैं वे कुछ भी अनुभव नहीं कर पाएंगे और जो संवेदनशील हैं वे [फालुन] अनुभव कर पाएंगे। चाहे आप उन्हें अनुभव करें या नहीं, शुरुआती चरणों में ऐसा होता है। संवेदनशील लोगों के लिए, एक बार जब आपका शरीर पूरी तरह से व्यवस्थित हो जाता है और एक बार [फालुन] आपके शरीर का भाग बन जाता है, तो आप इसे अनुभव नहीं कर पाएंगे। आपका हृदय धड़क रहा है; क्या आप हमेशा यह अनुभव करते हैं कि यह धड़क रहा है? जब आप उस पर अपना हाथ रखेंगे तो आप इसे अनुभव कर पाएंगे। आपका पेट चल रहा है; क्या आप इसे अनुभव कर सकते हैं? आपका रक्त संचारित हो रहा है; क्या आप इसे अनुभव कर सकते हैं? जब यह आपके शरीर का एक भाग बन जाता है, तो आप कुछ भी अनुभव नहीं कर पाएंगे और इसका आभास नहीं कर पाएंगे। प्रारंभिक अवस्था में असंवेदनशील लोगों के पास भी एक होगा। प्रारंभिक चरणों में बड़ी संख्या में लोग इसे अनुभव नहीं कर सकते हैं, लेकिन भविष्य में जैसे-जैसे आप साधना करते जाएंगे आपको कई विभिन्न संवेदनाएँ होंगी। जब तक आप साधना करते रहेंगे, मैं निश्चित ही आपका ध्यान रखूंगा।

सबसे स्पष्ट परिवर्तन यह होगा कि आपका शरीर शीघ्र ही शुद्ध हो जाएगा। मुख्यभूमि चीन में बहुत से लोग जानते हैं कि फालुन दाफा की साधना बहुत ही चमत्कारी होती है! जैसे ही लोग अभ्यास करते हैं, उनके रोग दूर हो जाते हैं। क्यों? बहुत से लोग अपने रोगों को ठीक करने के मोहभाव के बिना आए। उन्होंने अभ्यास किया क्योंकि उन्हें लगा कि यह *मार्ग* अच्छा है! परिणामस्वरूप, उनके रोग ठीक हो गए। लेकिन ऐसे कई लोग भी हैं जिन्हें अपने अभ्यास से अच्छे परिणाम नहीं मिलते हैं। परिणाम अच्छे क्यों नहीं होते हैं? उन्होंने सुना होता है कि फालुन दाफा रोग को ठीक कर सकता है और वे अपने रोग ठीक करने के लक्ष्य के साथ अभ्यास करने के लिए आते हैं, इसलिए उनके रोग हटाये नहीं जा सकते हैं, क्योंकि "बिना मोहभाव के स्वाभाविक रूप से ही लाभ हो सकता है।" आपके रोग ठीक करने की आपकी इच्छा वस्तुओं की चाह होती है। मानव शरीर को अपने बुरे कर्मों का भुगतान करना ही होता है और उन्हें रोग होने चाहिए। आपको साधना करने की इच्छा होनी चाहिए और अपने रोग ठीक करने की इच्छा को हटा देना चाहिए। आप सब कुछ पा सकेंगे जब तक आप अपने रोगों को दूर करने के बारे में नहीं सोचते, इन [रोग-संबंधी] विषयों पर ध्यान न दें, और केवल अभ्यास करने पर ध्यान केंद्रित करें। लेकिन यदि आप अपने रोग को ठीक करने की इच्छा को पकड़ कर रखते हैं, तो आपको कुछ भी प्राप्त

नहीं होगा। अतीत में, हम हमेशा मानसिक रूप से रोगी लोगों और गंभीर रोग वाले लोगों को कक्षाओं में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते थे; एक गंभीर रूप से रोगी व्यक्ति को [उनके रोग] के प्रति चाहे आप कितना भी ध्यान न देने को कहें, वह ऐसा नहीं कर सकता है। उसका जीवन लगभग समाप्त हो चुका होता है; तो क्या वह अपने रोग के विषय में सोचना बंद कर सकता है? वह अपने रोग के कारण रात को सो नहीं पाता है, इसलिए आप चाहे कितना भी उसे ध्यान न देने के लिए कहें, वह ऐसा नहीं कर पाएगा। कभी-कभी वह कहेगा कि उसने इसके विषय में सोचना छोड़ दिया है लेकिन उसका मन अभी भी उसके बारे में निरंतर सोचता रहता है, इसलिए ऐसी परिस्थितियों में हम कुछ नहीं कर सकते हैं। हम कुछ भी क्यों नहीं कर सकते हैं? इसका कारण यह है कि जब लोगों को बचाने के लिए एक सच्चा अभ्यास फैलाया जाता है तो कुछ आवश्यकताएं होती हैं [जो पूरी करनी होती हैं], बहुत ही कड़ी आवश्यकताएं; अन्यथा, हम एक दुष्ट अभ्यास फैला रहे होंगे। आपको उस विचार को बदलना होगा और तभी हम आपके लिए कुछ कर सकते हैं। यदि आप इसे नहीं बदलते हैं, तो हम आपके लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं। यदि आप उस विचार को बदल देते हैं, तो आप एक साधारण व्यक्ति नहीं रह जाएंगे, लेकिन यदि आप इसे नहीं बदल सकते हैं, तो आप एक साधारण व्यक्ति ही बने रहेंगे—यही सीमा रेखा है। इसलिये, आप बिना इच्छाभाव के केवल स्वाभाविक रूप से ही कुछ प्राप्त कर सकते हैं। कुछ लोग बिना किसी विशेष उद्देश्य के आते हैं; उन्हें लगता है कि यह अभ्यास बहुत अच्छा है और इसका अभ्यास करने का प्रयत्न करना चाहते हैं। वे अन्य लोगों को अभ्यास करते हुए देखते हैं और बिना किसी विशेष कारण के अभ्यास करने का प्रयत्न करते हैं, और अंत में उनके सभी रोग ठीक हो जाते हैं। हालांकि, हम यह नहीं चाहते कि सभी एक साथ एक उच्च आदर्श तक पहुँच जाएं, क्योंकि समझने की भी एक प्रक्रिया होती है, जो ठीक है। लेकिन वस्तुओं की चाह की इच्छा के साथ साधना करने के लिए न आएं।

शिष्य : मैं क्षमा चाहता हूँ, गुरु जी, लेकिन मैं तीन प्रश्न पूछना चाहता हूँ। पहला प्रश्न यह है कि मैंने जुआन फालुन में पढ़ा कि चीमन पद्धति में, आपके द्वारा विकसित किया गया गोंग आपसे अलग नहीं किया जाएगा, और कुछ पद्धतियों में, आपके दिव्य लोक को सुदृढ़ करने के लिए आपके गोंग के दस में से आठवें भाग का उपयोग किया जाएगा। हमारे दाफा में भी, क्या गोंग को अलग किया जाता है?

गुरु जी : क्योंकि व्यक्ति की साधना साधारण लोगों के बीच की जाती है, इसलिए उन्हें अपने अभ्यास के माध्यम से उन सभी वस्तुओं को उत्पन्न करना होगा, जो उन्हें भविष्य में बुद्ध के रूप में धारण करने की आवश्यकता होगी। आप जानते हैं कि बुद्ध जो चाहते हैं वह पा सकते हैं, उनके पास अथाह दिव्य शक्तियां होती हैं, और वे अतुलनीय रुप से धन्य होते हैं। ये वस्तुएं कहां से आती हैं? वे जितनी मात्रा में कष्ट भोगते हैं उतनी ही मात्रा में उन्हें सौभाग्य प्राप्त होता है। इसलिए, उन्हें बुद्धत्व की साधना में सफल होने के लिए अपने गोंग को बहुत उच्च स्तर तक बढ़ाने की आवश्यकता होती है। अतीत में, ये बातें केवल हमारे साधना समुदाय में उन लोगों के बीच चर्चा की जाती थीं जिन्होंने बहुत उच्च स्तर पर साधना की थी और साधारण लोगों को नहीं बताया जाता था। एक साधक को वास्तव में अध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम होने के लिए उच्च स्तर पर साधना करने की आवश्यकता होती है। क्यों? यदि आपके पास केवल गोंग ही है, जब आप वहां ऊपर जाएंगे आपके पास कुछ भी नहीं होगा जो आप चाहते हैं और आपके पास कोई सौभाग्य भी नहीं होंगे। ऐसा नहीं चलेगा। आपको साधना प्रक्रिया में इन वस्तुओं को उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है। साधना की पूरी प्रक्रिया के दौरान आप जो कष्ट सहते हैं वह आपकी परोपकारी शक्ति है। जब आप कष्ट सहते हैं या जब आपके चरित्र में सुधार होता है, आपका गोंग बढ़ता है। इसलिए जब आप भविष्य में उच्च स्तर तक साधना करते हैं, तो आपके गोंग के दस में से

आठवें भाग को कम कर दिया जाएगा और इसका उपयोग आपके फलपदवी के असीम सौभाग्य को पूरा करने के लिए किया जाएगा। जब आप अपने स्वयं के छोटे से दिव्य लोक को पूरा भर लेते हैं, यह सब वस्तुएं उसमें से आती हैं जो आपने उत्पन्न किया है जब आप साधना में कष्ट सहते हैं। यहां तक कि साधना के माध्यम से जो नैतिक आदर्श आपने बनाया है वह भी कम कर दिया जाता है और दिव्य लोक को भरने के लिए उपयोग किया जाता है; ये वस्तुएं वास्तव में आपके सौभाग्य हैं और आपके कष्ट सहने से आती हैं। दस में से बचे हुए दो भाग आपकी फलपदवी होगी। यदि आप बोधिसत्व के आदर्श तक पहुँचते हैं, तो आप बोधिसत्व होंगे; यदि आप बुद्ध के आदर्श तक पहुँचते हैं, तो आप बुद्ध होंगे; यदि आप अर्हत के आदर्श तक पहुँचते हैं, तो आप एक अर्हत होंगे; यदि आप और भी ऊंचे स्तर पर पहुंच जाते हैं, तो आप और भी ऊंचे बुद्ध बन जाएंगे। दूसरी ओर, चीमन पद्धति अधिक जटिल है, लेकिन वे जो इसका अभ्यास करते हैं, उन्हें भी अपने सौभाग्य और सद्गुण को पूरा करने के लिए अपने गोंग का उपयोग करना होता है।

शिष्य : मैं अपना दूसरा प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मेरा नैतिक गुण इतना अच्छा नहीं है, तो वास्तव में मैं मन ही मन क्रोधित हो जाता हूँ जब अन्य लोग मुझे कोसते हैं या मेरा लाभ उठाते हैं। गुरु जी के कहने के अनुसार, जब अन्य लोग आपको मारते हैं, आपको कोसते हैं, या आपका लाभ उठाते हैं, तो वे आपको सद्गुण देते हैं, इसलिए आप मन ही मन परेशान नहीं हो सकते। यदि मैं क्रोधित होता हूँ तो क्या मेरा गोंग नहीं बढ़ेगा?

गुरु जी : एक साधक होते हुए, जब आप साधारण लोगों से क्रोधित हो जाते हैं तो आप उनके जैसे ही बन जाते हैं। जब आप क्रोधित होते हैं तब आप सद्गुण को परे कर देते हैं; बस केवल इतना है कि आपने इसे उस दूसरे पक्ष को वापस नहीं किया है। यह दूसरे पक्ष को वापस नहीं मिला क्योंकि वास्तव में आपने कुछ गंवाया था, यदि आप भी वैसा ही करते हैं जैसा उसने किया था, आप उसकी ओर वापस धकेल देंगे। कुछ लोग सोचते हैं, "इस धूर्त व्यक्ति ने सचमुच मेरा लाभ उठाया है और मेरे बहुत सारे पैसे ठग लिये हैं, और मुझे उसे खुशी से धन्यवाद कहना पड़ेगा। आपने मुझे मारा और तब भी मुझे आपको कोसने देना पड़ेगा। न केवल मैं बदले में कोस नहीं सकता, मुझे उसे धन्यवाद भी देना होगा।" लोग कहेंगे, "क्या यह *आह क्यू* की तरह बनना नहीं है? क्या यह बहुत ही निर्बल और कायर बनना नहीं है?" नहीं, ऐसा नहीं है। इसके बारे में सोचें : आप बहुत ही अच्छे नैतिक गुण के बिना ऐसा नहीं कर पाएंगे। यह एक साधक की दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन है; क्या एक साधारण व्यक्ति ऐसा कर पाएगा? वह व्यक्ति दृढ़ इच्छाशक्ति के बिना ऐसा नहीं कर पाएगा, और यह निर्बल और कायर बनना नहीं है। वास्तव में, आपको प्रसन्न होना चाहिए। इसके बारे में सोचें : यदि उसने आपका लाभ नहीं उठाया होता, तो आपको सद्गुण का एक अतिरिक्त भाग नहीं मिलता, और जब आपको सद्गुण का एक अतिरिक्त भाग मिल जाएगा, साधना के माध्यम से आप इसे गोंग के भाग में परिवर्तित कर सकते हैं। जब वह आपका लाभ उठाता है, आपके बुरे कर्म भी दूर हो रहे हैं! क्या आप बुरे कर्मों के साथ बुद्ध बन सकते हैं? आपको इन्हें पूरी तरह समाप्त करना होगा। जब वह आपका लाभ उठाता है, तो वह आपको सद्गुण देता है, और आपके बुरे कर्म भी दूर होते हैं। आप इसके साथ ऐसा नहीं करते हैं जैसे वह करता है और आप अंदर से बहुत शांत रहते हैं, और आपके नैतिक आदर्श में सुधार होता है। आपके सिर के ऊपर एक नापने वाली छड़ी होती है जो नैतिक गुण को नापती है, और नापने वाली छड़ी जितनी अधिक ऊँची होती है, उतना ही ऊंचा आपका गोंग होता है। आपके नैतिक गुण में सुधार हुआ, आपका गोंग बढ़ा, आपके बुरे कर्म सद्गुण में बदल गए, और उसे आपको सद्गुण भी देना होगा, इस प्रकार आपने एक ही

बार में चार वस्तुएं प्राप्त कर ली। क्या आपको उसका धन्यवाद नहीं करना चाहिए? आपको वास्तव में उसे अपने सच्चे मन से धन्यवाद देना चाहिए। मैंने अभी उल्लेख किया है कि समाज के अच्छे और बुरे सिद्धांत उलट जाते हैं। एक बार जब आप उच्च स्तर पर पहुंचेंगे आप पाएंगे कि सभी वस्तुएं जिससे लोगों को मोहभाव हैं वे बुरी हैं।

शिष्य : मेरा तीसरा प्रश्न पुस्तक में उल्लेखित हत्या के मुद्दे के बारे में है। हत्या एक बहुत ही बड़ा पाप है, यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है तो क्या उसे पाप माना जाएगा?

गुरु जी : इसे पाप माना जाता है। आज का समाज बुरा है और सभी तरह की अजीब वस्तुएं सामने आयी हैं। लोग "इच्छामृत्यु" का समर्थन करते हैं, जिसमें व्यक्ति एक सूई लगवाता है और मर जाता है। इसके बारे में सोचें : एक व्यक्ति मरने के लिए सूई क्यों लगवाएगा? ऐसा इसलिए क्योंकि वह सोचता है कि उसे पीड़ा हो रही है। लेकिन हमारा मानना है कि उसकी पीड़ा उसके बुरे कर्म को दूर कर रही है, तो जब वह अपने अगले जीवन में पुनर्जन्म लेगा, उसका शरीर अच्छा और बुरे कर्मों से मुक्त होगा, और उसे बहुत खुशी मिलेगी और अन्य वस्तुएं उसकी प्रतीक्षा कर रही होंगी। पीड़ा के माध्यम से बुरे कर्मों को हटाना वास्तव में असहनीय होता है, लेकिन जब आप उसे अपने बुरे कर्मों को हटाने नहीं देते हैं और उसे मार देते हैं, तो क्या वह हत्या नहीं है? अपने बुरे कर्मों को साथ लिए वह [संसार को] छोड़ जाता है, जिसे उसे अगले जन्म में चुकाना होगा। आप किस मार्ग को उचित कहेंगे? आत्महत्या करने पर एक और पाप होता है। मानव जीवन निर्धारित होते हैं, और इसिलिए आपने उच्च प्राणियों की सारी, वस्तुओं की भव्य योजना को क्षति पहुंचाई होगी, जिसमें समाज के प्रति आपके कर्तव्य और आपके द्वारा बनाये जाने वाले पारस्परिक संबंध हैं। यदि आप मर जाते हैं, तो क्या यह उच्च प्राणियों की वस्तुओं के पूरे क्रम की व्यवस्था को बिगाड़ नहीं देगा? यदि आप उन वस्तुओं को बिगाड़ देते हैं, तो वे आपको नहीं छोड़ेंगे, इसलिए आत्महत्या करना पाप है।

शिष्य : बुद्ध जो चाहे वो कर सकते हैं, लेकिन क्या बुद्ध भावनाओं और इच्छाओं से मुक्त नहीं होते हैं? क्या वे अब भी वस्तुओं का आनंद ले सकते हैं?

गुरु जी : कुछ लोग कहते हैं कि बुद्ध खाते नहीं हैं और उनके मानव शरीर नहीं होते हैं। इस वाक्य से ऐसा लगता है जैसे सभी लोग यही सोचते हैं कि बुद्ध ऐसे ही होते हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आप साधना करने वाले समुदाय के लोगों के कथन को समझने के लिए साधारण लोगों के सोचने के तरीकों का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। बुद्ध के मानव शरीर नहीं होते है। उनके पास आणविक-स्तर के पदार्थों से बना गंदा मानव शरीर नहीं होता है। सबसे ऊपरी सतह के कण परमाणु होते हैं, और उनके सबसे सूक्ष्म कण ब्रह्मांड के अधिक सूक्ष्म पदार्थों में से हैं। उनके पदार्थ जितने अधिक सूक्ष्म होते हैं, उन पदार्थों से निकलने वाली ऊर्जा भी उतनी ही अधिक होती है, क्योंकि बुद्ध का प्रकाश सब कुछ जगमगा देता है। कुछ लोग कहते हैं कि बुद्ध भोजन नहीं करते हैं। वे मानव भोजन नहीं करते हैं; वे अपने स्तर के पदार्थ खाते हैं। उन पदार्थों को मानव शब्द "भोजन" के नाम से संदर्भित नहीं किया जा सकता है। इसलिए यदि आप बुद्ध के स्तरों के गूढ़ भाषा संबंधी अर्थों को नहीं समझ सकते हैं, [जो लोग यह कहते हैं] वे उन्हें समझने में सक्षम नहीं होंगे। मनुष्य हमेशा मानवीय मानसिकता से ही वस्तुओं को समझेगा।

कुछ साधारण लोग कहते हैं, "बुद्ध होना कितना व्यर्थ होगा। आपके पास कुछ भी नहीं होता है और आप बस बुत के जैसे वहां बैठे रहते हैं।" मैं आपको बताना चाहता हूँ कि बुद्ध अपने दिव्य लोक के पालक होते हैं। "तथागत" की उपाधि जो हम उनके लिए प्रयोग करते हैं, वह उनके नैतिक आदर्श के स्तर की

अभिव्यक्ति पर आधारित होती है। वास्तव में, वे उस दिव्य लोक के पालक होते हैं। वे उस दिव्य लोक के अनगिनत प्राणियों की देखरेख करते हैं। लेकिन, वे साधारण लोगों के जैसे नियमों को बलपूर्वक थोपकर देखरेख नहीं करते हैं; वे केवल दया और करुणा से देखरेख करते हैं। वहां सभी उस आयाम के आदर्शों के अनुरूप होते हैं, जो अतुलनीय रूप से अद्‌भुत है। उनके पास साधारण लोगों की भावनाएं नहीं होती हैं। इसके स्थान पर उनके पास करुणा होती है, जीवन की एक उच्च अवस्था, और अधिक शुद्ध वस्तुएं, और ऐसा कुछ भी नहीं जो साधारण लोगों के पास होता है। उनके पास ऐसी वस्तुएं होती हैं जो और अधिक उच्चतर आयाम से आती हैं और जो बहुत अद्‌भुत होती हैं, क्योंकि एक उच्च स्तरीय प्राणी ऐसा ही होता है। ऐसे प्राणी होते हैं जो बहुत, बहुत, बहुत अधिक ऊँचे स्तर पर हैं। यदि यह सब व्यर्थ होता था तो मरकर सब समाप्त करना ही अच्छा होता। [बुद्धत्व की अवस्था] बहुत अद्‌भुत होती है, और केवल जब आप उस दिव्य लोक तक पहुँचते हैं तभी आपको पता चलेगा कि प्रसन्नता क्या होती है। [बुद्धत्व की अवस्था] बहुत अद्‌भुत होती है, लेकिन यदि आप साधारण लोगों की इन वस्तुओं को नहीं हटाते और उन्हें नहीं जाने देते हैं तो आप वहां तक नहीं पहुँच पाएंगे।

शिष्य : चीमन पद्धति के साधक अपने गोंग का [एक भाग] अलग क्यों नहीं करते हैं?

गुरु जी : किसने कहा कि चीमन पद्धति इसे अलग नहीं करती है? सभी को अपनी साधना से विकसित होने वाले गोंग का उपयोग अपनी फलपदवी को परिपूर्ण बनाने के लिए करना पड़ता है। चीमन साधना के एक से अधिक रूप हैं, जो बहुत विचित्र, विविध और अनोखे हैं। कुछ परिस्थितियों में, [चीमन] साधक, अपनी साधना के दौरान, साधना करने के साथ-साथ इन वस्तुओं को पूरा करने के लिए [वे गोंग का उपयोग करते हैं], लेकिन जो परिश्रम लगता है उसकी मात्रा उतनी ही होती है, [जैसे कि उन्होंने साधना पूरी कर ली हो]। वह इसे [साधना पूरी करने के बाद] बढ़ाता नहीं है, इसलिए वह [इसका एक भाग] अलग नहीं करता है। जो लोग अपने गोंग को अलग कर देते हैं वह इसे और अधिक शीघ्रता से बढ़ा पाते हैं। [चीमन साधक] इसे अलग नहीं करता है, साधना करते हुए वह अपने सौभाग्य और सद्‌गुण को भी पूरा करता है, इसलिए उसका [गोंग] बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है। वह जो परिश्रम करता है वह उतना ही होता है।

शिष्य : मेरे दो प्रश्न हैं। पहला प्रश्न यह है कि जब मैंने पहले दिन ध्यान लगाया, मैंने अपने बाईं ओर मेरे पास गुरु जी के सिद्धांत शरीर को देखा, लेकिन उन्होंने काले कपड़े पहने थे और बहुत मुस्कुरा रहे थे। बाद में, मैंने कुछ पढ़ा जो इस विषय के बारे में था। क्योंकि मेरे पहली बार के ध्यान में ऐसा देखा, इसलिए मैं इस विषय में मार्गदर्शन मांगना चाहता हूँ। यह टीवी पर दिखने वाले फिल्मों के रंगों वाला नहीं था।

गुरु जी : ऐसा आयामों में भिन्नता के कारण होता है। उदाहरण के लिए, वह कौन सा रंग है जिसे ताओवादी पसंद करते हैं? बैंगनी, इसलिए वे कहते हैं कि बैंगनी ची पूर्व से आती है, और वे मानते हैं कि बैंगनी उच्चतम रंग है। बुद्धमत के लोग पीला, सुनहरा पीला रंग पसंद करते हैं, लेकिन वास्तव में ये एक ही रंग हैं। इस आयाम में यह बैंगनी है, और दूसरे आयाम में सुनहरा पीला है। इसलिए जब हम अपने आयाम में काली वस्तुएं देखते हैं, तो वे अन्य आयामों में सफेद होती हैं; जब आप उन वस्तुओं को देखते हैं जो वास्तव में यहां सफेद हैं, वे वास्तव में वहां पर काली होती हैं; यहां जो वस्तुएं हरी हैं, वे दूसरे आयामों में लाल होती हैं। सभी रंगों की अलग-अलग आयामों में अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ होती हैं, इसलिए जब आप एक निश्चित स्तर पर होते हैं तो आपको एक निश्चित प्रकार का रंग दिखाई देगा। सभी

को इस पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी असुर लोगों के साथ हस्तक्षेप करने में वास्तव में कुशल होते हैं। अधिकांश समय मेरे सिद्धांत शरीर बौद्ध काषाय पहने हुए होते हैं, और उनके घुंघराले बाल होते हैं जो बहुत नीले, चमकदार नीले होते हैं। यह केवल बहुत ही विशेष परिस्थितियों में होता है कि आप मेरे सिद्धांत शरीरों को वही पहने हुए देखें जो मेरे अभी हैं, अत्यंत विशेष परिस्थितियों में, और यह बहुत दुर्लभ है। इसलिए आपको इन वस्तुओं में अंतर करना होगा। यदि यह मैं हूँ, तो आप समझ जाएँगे कि यह मैं हूँ और बहुत आश्वस्त अनुभव करेंगे; यदि यह मैं नहीं हूँ, तो आपके मस्तिष्क में प्रश्न चिन्ह होगा।

शिष्य : मैं अब दो महीनों से इस अभ्यास का अध्ययन कर रहा हूँ, और इन दो महीनों में, दशकों से मुझे जो रोग थे, वे सब दूर हो गये। इसका कारण यह है कि उपदेशों का अध्ययन करने का मेरा उद्देश्य मेरे कर्म संबंधी बाधाओं को समाप्त करना है। इन दो महीनों में, सब कुछ आश्चर्यजनक रूप से आरामदायक रहा, और मैंने थोड़ी सी भी दवा नहीं ली हैं। यह एक बात है। दूसरी बात यह है कि मैं गुरु जी से पूछना चाहता हूँ कि क्या मैंने ध्यान करते समय जो देखा वह फालुन ही था या नहीं। मुझे एक चक्राकार में लगातार कुछ घूमता हुआ दिखायी देता है। लेकिन यह गीली मिट्टी के समान मिट्टी जैसा रंग था। यह संपूर्णता से घूम रहा था और यह बहुत ही अद्‌भुत था, लेकिन मैं इसकी आंतरिक संरचना को नहीं देख पाया।

गुरु जी : हालांकि फालुन के प्रतीकों के रंग नहीं बदलते, इसका आधार रंग बदलता है। लाल, नारंगी, पीला, हरा, हरा-नीला, नीला, बैंगनी, रंगीन, और रंगहीन—यह रंग बदलते रहेंगे, इसलिए ऐसा नहीं है कि फालुन इसी रंग का होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जब फालुन आपके शरीर को व्यवस्थित करता है, तो यह बहुत तीव्रता से घूमता है और यह बिजली के पंखे की तरह दिखता है या किसी बवंडर की तरह। कभी-कभी यह धीरे घूमता है और आप इसकी आंतरिक संरचना को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। जब यह तेजी से घूमता है तो संरचना को देखना कठिन होता है। जब यह आपके शरीर को व्यवस्थित करता है जैसे ही आप साधना शुरू करते हैं, यह जानता है कि किस गति से और कैसे घूमना है, इसलिए [जो आपने देखा] कोई भी समस्या नहीं है और यह सब सामान्य है।

शिष्य : क्या हम महान कमल मुद्रा कर सकते हैं?

गुरु जी : महान कमल मुद्रा एक स्थापित मुद्रा है। यह महान कमल मुद्रा है। (गुरु जी करके दिखाते हैं।) जब हम अभ्यास करते हैं तो हमें इसे करने की आवश्यकता नहीं होती है। आप ऐसा तब कर सकते हैं जब आप गुरु जी से बुद्ध की प्रतिमा या ताओवादी लाओज़ की प्रतिमा या दिव्य लोक के मूल गुरु की प्रतिमा को प्रतिस्थापित करने की मांग करते हैं जो आपके घर में है। यह सबसे अच्छा होगा यदि आप [जुआन फालुन] को पकड़ते हैं—क्या इसमें मेरी तस्वीर नहीं है?—और जैसे कि आप सीधे मुझसे बात कर रहे हैं, कहें, "गुरु जी, कृपया मेरे लिए प्रतिस्थापित करें।" महान कमल मुद्रा को करते हुए इस पुस्तक को हाथों में पकड़ें, और तीन सेकंड में ही प्रतिस्थापन हो जाएगा। मेरे सिद्धांत शरीर का एक और सिद्धांत शरीर उस पर रहेगा जो उसी प्रकार के दिव्य प्राणि जैसा होगा जैसे कि बुद्ध प्रतिमा। यदि आप मुझे बुद्ध अमिताभ की प्रतिमा का प्रतिस्थापन करने के लिए कहते हैं, तो मेरा सिद्धांत शरीर बुद्ध अमिताभ के सिद्धांत शरीर को बुद्ध की प्रतिमा पर आने के लिए कहेगा—यही सच्चा प्रतिस्थापन है। आज के धर्मों में जो भिक्षु हैं वे वास्तव में साधना नहीं करते हैं और कई नकली चीगोंग गुरु जो सब जगह हैं वे प्रतिस्थापन नहीं कर सकते हैं। उनके पास ऐसी कोई परोपकारी शक्ति नहीं होती है कि वे बुद्ध को

आने के लिए कह सकें। यह एक बुद्ध हैं जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं; वह ऐसे ही किसी के लिए भी नहीं आयेंगे। हालांकि, कुछ लोग दर्पण पकड़कर बुद्ध की प्रतिमा पर प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं और कहते हैं कि उन्होंने प्रतिस्थापन कर दिया है, और ऐसे अन्य लोग भी हैं जो बुद्ध की प्रतिमा की आंखों को सिन्दुरी स्याही से रंगते हैं जब तक कि उनकी आँखें लाल नहीं हो जाती और फिर यह दावा करते हैं कि उन्होंने प्रतिस्थापन कर दिया है। यह सब केवल बातों को बिगाड़ना है!

शिष्य : अभी-अभी [गुरु जी] ने कहा कि मनुष्य विभिन्न दिव्य लोकों और स्तरों से नीचे गिर गये हैं। तब स्वाभाविक रूप से, सिद्धांत के अनुसार उन्हें उन दिव्य लोकों में वापस जाना चाहिए जहां से वे नीचे गिरे थे। लेकिन ऐसा लगता है कि इस मानवीय स्तर पर, वे नहीं जानते हैं कि वे किस दिव्य लोक से नीचे गिरे हैं। इसलिए जब वे साधना करते हैं, तो उनके द्वारा चुना गया मार्ग भिन्न हो सकता है, जैसे कि उनके पास फालुन दाफा का अभ्यास करने का पूर्वनिर्धारित अवसर हो सकता है।

गुरु जी : आप दिव्य लोक में लौटने की आशा कर रहे हैं जहां से आप आए थे, जिस स्थान पर आपके जीवन का सृजन हुआ था, इसलिए आपकी मंशा अच्छी है। पहली समस्या जो आपको अभी हल करनी है वह यह है कि आप कैसे लौट पाएंगे। आपको साधना के माध्यम से लौटना चाहिए—यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। और कोई दूसरे विकल्प नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि आपके लिए सब कुछ बना बनाया है, जैसे वहां बुद्ध बैठे हुए हैं, और आप चुन सकते हैं कि आप किस [बुद्ध का दिव्य लोक] चाहते हैं। साधना में उत्थान की बात की जाये तो, यदि आप वास्तव में उच्च स्तर तक साधना करते हैं और अपने मूल स्तर पर लौटने में सक्षम होते हैं, तो उस दिव्य लोक में आप अपने संबंधियों को वहां देख सकते हैं और वस्तुओं को देखने के लिए वहां घूम सकते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस दिव्य लोक में हैं; चाहे आप सिडनी में रहें या मेलबर्न में कोई फर्क नहीं पड़ता।

शिष्य : दक्षिण-पूर्व एशिया में इतने व्यापक रूप से फैल रहे स्वर्गीय ताओ पद्धति की क्या स्थिति है?

गुरु जी : मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अब अंतिमप्रलय का समय है, जिसे बुद्ध शाक्यमुनि ने *मार्ग* के अंत का समय कहा है, जब असंख्य असुर संसार में प्रवेश करेंगे। जब बुद्ध शाक्यमुनि इस संसार में थे, तो एक असुर ने उनसे कहा था, "अभी मैं आपके *मार्ग* को बर्बाद नहीं कर सकता, लेकिन जब आपका *मार्ग, मार्ग* के समाप्त होने के समय में प्रवेश करेगा, मैं अपने शिष्यों और उनके शिष्यों को भिक्षु बनने और आपके मठों में प्रवेश करने के लिए भेजूंगा। देखते हैं कि आप इसके बारे में क्या कर सकते हैं! "यह सुनकर बुद्ध शाक्यमुनि की आंखें भर आयीं। बुद्ध शाक्यमुनि के पास वास्तव में इससे निपटने का कोई मार्ग नहीं था, और इसलिए *मार्ग* के अंत के समय में वस्तुएं वास्तव में गड़बड़ा गयी हैं। उस *मार्ग* के अंत का समय जिसका उन्होंने उल्लेख किया था उसमें केवल मनुष्य ही सम्मिलित नहीं हैं, और न केवल मंदिर, पूरे समाज में ऐसे लोग हैं जो ऐसे कार्य कर रहे हैं जो मानवजाति के होने के कारण को ही क्षति पहुंचा रहे हैं। दुष्ट धर्म धरती पर चारों ओर फैल गये हैं! ऊपरी तौर पर, वे लोगों को करुणामयी होने के लिए भी कहते हैं, लेकिन उनके भीतर से, वे इसके लिए यहाँ पर नहीं आए हैं। वे या तो प्रसिद्धि, धन, या कुछ दुष्ट प्रभाव डालने के लिए हैं—वैसी वस्तुएं। देखा जाये तो : वे क्या चाहते हैं? बुद्ध फा को मनुष्य को बचाने के लिए सिखाया जाता है। यदि आप इसका उपयोग पैसे बनाने के लिए करते हैं, तो यह एक बहुत बड़ा, दुष्ट पाप है! हालांकि, असुरों को इसकी चिंता नहीं है। वे धर्म की आड़ लेते हैं या मानवजाति को नष्ट करने, मानव हृदय को नष्ट करने और मनुष्य के अध्यात्मिक विवेक को नष्ट करने के लिए लोगों से करुणामयी होने के लिए कहते हैं। यह सबसे बड़ा कपट है। इसलिए मैं सोचता हूँ... हालांकि, कुछ बातें

हैं जो मैं कहना नहीं चाहता। आप सत्यता और दुष्टता के बीच अंतर करने में सक्षम हैं, इसलिए आप लोग स्वयं ही उनके बीच अंतर करें। मैं नहीं कहना चाहता कि कौन दुष्ट है और कौन नहीं।

लेकिन मैं आपको केवल यह बता सकता हूँ कि यदि कोई साधारण समाज में लोगों को बचाना चाहता है, यह एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व होता है, और इसके लिए ब्रह्मांड के सभी दिव्य प्राणियों को अपनी सहमति देने की आवश्यकता होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसमें बातों के कई अलग-अलग पहलु सम्मिलित हैं, यह सम्मिलित है कि प्रत्येक जातीय समूह स्वयं से संबंधित ऊपर के [दिव्य लोक के] साथ कैसे जुड़ा हुआ है, और इसमें कई और भी विषय सम्मिलित हैं, इसलिए यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे कोई भी अपने आवेग में कर सकता है। मुझे पता है कि यीशु को कीलों से क्रॉस पर क्यों लटका दिया गया था। बुद्ध शाक्यमुनि को निर्वाण का मार्ग क्यों अपनाना पड़ा?! एक सच्चे अभ्यास को प्रचारित करना कठिन है, लेकिन यदि आप एक दुष्ट अभ्यास का प्रचार करते हैं तो कोई भी आपको परेशान नहीं करेगा। ऐसा नहीं है कि कोई भी इसपर ध्यान नहीं देगा; जब एक सच्चा अभ्यास फैलाया जाता है, अधिक दुष्ट पद्धतियां होती हैं—[वे वहां होती हैं] यह देखने के लिए कि आप किस मार्ग को अपनाते हैं। यदि केवल एक ही मार्ग होता और सब कुछ जो प्रदान किया जा रहा है वे सच्ची प्रथाएँ होती, और यदि संसार में कोई भी दुष्ट प्रथाएँ नहीं होती, क्योंकि सभी को हटाया जा चुका होता, तो एक व्यक्ति के लिए साधना करनी बहुत ही सरल हो जाती। तब लोग *मार्ग* को कैसे प्राप्त करते? सब कोई आपके मार्ग की साधना करता, क्योंकि आपका ही एकमात्र मार्ग उपलब्ध होता, तब आप अपने शिष्यों की आपकी उपदेशों का पालन करने में दृढ़ता की परख कैसे कर सकते हैं? इसलिए साधारणतः जब एक सच्ची पद्धति फैलाई जाती है, तो दुष्ट पद्धतियां भी फैलाई जाती हैं, यह देखने के लिए कि लोग किस मार्ग को अपनाते हैं। आपकी ज्ञानप्राप्ति को परखने के लिए, जैसे-जैसे आप साधना करते हैं, तो कुछ ऐसे लोग होंगे जो आपको ढूंढते हुए आएँगे और कहेंगे, "आओ, मेरे साथ यह अभ्यास करो! आओ मेरे साथ वह अभ्यास करो! देखो, मैं अब यह महान अभ्यास कर रहा हूँ," और इत्यादि। वे निश्चित ही आपको वहां खींचने और आपकी परीक्षा लेने का प्रयास करेंगे। परिस्थितियां जहां लोग आपको दूर खींचने का प्रयास करते हैं जो आपकी साधना की प्रक्रिया की शुरुआत से अंत तक होगा। जब ऐसा होता है तो हम बीच में क्यों नहीं आते हैं? सिद्धांत शरीर किसी भी बात से निपट सकते हैं। वे कुछ भी क्यों नहीं करते? ऐसा इसलिए है क्योंकि वे असुरों के माध्यम से उस व्यक्ति के मन की परीक्षा ले रहे होते हैं, यह देखने के लिए कि आप इस अभ्यास में मूल रूप से दृढ़ हैं या नहीं, क्योंकि बुद्धत्व की साधना करनी इतनी गंभीर है। इसलिए इस तरह की बात होगी।

वैसे भी, मैंने समझा दिया है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। आजकल, सच्चे धर्मों के लिए भी लोगों को बचाना बहुत कठिन है, दुष्ट धर्मों की तो बात ही छोड़ दें! उन लोगों में से कुछ स्वयं को कलाकारों की तरह तैयार करते हैं और लोगों द्वारा उठा कर घुमाये जाते हैं, वे जहां भी जाते हैं पैसे मांगते हैं, और लोग फिर भी उन पर विश्वास करते हैं। लोग इतने भ्रमित हैं! जब लोगों को *मार्ग* नहीं मिला होता है, तो उनके लिए धोखा खाना आसान हो जाता है।

शिष्य : विचार कर्म कैसे काम करते हैं?

गुरु जी : कुछ लोगों का मस्तिष्क उल्टे-सीधे बुरे विचार उत्पन्न करता है। हम एक सच्चे *मार्ग* की साधना कर रहे हैं—मैं समाज के प्रति, मानवता के प्रति, और लोगों के प्रति उत्तरदायी होने के सिद्धांत का पालन करते हुए यह कर रहा हूँ। वह व्यक्ति जानता है कि [फालुन दाफा] अच्छा है, लेकिन उसका मस्तिष्क

मुझे कोसता है और उसे यह भी कहता है कि वह दाफा पर विश्वास न करें और यह कि [दाफा] नकली है। ऐसा क्यों होता है? अपने शरीर पर बुरे कर्मों के अतिरिक्त, मनुष्य के विचार कर्म भी होते हैं। कोई भी वस्तु जीवित होती है, और इस प्रकार विचार कर्म भी जीवित होते हैं। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो आपको अपने विचारों को शुद्ध करना होगा, और आपको दूसरों को कोसने के विचारों को, आपके द्वारा बनायी गयी धारणाओं को, और विभिन्न प्रकार के कर्म जो आपने कई जन्मों में बनाये हैं, उन्हें हटाना होगा। आपकी मूल प्रकृति तभी उभरेगी जब आप उन्हें हटा देंगे। जब आप साधना करनी शुरू करते हैं और लोगों को कोसने के इन विचारों और धारणाओं को हटाने की कोशिश करते हैं, तो वे विचार इससे लड़ेंगे—क्या वे समाप्त होना चाहेंगे? वे आपके मस्तिष्क में प्रतिक्रिया करेंगे : "यह सब नकली है," इसको कोसेंगे, लोगों को कोसेंगे, और जितनी अधिक आप साधना करते हैं उतना अधिक वे कोसेंगे, आपके मस्तिष्क में गंदी गालियां पैदा करेंगे। वास्तव में, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वे विचार स्वयं आपके नहीं हैं; वे बुरे कर्म है, विचार कर्म। आपको उन्हें अस्वीकार करना होगा। ये अभ्यास संग्रह स्वयं आपको परिष्कृत करते हैं। यदि आपका मन स्पष्ट नहीं हैं, तो जैसे ही कोसने वाले शब्द उभरते हैं और यदि आप दृढ़ नहीं रहते हैं, आपकी मुख्य चेतना उनके साथ बह जाएगी, और आप अभ्यास करना बंद कर देंगे और स्थिर नहीं रहेंगे। तब हम आपका ध्यान नहीं रख पाएंगे। क्योंकि यह आप है जिसे हम बचाते हैं, यदि आप उस स्तर तक नहीं पहुँचते हैं तो हम आपको नहीं बचाएँगे।

ऐसी स्थिति अतीत में बहुत हुआ करती थी। चीन में, कुछ लोगों के मस्तिष्क ने बहुत ताकत से प्रतिक्रिया की। [एक व्यक्ति के] मस्तिष्क ने बहुत ताकत से कोसा और वह विचारों को हटा नहीं सका। अंत में, उसने कहा, "मैं गुरु जी को निराश कर रहा हूँ! मैं गुरु जी को कोस भी रहा हूँ। मैंने बहुत अधिक बुरे कर्म उत्पन्न कर लिये हैं, मैं अब और जीना नहीं चाहता," और इसके साथ ही, उसने एक चाकू लिया और अपना गला काटने का प्रयास किया। किन्तु, आप ऐसा प्रयास न करें। बहुत प्रयास करने पर भी वह अपना गला नहीं काट सका; न ही उसे कोई पीड़ा हुई और न ही रक्त बहा। वह व्याकुल हो गया और [फालुन दाफा के] स्वयंसेवक को इस विषय में पूछने के लिए ढूँढने बहार दौड़ा। उसने कहा, "मेरा मन गुरु जी को कोसता रहता है। मैं क्या करुँ?" जब स्वयंसेवक ने देखा कि क्या चल रहा है, तो उन्होने इस व्यक्ति को उपदेशों को पढ़कर सुनाना शुरू किया, और उस व्यक्ति को लगा कि [इस बात को हल करने में] इसका बहुत अच्छा परिणाम हो रहा है। बाद में, इस व्यक्ति ने मुझसे इस स्थिति के बारे में पूछा और मैंने उससे कहा : यह वास्तव में आपके बुरे कर्म हैं जो कोस रहे हैं, न कि आप। आपको मन पर बोझ नहीं डालना चाहिए, क्योंकि ये बुरे कर्म है, न कि आप जो मुझे कोस रहे हैं। लेकिन आपकी मुख्य चेतना स्पष्ट होनी चाहिए और इसका विरोध करना चाहिए; इसका विरोध करने का प्रयत्न करें और इसे कोसने से रोकें। यदि आप इसका विरोध और इसको रोकते रहेंगे तो मेरे सिद्धांत शरीर को पता चल जाएगा कि आप क्या कर रहे हैं। यह जानता है कि आप क्या कर रहे हैं और बुरे कर्म के [कोसने से पहले ही] जान लेता है कि वह कोसने वाला है। यह आपके लिए एक परीक्षा है, यह देखने की परीक्षा कि आपकी मुख्य चेतना दृढ़ है या नहीं। यदि आप दृढ़ रहते हैं, मेरा सिद्धांत शरीर कुछ समय के बाद इस बुरे कर्म को समाप्त कर देगा। मैं इस विचार कर्म को समाप्त करता हूँ क्योंकि यह सीधे आपकी साधना में हस्तक्षेप करता है और आपकी वस्तुओं की ज्ञानप्राप्ति की क्षमता को प्रभावित करता है। इस बात पर ध्यान दें और समझ लें कि [बुरे कर्म और अपने विचारों के बीच] कैसे अंतर करना होता है जब वे उभरते हैं।

शिष्य : मैं एक ऐसी बात करना चाहता हूँ जिसमें अभ्यास और मुद्राओं का और व्यक्ति के नैतिक गुण के बीच का संबंध सम्मिलित है। क्या अभ्यास किसी के नैतिक गुण को और अधिक ऊपर उठाने में मदद कर सकता है?

गुरु जी : कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, हालांकि मुद्राएँ मौलिक और अध्यात्मिक पूर्णता का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं। हमारी पद्धति वह है जिसमें अभ्यास अभ्यासी को परिष्कृत करता है। अभ्यास तब भी आपको परिष्कृत कर रहा होता है जब आप अभ्यास नहीं कर रहे होते हैं, चाहे आप सो रहे हों, काम कर रहे हों या भोजन कर रहे हों। यह आपको चौबीसों घंटे लगातार परिष्कृत करता रहता है, और यह आपके जीवन में अभ्यास करने के समय की मात्रा को कम कर देता है, जिससे आप जल्द से जल्द अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँच सकते हैं। अन्यथा, मैं कैसे दावा कर सकता था कि मैं आपको इस जीवनकाल में अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुंचाऊंगा? ऐसा होना आवश्यक है। किन्तु हमारे अभ्यास के व्यायाम अन्य अभ्यासों की तरह नहीं होते हैं, जिनमें आप केवल अभ्यास करते समय ही गोंग बढ़ा सकते हैं, और जैसे ही आप रुक जाते हैं, आपका गोंग बढ़ने से रुक जाता है। हमारा अभ्यास आपमें स्थापित किये गये सभी यंत्रों को प्रबल बनाता है। आप अपने शरीर के अंदर और बाहर दोनों तरफ के यंत्रों को प्रबल बना रहे होते हैं। मैं यह क्यों कहता हूँ कि हम "सिर को भरने" की स्थिति में अपने हाथ नहीं रखते हैं, और हमारे हाथ "बाहर भेजते" या "छोड़ते" भी नहीं हैं, बल्कि शरीर के साथ-साथ हथेलियों को अन्दर की ओर कर के चलाते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप स्वयं को ची यंत्रो के अनुसार चलाते हैं, जो मैने आपके शरीर के अंदर और बाहर स्थापित किये हैं, व्यायाम करते समय आपके हाथों में बड़ी मात्रा में ऊर्जा होती है, और यह ची यंत्रों को प्रबल बनाता है; अर्थात, यंत्रों को। जब आपके हाथ पेट के निचले भाग पर एक के ऊपर एक होते हैं तो वे दानतियान के यंत्रों को प्रबल बनाते हैं, और जब आप खिंचाव वाले व्यायाम करते हैं तो आप उन यंत्रों को प्रबल करते हैं जो गतिमान होते हैं। इस प्रकार, हमारे अभ्यास निरंतर गतिमान यंत्रों को प्रबल कर रहे होते हैं जो आपको लम्बे-समय तक परिष्कृत करते हैं, दिन के चौबीसो घंटे, और इसलिए व्यायामों को करना अध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का साधन है। लेकिन यह जरूरी नहीं है, क्योंकि व्यायाम अध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का एक पूरक साधन है। लेकिन तब भी व्यायाम करना मूल रुप से आवश्यक है। इस पद्धति में साधना के माध्यम से आप जिन वस्तुओं को उत्पन्न करते हैं उनको इधर-उधर भटकने से रोकना सीधे इन वस्तुओं के संग्रह से और आपकी मुद्राओं से संबंधित है। इसका कारण यह है कि हमारे पास तकनीकी वस्तुएं भी हैं, वस्तुएं जो जीवन को बदलती हैं और व्यक्ति को साधना करने के लिए अपने जीवन को बढ़ाने देती हैं, जो अलौकिक क्षमताओं को प्रबल बनाती हैं, और आदि, इसलिए व्यायामों का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। साधना पहले आती है और व्यायामों को करना बाद में। साधना प्राथमिक है और व्यायामों का अभ्यास उसके बाद। लेकिन यदि आप इस पद्धति में अध्यात्मिक पूर्णता तक पहुँचना चाहते हैं तो आपको साधना और अभ्यास दोनों करने होंगे।

शिष्य : जब मैं व्यायामों का अभ्यास करता हूँ तो मैं कोई [विशेष] घटना नहीं देख पाता हूँ। मैं केवल श्वेत प्रकाश देख सकता हूँ, और मैं जब चाहूँ तब मैं गुरु जी की छवि देख सकता हूँ। क्या वह भ्रम है?

गुरु जी : मैं इसे दो विषयों में बांट रहा हूँ। उन लोगों के लिए जिनके दिव्य नेत्र देख नहीं सकते हैं, यह उन कारकों के कारण हो सकता है जो उन्हें उच्च स्तर तक पहुंचने में और आगे बढ़ा रहे हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिन लोगों के पास अधिक ज्ञानप्राप्त करने की क्षमता है और जिनके पास उच्च स्तरों पर साधना करने की क्षमता है, जितना कम उन्हें देखने दिया जाएगा, उतनी ही जल्दी वे साधना कर

पाएंगे। क्योंकि वे दुःख और भ्रम के बीच ज्ञानप्राप्त कर रहे होते हैं, दुःख की उतनी ही मात्रा उन्हें दुगनी तेजी से ऊपर उठने में सक्षम करेगी। [देखने में सक्षम नहीं होने] से यही अंतर होता है, इसलिए संभवतः यह उच्च स्तर पर साधना करने के लिए है।

दूसरी बात यह है कि भले ही आप कहते हैं कि आपने कुछ भी नहीं देखा है, आपने वास्तव में कुछ तो देखा है। इस पर विशेष ध्यान दिए बिना, आपने अपने शरीर को श्वेत प्रकाश से घिरा हुआ देखा था। इसके अतिरिक्त, कभी-कभी आप जब चाहें उन वस्तुओं को देख सकते हैं, और आप वास्तव में उन्हें देख सकते हैं, लेकिन आपको लगता है कि यह एक भ्रम है। बहुत से लोग, जब वे वस्तुओं को देखने में सक्षम होते हैं, तो सोचते हैं कि वे वस्तुओं की कल्पना कर रहे हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब आप वस्तुओं को मानवीय नेत्रों से देखते हैं, तो आपको [वस्तुओं को उस तरह से देखने की] आदत हो जाती है, क्योंकि आप सोचते हैं कि यह आपकी आंखें हैं जो [उन वस्तुओं] को देख रही हैं। लेकिन इस पर विचार करें : जो कुछ भी आप देखते हैं वह आपके ऑप्टिक तंत्रिका के माध्यम से आपके मस्तिष्क में प्रेषित एक छवि है, और आप जो वस्तुएं देखते हैं [वास्तव में] वे मस्तिष्क में प्रतिबिंब होते हैं। आपकी आँखें केवल कैमरे के लेंस की तरह हैं; वे स्वयं वस्तुओं का विश्लेषण और उन्हें प्रतिबिंबित नहीं कर सकतीं, क्योंकि यह मस्तिष्क है जो वास्तव में वस्तुओं को दर्शाता है। क्योंकि यह मस्तिष्क है जो छवियों को दर्शाता है, दिव्य नेत्र जो देखते हैं और लोग जो कल्पना करते हैं वे दोनों ही मस्तिष्क में प्रतिबिंब होते हैं। जब आप कुछ सोचते हैं, तो यह मस्तिष्क है जो सोच रहा होता है, और जब आप कुछ देखते हैं, तो मस्तिष्क ही छवि को बनाता है। इसलिए जब कुछ लोग वस्तुओं को देखने में सक्षम होते हैं, तो वे सोचते हैं कि वे वस्तुओं की कल्पना कर रहे हैं। लेकिन यह भिन्न है, क्योंकि जब आप कल्पना कर रहे होते हैं तो यह वास्तविक नहीं लगती है और यह हिलती नहीं है, क्योंकि यह एक स्थिर छवि होती है। दूसरी ओर, जब आप वास्तव में वस्तुओं को देखते हैं, तो वे हिलती हैं। जब आप इन वस्तुओं को [देखने के] अभ्यस्त हो जाते हैं, आप धीरे-धीरे इस तरह की और वस्तुएं देखने लगेंगे, और जैसे-जैसे आप धीरे-धीरे समय के साथ इसकी आदत डालेंगे, तो आप धीरे-धीरे पाएंगे कि आपने वास्तव में वस्तुएं देखीं हैं, और संभव है कि आप [इस क्षमता] का बेहतर उपयोग करने में सक्षम होंगे।

अतीत में, जब कुछ ताओवादी अपने शिष्यों को प्रशिक्षित करते थे, तो वे विशेष रूप से उन्हें वस्तुओं की कल्पना करने के लिए कहते थे क्योंकि वे इस संबंध को समझते थे और अपने शिष्यों की अलौकिक क्षमताओं को इस तरह प्रशिक्षित कर सकते थे। आपके सामने कोई सेब नहीं होता है, लेकिन फिर भी आप कल्पना करें कि आपके सामने एक सेब है, और गुरु जी आपको बताएँगे कि यह किस तरह का सेब है। वास्तव में, कोई सेब नहीं है, लेकिन वे आपको इसे सूंघने में सक्षम होने के लिए प्रशिक्षित करेंगे; फिर आप इस सेब के दृश्य की कल्पना करेंगे, कि यह कैसा दिखता है—वे अपने शिष्यों को ऐसे ही प्रशिक्षित करते हैं। क्योंकि ये चित्र मस्तिष्क में बनते हैं, इसलिए कुछ लोग इस विषय को स्पष्ट रूप से नहीं बता सकते हैं। वैसे भी, जब आप किसी वस्तु की कल्पना कर रहे होते हैं, तो वह हिलती नहीं है, और जब आप कुछ देखते हैं तो वह हिलती है।

शिष्य : एक बार जब मैं रात को सपना देख रहा था, मैंने कुछ डरावना देखा, लेकिन मुझे आप का विचार नहीं आया; मुझे तंत्रवाद का विचार आया था। लेकिन मैं फालुन दाफा का एक बहुत ही सच्चा अभ्यासी हूँ। तो क्या एक दिन कुछ ऐसा होगा, और फिर मैं नष्ट हो जाऊंगा, और यहां तक कि मेरी मुख्य चेतना भी नष्ट हो जाएगी?

गुरु जी : ऐसा इसलिए है क्योंकि आप कभी-कभार ही पुस्तक पढ़ते हैं। हालाँकि अब आप *महान मार्ग* की साधना कर रहे हैं, तब भी आपके मस्तिष्क में तांत्रिक वस्तुएं अभी भी हैं, इसलिए आपने अपने सपने में जो सोचा था वह तंत्रवाद था न कि *महान मार्ग*। कुछ लोगों ने मुझसे यह पूछा है कि यदि घातक संकट उनके सामने आते हैं तो उन्हें क्या करना चाहिए। मैंने कहा कि आप किसी भी ऐसी वस्तु का सामना नहीं करेंगे जो आपकी साधना से संबंधित न हो, यह निश्चित है। आप उन्हीं वस्तुओं का सामना करेंगे जो आपकी साधना से संबंधित होंगी। यदि आप वास्तव में आज अपने प्राण गंवा देते हैं, वह यह दर्शाता है कि कोई भी साधना पद्धति आपकी देखभाल नहीं कर रही थी और आपने कभी भी साधना नहीं की थी। धर्म जीवन के ऋण को चुकाने का समर्थन करते हैं, यह कहते हुए कि एक ही जीवन में साधना पूरी करनी असंभव है। एक जीवन के ऋण की भरपाई करने के बाद, आप अगले जीवन में साधना करना जारी रख सकते हैं—वे इसी का समर्थन करते हैं। लेकिन हम इसका समर्थन नहीं करते हैं। हम यहां इस बात पर बल देते हैं कि आपको इन वस्तुओं का अनुभव नहीं करवाया जाएगा, क्योंकि मेरे सच्चे अभ्यासी निश्चित रूप से घातक संकट का सामना नहीं करेंगे।

शिष्य : मैं उस समय समझ नहीं पाया कि यह एक सपना था।

गुरु जी : उस समय आप तंत्रवाद का अभ्यास कर रहे थे, लेकिन वास्तव में साधना नहीं कर रहे थे, तो इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा; इसलिए, कोई भी आपकी देखरेख नहीं कर रहा था। कुछ लोग कहते हैं कि जब वे सपना देखते हैं तो वे धरती पर पैसे देख सकते हैं और वे उसे उठा लेते हैं। वास्तव में, यह सपने लोगों के लिए परीक्षाएं हैं यह देखने के लिए कि आपका नैतिक गुण ठीक है या नहीं। कुछ साधकों का कहना है कि वे दिन के समय बहुत अच्छे से रहते हैं लेकिन अपने सपनों में स्वयं को अच्छी तरह से संभाल नहीं पाते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मन में छिपे कोनो में उनके विचार सही नहीं हैं, और उनकी सपनों में परीक्षा ली जाती है कि वे सही हैं या नहीं, इसलिए ऐसी समस्या होगी। आप दुःखी नहीं होना यदि ऐसा होने पर आप स्वयं को संभाल नहीं पाते हैं। यदि आप इसे गंभीरता से लेते हैं, तो आप निश्चित रूप से इसे ठीक से संभाल पाएंगे और आप भविष्य में ठीक रहेंगे।

शिष्य : गुरु ली ने चीन में [फालुन दाफा] कक्षाओं के सभी उपस्थित लोगों के लिए फालुन स्थापित किया था। क्या आप हम लोगों के लिए फालुन स्थापित करेंगे जो आज यहाँ आपका उपदेश सुन रहे हैं? एक और प्रश्न यह है कि, हम मानसिक रूप से असामान्य लोगों को साधक के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं; क्या मस्तिष्क की कम समस्या वालों के लिए कोई विकल्प है?

गुरु जी : सबसे पहले मैं पहले प्रश्न के विषय में बात करूंगा। मैंने उल्लेख किया था कि इस पुस्तक के प्रत्येक शब्द में मेरे सिद्धांत शरीर है और मेरे सिद्धांत शरीर की छवि है। प्रत्येक शब्द में बुद्ध की छवि है। मेरे पास अनगिनत सिद्धांत शरीर हैं; इतने अधिक हैं कि संख्याओं में उन्हें नहीं गिना जा सकता है। आप जानते हैं कि शाक्यमुनि ने बताया था कि बुद्ध अमिताभ के पास बीस लाख सिद्धांत शरीर हैं। मेरे सिद्धांत शरीर इतने हैं कि आप उन्हें संख्याओं में नहीं गिन सकते—वे अनगिनत हैं। मैं जितनी आवश्यकता है उतने लोगों का ध्यान रख सकता हूँ; मैं पूरी मानवजाति का भी ध्यान रख सकता हूँ। वास्तव में, हम केवल साधकों के लिए ही [ऐसी] भूमिका निभाते हैं। जो साधक नहीं हैं मैं उनके साथ या सामाजिक कार्यकलापों में संलग्न नहीं होता। इसलिए जब आप साधना करेंगे, तो जैसे ही आपको यह विचार आएगा, मेरे सिद्धांत शरीर को इसके बारे में पता चल जाएगा। एक और बात है। आप देख सकते हैं कि इस समय मेरा यह शरीर साधारण मांस का शरीर है और यह केवल इतना ही बड़ा है। लेकिन

यदि आप दूसरे आयाम में जाते हैं, तो आप पाएंगे कि मेरा शरीर इस से कई गुणा बड़ा है। मेरा शरीर क्रमशः प्रत्येक संबंधित आयाम में बड़ा और विशाल है, और मेरा सबसे बड़ा शरीर अवर्णनीय रूप से विशाल है। कई शिष्यों ने, अचानक, मेरे बहुत विशाल शरीर को देखा है। वे कहते हैं, "गुरु जी, जब मैं आपके पैर के अंगूठे के पास खड़ा था, मैं आपके पैर के अंगूठे के ऊपर के भाग को भी नहीं देख पा रहा था।" मतलब यह इतना विशाल शरीर है। इसके बारे में सोचें : पूरी धरती यहीं पर है, आप जहाँ भी होंगे मैं आपकी देखभाल कर सकता हूँ। क्या मुझे किसी के लिए फालुन स्थापित करने के लिए उनके सामने खड़े रहने की आवश्यकता है? जब मैं किसी व्यक्ति के सामने नहीं भी होता हूँ तो मैं इसे उसी तरह स्थापित कर सकता हूँ। यहां तक कि जब मैं वहां नहीं हूँ जहाँ आप हैं, तब भी मैं आपके साथ हूँ।

दूसरी बात जो आपने उठाई है वह पागलपन के विषय में है। चाहे वह साधारण हो या गंभीर, हमारे पास इसके लिए एक स्पष्ट नियम है : हम ऐसे लोगों को अभ्यास में सम्मिलित होने का सुझाव नहीं देते हैं। यह पद्धति दूसरों से भिन्न है। हम उस व्यक्ति के स्वयं को बचाते हैं, और यदि हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, तो हम [अपनी वस्तुएं] किसी और को नहीं देंगे। हमारा गोंग केवल स्वयं उसी व्यक्ति के शरीर पर स्थापित किया जा सकता है, और हम केवल आपकी मुख्य चेतना को बचाते हैं; हम केवल आपके स्वयं को बचाते हैं। यह इतिहास में अभूतपूर्व है। पूरे इतिहास में, चाहे आप तंत्रवाद का या अन्य धर्मों का अभ्यास करते थे, वे सभी आपकी सह चेतना को ही बचाते थे। मैंने यहां युगों-युगों के रहस्य को उजागर किया है। जब यह रहस्य उजागर हुआ, तो वास्तव में [इसके उजागर होने का] बहुत विरोध हुआ। लेकिन जब भविष्य में धरती उत्तम बन जाएगी, तब कई बुद्ध लोगों को बचाने के लिए फिर से संसार में आएंगे। जब ऐसा होगा, तब केवल मैं ही मनुष्य की मुख्य चेतना को बचाने वाला नहीं रहुंगा, बल्कि वे भी ऐसा ही करेंगे। मैंने इस स्थिति [मुख्य चेतना को बचाने का विषय] को उलट और बदल दिया है क्योंकि मनुष्य की मुख्य चेतना को बचाने से समाज की नैतिकता की स्थिरता के संदर्भ में प्रत्यक्ष लाभ होता हैं। जब आप किसी व्यक्ति की सह चेतना को बचाते हैं, वह व्यक्ति स्वयं साधना करने में असमर्थ होता है, और उस [व्यक्ति] ने जो किया वह था केवल किसी धर्म के साथ जुड़ना, और समाज वैसे ही रहता है—इसका समाज पर बड़ा प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए जब आप किसी व्यक्ति की मुख्य चेतना को बचाते हैं, तो चाहे वह साधना करें या न करें, वह समाज में एक अच्छा व्यक्ति बनेगा और समाज को लाभान्वित करेगा। मानसिक रोग वाले लोगों में स्पष्ट चेतना नहीं होती, और इसलिए हम उन्हें बचा नहीं सकते हैं। हम स्पष्ट चेतना वाले लोगों को बचाते हैं; यदि हम किसी अस्पष्ट चेतना वाले व्यक्ति को वस्तुएं देंगे, तो वे वस्तुएं अगले दिन किसी और द्वारा ले ली जाएंगी। ऐसे लोग अभ्यास करने में दृढ़ नहीं होंगे, और इससे भी कम संभावना है कि वे हमारे नियमों का पालन कर सकेंगे, एक ही पद्धति के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे, और यह और वह अभ्यास नहीं करेंगे। क्योंकि बुद्धत्व की साधना एक गंभीर बात है, हम उसे बचा नहीं सकते हैं यदि वह इन वस्तुओं को नहीं कर सकता है। कुछ लोग उनसे अभ्यास करवाने का हठ करते हैं, लेकिन यदि कुछ अनुचित हुआ तो आप उत्तरदायी होंगे। यदि वह कुछ समय अभ्यास करता है और यदि कुछ अनुचित हो जाता है, जब ऐसा होगा तो वह कहेगा कि समस्याएं फालुन दाफा के अभ्यास करने से आयी हैं। हम मानसिक रोग वाले लोगों को कदापि नहीं सिखाते हैं, ऐसा ही निश्चित है। क्योंकि वह एक साधारण व्यक्ति है, उसे रोग होंगे और समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जब वह अभ्यास स्थल पर अभ्यास करने का प्रयत्न कर रहा होगा तो उसके साथ कुछ अनुचित हो सकता है, लेकिन ऐसा उसके अभ्यास करने के कारण नहीं होता है। ऐसा इसलिए होगा क्योंकि यह उसके रोग के लौटने का समय था।

शिष्य : मानवजाति के सभी सदस्य एक समान होते हैं, लेकिन पूर्वियों द्वारा फैलाए गए बुद्धमत और पश्चिमियों द्वारा फैलाए गए ईसाई धर्म के बीच एक बड़ा अंतर है। पश्चिम में बुद्धमत का प्रभाव कम है। क्या ये दो अलग-अलग पद्धतियां हैं?

गुरु जी : पश्चिम ईसाई धर्म का और पूर्व बुद्धमत का अभ्यास क्यों करता है? पूर्वी धर्मों और पश्चिमी धर्मों के बीच इतना बड़ा अंतर क्यों हैं? वास्तव में, ईसाई धर्म बौद्ध प्रणाली की सीमा में ही है। यह केवल जातीयता, संस्कृति और खगोलीय संस्कृति में अंतर के कारण विभिन्न जातीयता की भौतिक विशेषताओं और सोचने के ढंग में अंतर पैदा हो गया है। इसका अर्थ है कि लोगों की अलग-अलग आदर्श और विशेषताएं होती हैं। इससे बुद्धत्व की साधना करने के उनके ढंग और जिस तरह से वे उच्च स्तर के दिव्य प्राणियों को समझते हैं उसमें अंतर पैदा हो जाता है। किन्तु संस्कृति, विचारों की अवधारणाएँ, और दिखने में अंतर के कारण, वे उन्हें बुद्ध नहीं कहते हैं, हालांकि पूर्व में प्रचलित शब्द बुद्ध है। वास्तव, दिखने में अंतर के कारण, यीशु के दिव्य लोक में लोग सफेद वस्त्र पहनते हैं। दूसरी ओर, जो बुद्ध के दिव्य लोक में हैं वे पीले वस्त्र पहनते हैं। उनके बाल भी भिन्न होते हैं, और विभिन्न समूहों के बीच सबसे बड़ा अंतर उनके बाल ही होते हैं। ताओवादी अपने बालों को जूड़े में बाँधते हैं, बुद्ध अर्हतों के सिर मुंडे हुए होते हैं और बोधिसत्वों के बाल प्राचीन चीनी महिलाओं की शैली में होते हैं। क्यों? प्राचीन चीन में पहने जाने वाले वस्त्र वैसे ही हैं जैसे दिव्य लोगों द्वारा पहने जाते हैं। वास्तव में, दिव्य लोकों और राज्यों द्वारा अपनायी गयी पोशाक की शैली एक ही है। पश्चिमी लोगों के साथ भी ऐसा ही है, क्योंकि वे अपने दिव्य लोकों में ऐसे ही वस्त्र पहनते हैं। लोग ऐसे ही होते हैं। हालांकि, वर्त्तमान के फैशन सभी नयी शैलियां हैं। वास्तव में, आधुनिक लोगों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र बुरे और भद्दे होते हैं।

गोरी जाति के देशों में बुद्धमत क्यों नहीं है? और पूर्वी देशों में ईसाई धर्म क्यों नहीं है? स्पष्ट रूप से कहा जाए तो, उन जगहों पर उनका अस्तित्त्व नहीं हैं। मुझे याद है कि बाइबल या ऐसी ही एक पुस्तक में यहोवा और यीशु दोनों ने कुछ ऐसा कहा था जिसका अर्थ है : "पूर्व की ओर मत जाओ।" और भी बहुत कुछ था, लेकिन मुझे केवल यह पंक्ति याद है, "पूर्व की ओर मत जाओ," अपने शिष्यों को पूर्व में शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए मना किया था। उनके शिष्यों ने उनकी बात नहीं सुनी और खोजी दलों के साथ पूर्व की ओर यात्रा की। यहाँ एक विषय उठता है। पृथ्वी की जातियों को मिलाना निषेध है। अब जबकि जातियां मिश्रित हो चुकी हैं तो यह एक अत्यंत गंभीर समस्या बन गयी है। मिश्रित जाति बन जाने के बाद अब [उनकी जाति का] ऊपर के लोगों के साथ परस्पर संबंध नहीं रहा, और उन्होंने अपनी जड़ें गंवा दी। मिश्रित जाति ने अपनी जड़ें गंवा दी है; यह ऐसा है जैसे दिव्य राज्यों और दिव्य लोकों में रहने वाले अब उनकी देखभाल नहीं करते हैं—वे कहीं के नहीं रहे और कोई भी उनको अपनाना नहीं चाहता है। तो आप देख सकते हैं कि अतीत में, यूरोप और एशिया के मुख्यभूमि क्षेत्रों को जोड़ने वाले क्षेत्र में एक रेगिस्तान था। यह एक निर्जन क्षेत्र था, और ऐसे समय में जब परिवहन इतना उन्नत नहीं था, इसे पार करना कठिन था। आधुनिक उपकरणों की प्रगति के साथ, यह [बाधा] हट गयी, इसलिए जातियां तेजी से मिश्रित हो गयी हैं, और इससे गंभीर परिणाम सामने आएंगे। हालाँकि, मैं इन बातों पर बल नहीं देता हूँ; केवल यह कहना है कि जो ऊपर हैं वे इन जातियों को स्वीकार नहीं करते हैं।

जो विषय मैंने अभी उठाया है वह यह है कि जातियों और ऊपर वालों के बीच एक परस्पर संबंध है। ऊपर की गोरी जाति, इस संसार में और इस ब्रह्मांड में, इस ब्रह्मांड का बहुत ही कम प्रतिशत है—जो उनका दिव्य लोक है। दूसरी ओर, बुद्ध और ताओ के और पीली जाति के दिव्य लोक बहुत अधिक संख्या में हैं, और वे लगभग पूरे ब्रह्मांड को भर देते हैं। तथागत बुद्ध गंगा नदी में रेत के अनेक कणों

जितने हैं—वे बहुतायत में और विशाल हैं। इस ब्रह्मांड में पीली जाति के दिखने वाले लोग बड़ी संख्या में हैं, इस तरह ऊपर और नीचे की जातियां एक दूसरे से सम्बंधित हैं। "पूर्व में शिक्षाओं का प्रसार मत करना" यीशु के ऐसा कहने का तात्पर्य यह था कि [अपने शिष्यों को यह बताना] कि "उनका संबंध हमारे साथ नहीं हैं।" यीशु ने कहा कि शिक्षाओं को पूर्व में न फैलाएं, और मैंने देखा है कि यीशु के दिव्य लोक में कोई भी पूर्वी नहीं है। यह बहुत दुःखद है! समकालीन समय के अनुसार, लोग अब अपने ईष्ट की बातें नहीं सुनते हैं, और पूर्वी लोग अब बुद्ध की बातें नहीं सुनते हैं, इसलिए लोगों ने इन बातों को बिगाड़ दिया है। मैंने यह भी पाया है कि बुद्ध के दिव्य लोकों में अतीत में गोरे लोग नहीं थे। लेकिन जो आज मैं प्रदान कर रहा हूँ, मैं इसे पश्चिमी लोगों को क्यों प्रदान कर रहा हूँ? ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं संपूर्ण ब्रह्मांड के सिद्धांतों का प्रसार कर रहा हूँ। जब मेरे *मार्ग* पर साधना करने के माध्यम से कोई भी गोरे लोग भविष्य में साधना में सफल होते हैं, तो उनके शरीर का रूप और उनके साधना के रूप यीशु के दिव्य लोक के लोगों के समान होंगे। वे ऐसे होंगे जब वे साधना में सफल होंगे। पीली जाति के लोग बुद्ध के रूप में होंगे जब वे साधना में सफल होंगे। इसलिए मैं दोनों प्रकार के लोगों को बचा सकता हूँ। क्योंकि यह अभ्यास जो मैं फैला रहा हूँ वह अत्यन्त भव्य है, मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि... कोई द्वार इसके जितना बड़ा पहले कभी नहीं खोला गया, लेकिन यह भी किसी कारणवश है।

शिष्य : गुरु जी, मिश्रित जाति के बच्चों की क्या स्थिति है?

गुरु जी : अभी-अभी मैंने मिश्रित जाति के बच्चों की स्थिति पर बात की। यह मानवता को एक दिव्य रहस्य बताने के लिए था, और न कि इसलिए कि हम इसके बारे में कुछ करने जा रहे हैं। मैंने बताया है कि मैंने बहुत बड़ा कार्य शुरू किया है, और मैं मिश्रित जाति के लोगों को भी बचा सकता हूँ, हालांकि यह केवल इस अवधि के लिए है कि मैं उन्हें बचा सकता हूँ। हालाँकि पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही धरती पर रहते हैं, लेकिन दोनों पक्षों के बीच कुछ है जो इन्हें अलग करता है जिसके बारे में लोग नहीं जानते हैं। आप जानते हैं कि पूर्वी लोग नंबर नौ (जीयू) जैसी वस्तुओं पर बल देते हैं; यह ध्वनि अच्छी है, क्योंकि यह लंबे समय तक चलने वाली वस्तुओं (चिजीयू) को संदर्भित करती है; संख्या आठ (बा) में फा के समान ही ध्वनि है, जैसा कि सौभाग्य (फाकाई) बनाने में है, और यह वास्तव में थोड़ा प्रभाव डाल सकता है। अर्थात्, *फंगशुई, झाड़फूंक*, और अन्य वस्तुएं जो पूर्वी लोग उपयोग करते हैं वह पश्चिम में लाए जाने पर काम नहीं करती हैं, और गोरे लोगों पर उनका प्रभाव नहीं होता है। ज्योतिष शास्त्र, शकुन, और आदि जिस पर गोरे लोग बल देते हैं पूर्वी लोगों पर काम नहीं करते। कुछ लोग सोचते हैं कि ये उन पर काम करते हैं, लेकिन यह केवल आपकी सोच है, क्योंकि यह वास्तव में आप पर काम नहीं करते। क्यों? गोरे लोगों के जीवमंडल में विशेष भौतिक तत्व होते हैं जो उनके आयाम बनाते हैं, और पूर्वी क्षेत्र के जीवमंडल में विशेष तत्व होते हैं जो उनके जीवों को बनाते हैं। ये वस्तुएं मनुष्य के शरीर की संरचना में रच-बस जाती हैं, इसलिए दोनों प्रकार अलग-अलग हैं। लोगों द्वारा जातियों के मिश्रण करने के बाद, जब आप उस बच्चे को देखते हैं जिसे वे जन्म देते हैं, यह मिश्रित जाति का बच्चा होता है। तब भी इस बच्चे के अस्तित्त्व के बीच में एक विभाजन होता है, और क्योंकि यह विभाजन होता है इसलिए उसका भौतिक अस्तित्व और विवेक अधूरा रहेगा; उसका शरीर अधूरा रहेगा। यहां तक कि आधुनिक विज्ञान भी जानता है कि प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी से बदतर होती है, और [जातियों का मिश्रण] इस स्थिति को उत्पन्न करेगा। निश्चित ही, यदि यह व्यक्ति साधना करता है, तो मैं इसे संभाल सकता हूँ और मैं इसकी देखभाल कर सकता हूँ। साधारण गैर-साधक लोगों के लिए इन वस्तुओं को ऐसे ही नहीं संभाला जा सकता है।

शिष्य : जब मैं तीसरा अभ्यास करती हूँ, मुझे ऐसा आभास होता है जैसे कि मेरी हथेलियों से ऊष्मा निकल रही है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा किसी अन्य पद्धति में होता है। जब मैं अभ्यास कर रही होती हूँ, मुझे लगता है कि मैं एक बोधिसत्व हूँ और मैं सभी से श्रेष्ठ हूँ। क्या यह सही है?

गुरु जी : जब आप व्यायाम का अभ्यास करते हैं तो कोई अन्य विचार न जोड़ें। इस तरह से तंत्रवाद साधना करते हैं : [साधक सोचता है] "मैं एक बुद्ध हूँ।" शुरु में तो वह नहीं था। तो क्या उसका मांस का शरीर बदल गया? नहीं, ऐसा नहीं हुआ। साधना में सफल होने पर कौन परिवर्तित होगा? सह चेतना। इस अभ्यास को बताते समय मैंने आपको बताया है कि मैं मुख्य चेतना को बचाता हूँ। तब यदि आपकी सह चेतना साधना में सफल होती है, तब भी आपको पुनर्जन्म के छः चक्रों में प्रवेश करना होगा, और जब दोनों जीव अलग हो जाएंगे, आपको कुछ भी पता नहीं चलेगा [कि ऐसा हुआ था]। हथेलियों से ऊष्मा निकलना सामान्य बात है।

शिष्य : क्या हम *मार्ग* की साधना करते समय थोड़े से भी विचार नहीं जोड़ सकते हैं?

गुरु जी : कोई विचार क्रियाएं नहीं होती हैं, और सभी जोड़े गए विचार मोहभाव होते हैं।

शिष्य : दो प्रश्न : एक पूर्वी और पश्चिमी लोगों के विषय में है जिसका गुरु जी ने अभी उल्लेख किया था। यदि, उदाहरण के लिए, कई लोग हैं जो मूल रूप से पूर्वी थे, लेकिन जिन्होंने पश्चिमी लोगों के रूप में पुनर्जन्म लिया है, उनके बारे में क्या किया जाना चाहिए?

गुरु जी : यह कोई समस्या नहीं है। इसके साथ दो परिस्थितियां है : यदि यह व्यक्ति किसी उद्देश्य के साथ नहीं आया था, तब हम इस व्यक्ति को उसके शरीर के परिवर्तन के साथ-साथ बदल देंगे; यदि वह किसी उद्देश्य के साथ आया था, तो यह एक अलग स्थिति होगी और इसे एक अलग विषय माना जाना चाहिए।

साथ ही, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब आप इस अभ्यास को फैलाते हैं तो आपको अपनी प्रणाली पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी। यदि कोई व्यक्ति रूचि दिखाता है और सीखने के लिए आता है, तो आप सद्गुण संचय करते हैं, और यह कुछ ऐसा है जो असीम सद्गुण लाता है। लेकिन यहाँ एक बात करनी आवश्यक है : यदि वह व्यक्ति सीखना नहीं चाहता है, लेकिन आप उसे सीखने के लिए विवश करते हैं और उसे सीखने के लिए घसीटकर लाते हैं, तो मैं कहूँगा कि यह अच्छा नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि वह बुद्धत्व की साधना नहीं करना चाहता है, तो बुद्ध इसके बारे में कुछ भी नहीं कर सकते हैं। लोग स्वयं इस बात के उत्तरदायी होते हैं कि वे क्या पाना चाहते हैं और क्या खोजते हैं। हम लोगों को अच्छा बनने के लिए कहते हैं, इसलिए आप उन्हें [अभ्यास] के बारे में बता सकते हैं, लेकिन आप दूसरों को बलपूर्वक अंदर नहीं खींच सकते। इस विषय पर, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हम किसी को भी सीखने के लिए विवश नहीं करते हैं। साथ ही, भविष्य में, हमारे स्वयंसेवक या उत्तरदायी व्यक्तियों को काम करते समय प्रशासनिक हथकण्डों का उपयोग नहीं करना चाहिए। आप सभी साधक हैं, इसलिए आपको लोगों को शिक्षाओं के साथ विश्वास दिलाना चाहिए। आप सभी उपदेशों का अभ्यास कर रहे हैं, इसलिए जब कोई स्वयंसेवक किसी कार्य को अच्छे से या सही रूप से नहीं करता है, जब शिष्य इसे देखते हैं, वे कहेंगे कि उस कार्य से संबंधित उसके नैतिक गुण में कुछ समस्या है। इसलिए दूसरे जाकर वह काम नहीं करेंगे जो उसने गलत किया है। क्यों? ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी लोग उपदेशों का अभ्यास कर रहे हैं और वे अपनी धारणाओं के आधार पर काम नहीं करते हैं; वे उपदेशों की

आवश्यकताओं के अनुसार काम करते हैं। निःसंदेह, हम भी आपके साथ इसी तरह से व्यवहार करते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो इसे सीखें और यदि आप इसे सीखना नहीं चाहते हैं, तो आप जा सकते हैं, और हम [इसके लिए] किसी को भी हानि नहीं पहुंचाएंगे। यदि आप कहते हैं कि आप इसे सीखना नहीं चाहते हैं, तो यह ठीक है, लेकिन यदि आप इसे सीखना चाहते हैं और साधना करना चाहते हैं, तो हम आपके प्रति उत्तरदायी होंगे, और यह निश्चित है कि हम इसे पूरा कर सकते हैं। हम औपचारिकताओं के विषय में कड़े नहीं हैं, लेकिन बुद्धत्व की साधना करना गंभीर बात है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम इस तरह के एक महान और गंभीर अभ्यास के साथ थोड़ा सा भी भटकाव नहीं होने दे सकते हैं। इतिहास में कभी भी जनता में कुछ ऐसा महान नहीं फैलाया गया है। आप अभी यहाँ बैठकर सोच रहे हैं, "मैं यहाँ स्वाभाविक रूप से आया हूँ, क्योंकि जैसे ही किसी ने मुझे इसके बारे में बताया और मैं चला आया।" मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इसकी अधिक संभावना है कि आपका पूर्वनिर्धारित संबंध है, और यह पूर्वनिर्धारित अवसर संभवतः किसी समय बनाया गया था। बिना किसी कारण के या किसी पूर्वनिर्धारण के यहाँ किसी का भी आना दुर्लभ है। मुझे लगता है कि यदि आप सब इसी तरह प्रश्न पूछते रहेंगे तो और अधिक पूछने के लिए कुछ नहीं बचेगा। आपको सभी उत्तर मेरे उपदेशों में मिल सकते हैं जिनके बारे में आप पूछना चाहते हैं।

शिष्य : साधना में कोई दूसरी पद्धति नहीं के विषय पर, मुझे लगता है कि यदि कुछ लोग फालुन दाफा सीखते हैं, वे अन्य वस्तुएं भी मिला सकते हैं जो वे सीख रहे हैं, और कुछ अन्य पारंपरिक यंत्रमंत्र-जैसी की वस्तुएं भी हैं...

गुरु जी : बुद्धत्व की साधना एक गंभीर बात है। ऐसा नहीं है कि आप *झोउ यी* या *आठ त्रिआकृतियों* पर शोध नहीं कर सकते। जैसा कि मैं इसे देखता हूँ, साधना का समय सीमित है, इसलिए यदि आप उस समय का सदुपयोग पूरी तरह से अनुसंधान करने और इस फालुन [दाफा] को समझने के लिए कर सकते हैं, तो यह सबसे अद्‌भुत होगा, क्योंकि इससे अच्छा और कुछ भी नहीं है। अर्थात्, *आठ त्रिआकृतियों* के सिद्धांत जिन्हें आज का समाज जानता है, साथ ही साथ कई यंत्रमंत्र-जैसी वस्तुएं, आकाशगंगा से आगे नहीं जाती हैं। दूसरी तरफ यह ब्रह्मांड आपकी कल्पना से बहुत अधिक विशाल है। हम जिसमें हैं वैसे तीन हजार ब्रह्मांड एक इनसे भी बड़े ब्रह्मांड में समाहित हैं। तीन हजार बड़ी सीमा वाले ब्रह्मांड मिलकर इससे भी विशाल सीमा वाले ब्रह्मांड को बनाते हैं, और उनके भीतर अनगिनत दिव्य और बुद्ध हैं। इन सबके सामने आकाशगंगा क्या है? यह बहुत छोटी है। जो अभ्यास सीख रहे हैं, इसके बारे में सोचें : इस तरह का विशाल अभ्यास आपको दिया दिया गया है, इसलिए वास्तव में मैं यह नहीं सोचता कि साधकों को अपनी ऊर्जा [उन अन्य वस्तुओं के अध्ययन में] व्यर्थ करने की आवश्यकता है। लेकिन यदि आप इसे आजीविका के लिए पढ़ते हैं, तो मैं इसका विरोध नहीं करता, क्योंकि यह साधारण लोगों के बीच अध्ययन का एक विषय है, और इसलिए आप इसका अध्ययन कर सकते हैं। यदि आप कहते हैं कि यह केवल आपकी रूचि है, तो मुझे लगता है कि यह सबसे अच्छा होगा यदि आप कुछ संयम बरतें। मुझे आपके लिए उत्तरदायी होना होगा, क्योंकि बुद्धत्व की साधना गंभीर बात है। इसलिए, यदि आप इस अभ्यास पर शोध करने में अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करते हैं तो यह सर्वोत्तम है। आप असीम लाभ प्राप्त करेंगे, क्योंकि अध्ययन का कोई भी विषय इससे तुलना नहीं कर सकता है।

साधारण लोगों के आत्माओं और भूतों को जगाने वाले अभ्यासों की बात करें तो, मैं कहूँगा कि आपको उनसे और भी दूर रहना चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे निम्न-स्तर की वस्तुएं सभी दुष्ट आत्माएं होती हैं। यदि आप इन वस्तुओं के पीछे भागते हैं, यह हमारे *बुद्ध मार्ग* से कोसों दूर है! इसके अतिरिक्त, वे दुष्ट

और आसुरिक वस्तुएं हैं। साथ ही, मैंने भविष्य बताने के बारे में पुस्तक में विस्तार से बताया है। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो यह एक गंभीर बात है। जब कोई व्यक्ति ऊर्जा प्राप्त कर लेता है, उसके शब्द किसी स्थिति को उसी समय ठीक कर सकते हैं। क्योंकि साधारण लोगों की परिस्थितियां अस्थिर होती है, इसलिए वस्तुएं निश्चित रूप से निर्धारित नहीं हो सकती हैं, लेकिन जब आप किसी को बताते हैं कि उसकी परिस्थिति ऐसी है, जैसे ही आप यह कहते हैं, आप इसे वास्तविक बना देते हैं, और आप एक बुरा कर्म कर देते हैं। इसलिए साधकों को स्वयं का आंकलन उच्च आदर्शों के साथ करना चाहिए। यदि आप कोई बुरा काम करते हैं, तो यह केवल एक साधारण बात नहीं है। मैं आपके शरीर को शुद्ध करता हूँ; जैसे ही हम यह देखते हैं कि आप साधना करना चाहते हैं हम ऐसा करते हैं। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो आपको इन वस्तुओं को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि शुद्ध और स्वच्छ मार्ग में साधना करना सर्वोत्तम है।

शिष्य : मुझ पर एक मानसिक बोझ है। फालुन दाफा सीखने में सक्षम होने के लिए मेरा कितना महान पूर्वनिर्धारित संबंध होगा। मैंने जुआन फालुन भाग दो में पढ़ा है जिसमें कहा गया है कि जो लोग इस जीवन में साधना पूरी नहीं कर पाएंगे वे अगले जीवन में साधना जारी रखने का प्रण ले सकते हैं। क्योंकि वास्तविक उद्देश्य अध्यात्मिक पूर्णता पाने के लिए साधना करना है। किन्तु अब मैं बूढ़ा हूँ, तो मैं क्या कर सकता हूँ?

गुरु जी : यह समस्या वास्तव में वृद्ध लोगों के साथ होती है। ऐसा है कि, चाहे हमारी पद्धति किसी भी व्यक्ति को बहुत जल्दी से परिष्कृत करती है, क्या इस व्यक्ति का शेष जीवनकाल साधना करने के लिए पर्याप्त होगा? स्पष्टता से कहूं तो, यह किसी के लिए भी पर्याप्त होता है, चाहे वे कितने भी वृध्द हों। लेकिन एक बात यह भी है : हम में से अधिकांश इन वस्तुओं को अच्छी तरह से संभाल नहीं पाते हैं। आप कहते हैं कि आप वस्तुओं को अच्छी तरह से संभाल सकते हैं, लेकिन आप वास्तव में ऐसा नहीं कर सकते हैं, क्योंकि आप साधना में उच्च आयाम तक नहीं पहुंचे हैं, और आपका मन उच्च स्तर के आदर्श तक नहीं पहुंचा है, इसलिए आप वस्तुओं को अच्छी तरह से संभाल नहीं सकते हैं। हमारी पद्धति मन और शरीर दोनों को परिष्कृत करती है, इसलिए आप एक ही समय में साधना भी कर सकते हैं और अपने शरीर को परिवर्तित भी कर सकते हैं, इस प्रकार आपका जीवन बढ़ सकता है। मन और शरीर की दोहरी साधना के साथ, आप अभ्यास करते हुए अपने जीवन को बढ़ा सकते हैं, इसलिए नियमानुसार, चाहे आप कितने भी वृद्ध हों, स्पष्ट रुप से कहा जाए तो, आपके पास पर्याप्त समय है। लेकिन एक बात है : आपके जीवनकाल को बढ़ाना शत-प्रतिशत साधना मात्र के लिए होगा और न कि साधारण लोगों के बीच जीने के लिए। यदि वह व्यक्ति यह नहीं जानता कि उसका जीवन बढ़ाया गया है और वस्तुओं को अच्छे से नहीं संभाल पाता है, और साधकों की आवश्यकताओं के अनुसार वस्तुओं को शत-प्रतिशत नहीं कर पाता है, तो वह हमेशा मौत के संकट का सामना करेगा—यही समस्या है जिसका वृद्ध लोग सामना करते हैं।

लेकिन यदि वह वास्तव में साधना में सफल नहीं हो पाया और निष्ठापूर्ण नहीं था, तब उसके पास केवल तीन विकल्प रह जाते हैं। पहला है अगले जन्म में साधना करना जारी रखना। मेरा सिद्धांत शरीर उसका ध्यान रखेगा, उसका पुनर्जन्म होने पर भी, और वह एक ऐसे परिवार में पुनर्जन्म लेगा जहां वह *मार्ग* को प्राप्त कर पाएगा। इन सबकी व्यवस्था करने की आवश्यकता होगी। दूसरा विकल्प यह है कि यदि आप साधना नहीं करना चाहते हैं और यह सोचते हैं कि मानव जाति बहुत अधिक दुःखों से भरी है, तो आप वहां जाएंगे जहां तक की आपने साधना की है। तब यदि आप त्रिलोक को पार कर जाते हैं, तो आप

त्रिलोक के बाहर उस स्तर के एक चेतनप्राणि होंगे। यदि आप त्रिलोक से बाहर नहीं निकल पाए, तो आप त्रिलोक के उस स्तर पर एक दैवीय प्राणी बने रहेंगे। लेकिन त्रिलोक के भीतर, आपको अभी भी प्रत्येक तीन या पांच सौ वर्षों या अधिक में पुनर्जन्म लेना होगा; बस इतना कि आप कुछ सौ सालों की खुशियों का आनंद ले सकते हैं। यही एक समस्या है। तीसरा विकल्प उन लोगों के लिए है, जिन्होंने वास्तव में बहुत अच्छी साधना की है, हालांकि वे अभी भी आदर्श तक नहीं पहुंचे हैं। उपदेशों के बारे में उनकी समझ के कारण या क्योंकि उन्होंने विशेष योगदान दिया है, वे फालुन दिव्य लोक में वहां के प्राणी बनकर जा सकते हैं, और क्योंकि वह त्रिलोक से परे है, उन्हें पुनर्जन्म से नहीं जाना पड़ेगा। वास्तव में, यह अच्छा है, हालांकि यह स्थिति इतनी सामान्य नहीं है, क्योंकि आवश्यकताएं कड़ी होती हैं। लेकिन वे बुद्ध, अर्हत या बोधिसत्व नहीं होंगे—वे फालुन दिव्य लोक में साधारण लोग होंगे। तो यह इस प्रकार है। वास्तव में, क्योंकि आपने *मार्ग* प्राप्त किया है, आपकी साधना में बुद्धत्व प्राप्त करने का बीज बोया जा चुका है।

शिष्य : मेरा एक प्रश्न है : लोगों के स्तरों में अंतर कैसे किया जा सकता है?

गुरु जी : मैंने यह कहा था : मैंने कहा था कि जब कोई श्रेष्ठ व्यक्ति ताओ को सुनता है, वह पूरी लगन से उसका अनुसरण करता है, और मैं लाओज़ के एक कथन का उपयोग कर रहा था। जब कोई साधारण मनुष्य ताओ को सुनता है, वह कभी-कभार ही अभ्यास करता है, और जब कोई निम्न स्तर का मनुष्य ताओ को सुनता है, वह उस पर जोर-जोर से हंसता है। इसका क्या अर्थ है? "जब एक श्रेष्ठ व्यक्ति ताओ को सुनता है" इसका अर्थ है कि जब वह व्यक्ति साधना के विषय में सुनता है, वह तुरंत साधना करना चाहता है, और वह इसमें विश्वास करता है। इस तरह का व्यक्ति विरले ही मिलता है। वह तुरंत ही साधना करना आरंभ कर देता है और अंत तक साधना करता है—उसे एक श्रेष्ठ व्यक्ति कहते है। जब कोई श्रेष्ठ व्यक्ति ताओ को सुनता है, तो वह उसका लगन के साथ अनुसरण करता है। इस वाक्यांश "जब एक साधारण मनुष्य ताओ को सुनता है, तो वह इसका कभी-कभार ही अभ्यास करता है" का अर्थ क्या है? वह देखता है कि सभी इसे सीखने के लिए आ रहे हैं और इसलिए वह उनके साथ चला जाता है। वैसे भी, उसे लगता है कि यह बहुत अच्छा है। संभवतः जैसे ही वह व्यस्त हो जाता है या वह कुछ अप्रिय समस्याओं का सामना करता है जो साधारण लोगों में होती है, वह इसके बारे में भूल जाता है। वैसे भी, वह देखता है कि दूसरों ने इसे सीखना छोड़ दिया है और वह भी छोड़ देता है। सीखे या न सीखे यह दोनों ही उसके लिए ठीक है—यह एक साधारण मनुष्य का ताओ को सुनना है, और वह इसका कभी-कभार ही अभ्यास करता है।

वह साधना करने में सफल हो भी सकता है लेकिन वह नहीं भी हो सकता है। वही तय करता है कि वह साधना में सफल होगा या नहीं। जब एक निम्न स्तर का व्यक्ति ताओ के बारे में सुनता है, तो वह इस पर जोर-जोर से हंसता है। जैसे ही वह निम्न स्तर का व्यक्ति ताओ को सुनता है, वह कहता है, "यह साधना किस तरह की मूर्खतापूर्ण बात है?" वह हँसते हुए कहता है, "यह सब अंधविश्वास है, और मुझे इस पर विश्वास नहीं है।" निःसंदेह, वह साधना करने में और भी कम सक्षम होगा; यह ऐसा ही होता है। जहां तक यह बात है कि प्रत्येक व्यक्ति कितने उच्च स्तर तक साधना कर सकता है, मुझे लगता है कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रत्येक व्यक्ति का मन कितना सहन कर सकता है। [कुछ लोगों के लिए], जब आपके सामने थोड़ी सी भी कठिनाई आयेगी, जैसे ही आप इस कमरे को छोड़कर जाएंगे तो आप इसे सहन नहीं कर पाएंगे। जब मैं यहाँ व्याख्यान दे रहा हूँ, आप सभी सोचते हैं यह अच्छा है। क्योंकि यह एक सच्चे अभ्यास की साधना है, मुझमें जो ऊर्जा है वह करुणामय और दयालु है, इसलिए आप

सभी यहां सहज अनुभव कर रहे हैं और मुझे व्याख्यान देते हुए सुनकर प्रसन्न हैं। निश्चित रूप से, जब आप साधना करेंगे, तब ऐसा ही होगा, क्योंकि यह एक सच्चे अभ्यास की साधना है। लेकिन यदि आप यहां से निकलने के बाद पूरी तरह से बदल जाते हैं, और आपके मन में साधारण लोगों की सभी वस्तुओं के प्रति मोहभावों का रेला तीव्रता से उठता है, और बस आप साधना में रुचि गंवा देते हैं और इसके बारे में भूल जाते हैं, ऐसा नहीं चलेगा।

शिष्य : क्या आप मिश्रित जाति के बच्चों की परिस्थिति के विषय में अधिक बात कर सकते हैं?

गुरु जी : मैंने मिश्रित जाति के बच्चों के बारे में बात की है, और मैंने केवल इस घटना के बारे में बात की है जो *मार्ग* के अंत के समय में सामने आयी है। यदि आप मिश्रित जाति के हैं तो यह निश्चित रूप से आपका दोष नहीं है, और यह आपके माता-पिता का भी दोष नहीं है—वैसे भी, यह एक जटिल परिस्थिति है जिसे मानवजाति ने बनाया है जो ऐसी स्थिति लायी है। पीले, गोरे और काले लोग सभी की दिव्य लोकों में संबंधित जातीयता होती है। यह सच है कि [दिव्य लोकों में रहने वाले] वास्तव में उन लोगों की देखभाल नहीं करते हैं जो उनकी जातीयता के नहीं हैं, जिनसे उनका संबंध नहीं हैं। यह कुछ ऐसा नहीं है जिसे मैं ऐसे ही कह रहा हूँ—मैं आप सभी को एक दिव्य रहस्य बता रहा हूँ। मार्ग के अंत समय में यह मिश्रित जातियां आयीं हैं, लेकिन लोगों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। सभी धारा के साथ-साथ बह गये हैं, और क्योंकि कोई भी सच्चाई नहीं जानता है, इसलिए वे इस तरह से बह गये हैं। यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो मैं इस बात को संभाल सकता हूँ। आप किस दिव्य लोक में जाएंगे, इसके विषय में हमें आपकी स्थिति के आधार पर निर्णय लेना होगा। जिसके साथ आपका सबसे बड़ा भाग मेल खाता है मैं आपको उसके साथ आत्मसात कर दूंगा। वैसे भी, ये वस्तुएं हो रही हैं, लेकिन आप केवल साधना पर अपना ध्यान केंद्रित करें और इन बातों पर ध्यान न दें। अब आपको क्या डर है जबकि आपने *मार्ग* प्राप्त कर लिया है? जब मैंने शिक्षाओं पर व्याख्यान दिया था, तो मैंने इस पर चर्चा नहीं की थी, लेकिन इस स्थिति को कभी न कभी बताने की आवश्यकता तो थी ही।

शिष्य : क्या यह बहुत अच्छा नहीं होगा यदि मानवजाति केवल सब्जियाँ खाये?

गुरु जी : यह काम नहीं करेगा। आप ऐसे ही वस्तुओं को देखते हैं, लेकिन दिव्य लोक ने मानव जीवन के लिए आदर्शों को निर्धारित किया है, और मानव माने जाने के लिए इन आदर्शों को पूरा करना चाहिए। वास्तव में [यह काम नहीं करेगा] क्योंकि मांस शरीर की उष्ण ऊर्जा को फिर से भरने में सब्जियों से अच्छा सहायक हो सकता है। लेकिन साधना एक अलग बात है।

शिष्य : क्या कोई विशिष्ट आदर्श है कि जब हम बैठकर ध्यान करते हैं तो मन कितना शांत होना चाहिए? यदि, मार्ग की साधना करते समय, किसी व्यक्ति की मुख्य चेतना हमेशा अपने बारे में सोचती रहती है, क्या इससे व्यक्ति की ध्यान अवस्था में प्रवेश करने की क्षमता प्रभावित होगी?

गुरु जी : मुख्य चेतना और आपका ध्यान अवस्था में प्रवेश करना दोनों अलग बातें है। किसी व्यक्ति के लिए शुरुआत में अपने मन को शांत करना असंभव है। वह अपने मन को शांत करने में असमर्थ क्यों है? ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों के बहुत सारे मोहभाव होते हैं : आपका व्यवसाय, आपकी पढ़ाई, आपकी नौकरी, पारस्परिक संघर्ष, आपके बच्चों को रोग हैं, कोई भी आपके माता-पिता का ध्यान नहीं रखता, मानव संसार के कार्य—ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में आप नहीं सोचेंगे, और ये सभी वस्तुएं आपके मन का एक बड़ा भाग ले लेंगी। इसके बारे में सोचें : क्या आप यह दावा कर सकते हैं कि आप अपने

मन को शांत कर सकते हैं? आप बैठते हैं और कहते हैं कि आप उन बातों के बारे में नहीं सोचेंगे, लेकिन वे स्वयं ही उभर कर आ जाती हैं, इसलिए ऐसी कोई विधि नहीं है जो आपको अपना मन शांत करने में सक्षम बनाए। यह वैसा ही है जैसा मैंने पुस्तक में लिखा है—आप कहते हैं कि यदि आप बुद्ध के नाम का पाठ करेंगे, मन पर ध्यान केंद्रित करेंगे या संख्याओं की गिनती करेंगे तो अपने मन को शांत कर पाएंगे, लेकिन इनमें से कोई भी विधि काम नहीं करेगी। वे विधियां हैं, लेकिन इनके प्रभाव की कोई निश्चितता नहीं है। केवल एक बात है जो काम करती है वह है धीरे-धीरे आपके साधारण लोगों के बीच के मोहभावों को अधिक हल्के में लेना। जब आप उन्हें अधिक हल्के में लेते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से अपने मन को शांत कर पाएंगे। जब आप वास्तव में अपने मन को शांत कर पाएंगे, तो आप एक बहुत ही ऊँचे स्तर पर पहुंच चुके होंगे। लेकिन एक बात है : एक बार जब आप फालुन दाफा की साधना करते हैं, तो क्या आप एक साधु की तरह बन जाएंगे, जो कुछ नहीं चाहते और जिनकी कोई भौतिक संपत्ति नहीं होती है? नहीं। हम अपनी क्षमता के अनुसार साधारण लोगों के [समाज के] अनुरूप रहकर साधना करते हैं, क्योंकि जब आप साधारण समाज में रहते हैं, आप ऐसा व्यवहार नहीं कर सकते जैसे कि आप विशेष हैं, और ऊपरी तौर पर तो आप केवल एक साधारण व्यक्ति ही हैं। इसलिए हमें साधना करते समय अपनी क्षमता के अनुसार साधारण लोगों के अनुरूप होना चाहिए। यदि आप शादी करना चाहते हैं, तो युवा लोगों को शादी करनी चाहिए, और यदि आप कुछ व्यवसाय करना चाहते हैं या एक अधिकारी के रूप में कार्य करना चाहते हैं, [यह भी ठीक है], इनमें से किसी से भी नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम एक सिद्धांत समझा रहे हैं। साधारण समाज में सभी सामाजिक वर्ग के लोगों के बीच संघर्ष होते हैं। हम धर्मों के सीमित ढांचे पर ध्यान नहीं देते हैं। ताओवादी पद्धति अपने ताईजी से आगे बढ़ने में असमर्थ हैं, और बुद्धमत की पद्धतियां अपने सिद्धांतों से आगे बढ़ने में असमर्थ हैं। इसलिए हम धर्मों के सिद्धांतों पर ध्यान नहीं देते हैं, क्योंकि हम संपूर्ण ब्रह्मांड के सिद्धांतों को समझा रहे हैं।

हमने देखा है कि आप किसी भी सामाजिक वर्ग से हैं, आप क्या करते हैं और आपका काम क्या है, उसकी चिंता किये बिना आप साधना कर सकते हैं। क्यों? आपके एक साधारण काम करने वाले का, आश्रय पाने के लिये और भोजन जुटाने के लिये, व्यक्तिगत रूप से और अपने कार्यस्थल पर दूसरों के साथ संघर्ष होगा। तब यह प्रश्न उठता है कि इन संघर्षों का सामना करते हुए वह एक अच्छा व्यक्ति कैसे बन सकता है। कार्यालय में आपका एक साधारण काम करने वाला, एक पेशेवर, अपने ही सामाजिक वर्ग में एक अच्छा व्यक्ति होने के मुद्दे का सामना करता है, क्योंकि लोग भौतिक हितों के लिए आपस में संघर्ष करते हैं। वह इस मुद्दे का सामना करता है कि वह अपने जीवन के सभी विभिन्न पक्षों में संघर्षों का सामना करते हुए एक अच्छा व्यक्ति कैसे बनें। कंपनी के मालिकों को इस बात का सामना करना पड़ता है कि अपने सामाजिक वर्ग में व्यापार करते हुए वे अच्छे लोग कैसे बनें और अन्य कंपनी के मालिकों और अन्य लोगों के बीच के संघर्षों से कैसे निपटें। वे भी अपने स्वयं के स्तरों के संघर्षों का सामना करते हैं। यह देशों के राष्ट्रपतियों के लिए भी ऐसा ही है : राष्ट्रपति के रूप में, उन्हें देश के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है, कुछ बातें जैसा वे चाहते हैं उनके अनुसार होती हैं और कुछ उनके अनुसार नहीं होती, कुछ बातें सफल होती हैं और कुछ विफल होती हैं, और राष्ट्रों के बीच संघर्ष होते हैं, उनके लिए भी ऐसी बातें होती हैं जिनकी वे चिंता करते हैं। एक मनुष्य के रूप में जीवन ऐसा ही होता है, इसलिए आपकी परिस्थिति जो भी हो, आप इस नश्वर संसार से, लोगों, और समाज से सामना करने से बच नहीं सकते हैं, इसलिए आपको संघर्षों का सामना करना पड़ेगा। इन संघर्षों का सामना करते समय आपको इस बात

का भी सामना करना होगा कि आप एक अच्छे व्यक्ति कैसे बनें, और यदि आप एक अच्छा व्यक्ति बन सकते हैं तब आप एक साधारण व्यक्ति से आगे निकल चुके होंगे।

यही वह सिद्धांत है जिसे हम समझा रहे हैं : यह भौतिक रूप से किसी वस्तु से छुटकारा पाने के बारे में नहीं है। बल्कि, यह मोहभावों से छुटकारा पाने के बारे में है। यदि आप बड़ा व्यवसाय करते हैं तो यह ठीक है, और यह आपकी साधना को प्रभावित नहीं करेगा। आप जितना बड़ा व्यवसाय करेंगे, आप उतना ही अधिक धन कमाएंगे, स्वाभाविक है, लेकिन आप केवल धन को ही महत्व नहीं देंगे। आप उन लोगों की तरह नहीं होंगे जो तुच्छ भौतिक हितों से मोहभाव रखते हैं। भले ही आपका घर सोने का बना हो, आपके मन में इसका मोहभाव नहीं होगा और आप इसे बहुत हल्के में लेंगे। यह हमारे साधकों के लिए आवश्यक आदर्श है। यदि आप एक महत्वपूर्ण अधिकारी हैं, तो आप लोगों के लिए अच्छे काम कर सकते हैं; यही वह आदर्श है जिसकी हम साधकों से अपेक्षा करते हैं। यह ऐसे ही होता है, है न? हम इसे समझाते समय धर्मों से ऊपर उठते हैं और हम [इस सिद्धांत के] सार को समझाते हैं। आप किसी भी वातावरण में साधना कर सकते हैं। लेकिन एक बात है : साधारण लोगों के बीच साधना करना सीधे तौर पर किसी व्यक्ति के मन को परिवर्तित कर देता है। तब मैं क्यों कहता हूँ कि मैं वास्तव में आपको बचा रहा हूँ? यह इसलिए है क्योंकि आप स्वयं वास्तव में सुधर रहे हैं और वास्तव में समाज के दबावों को सहन कर रहे हैं। क्योंकि आप स्वयं वास्तव में सुधर रहे हैं, इसलिए आपको गोंग दिया जाना चाहिए, इसलिए हम आपको बचाते हैं।

सह चेतना भी गोंग प्राप्त कर सकती है, लेकिन वह हमेशा आपकी दिव्य संरक्षक रहेगी, और यह साधना में भी सफल हो सकती है और आपका अनुसरण कर सकती है [जहाँ भी आप साधना पूरी करने के बाद जाते हैं]। हालाँकि मैंने आज इस बात को उठाया है, फिर भी आप इतने उच्च स्तर पर वस्तुओं को समझने में असमर्थ हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि कुछ लोग अभी भी अन्य साधना मार्गों के बारे में चर्चा कर रहे हैं, इस विषय में बात कर रहे हैं कि अन्य पद्धतियां कैसी हैं, और ऐसा इसलिए है क्योंकि जो मैंने अभी कहा है आप उसका वास्तविक अर्थ नहीं समझ पा रहे हैं! पूरे इतिहासकाल में सभी साधना मार्गों ने आपकी सह चेतना को ही बचाया है, न कि आपको—वे आपको नहीं बचाते! मैंने युगों-युगों के रहस्य को उजागर किया है! मुझे इस विषय पर बात करने की अनुमति लेने के लिए बहुत कठिनाइयों से जाना पड़ा। अतीत में, आप स्वयं को नहीं बचा पाते थे चाहे आपने कैसे भी साधना की हो, तब आप किसके लिए साधना करते थे? जीवन भर की साधना के बाद, आपको अभी भी पुनर्जन्म के छः चक्रों में प्रवेश करना होता है, इस बात से अनभिज्ञ कि आप अगले जन्म में किस रूप में पुनर्जन्म लेंगे। क्या आपको अपने आप पर दया नहीं आती? क्यों [ऐसा होता था]? क्योंकि अतीत में, न तो धर्म और न ही अन्य साधना मार्ग आपकी मुख्य चेतना को बचाते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि उन्हें लगता था कि मुख्य चेतना को बचाना बहुत ही कठिन है और वह बहुत ही भ्रमित होती है। संभवतः आप सोचते हैं कि जो मैं यहाँ समझा रहा हूँ वह आप समझ गये हैं, लेकिन जब कोई व्यक्ति यहाँ से बाहर जाता है तो हो सकता है वह अभी भी वही करे जो वह चाहता है, स्वयं को साधारण लोगों के व्यावहारिक हितों के संघर्षों में झोंक देता है; इस तरह का व्यक्ति ऐसा ही होता है, यह निश्चित है। यही कारण है कि दिव्य प्राणी मनुष्यों को बचाना बहुत ही कठिन मानते हैं। लेकिन मैं आपको बचा रहा हूँ। आपकी सह चेतना का वही नाम है जो आपका है, उसने उसी समय जन्म लिया था जब आपने लिया था, और उसी शरीर को नियंत्रित करती है—बस केवल इतना है कि आप उसके अस्तित्व के बारे में नहीं जानते हैं। दूसरे उसे बचाते हैं; आपको ऐसा लगता है कि वे आपसे बात कर रहे हैं, लेकिन वे वास्तव में उससे बात कर रहे होते हैं। कभी-कभी,

आप जाने-अनजाने में कुछ कह देते हैं, लेकिन यह आपके मन से नहीं आया होता है। बहुत से लोग पूरी तरह से अचेतन हो जाते हैं जब वे ध्यान करते हैं और कई घंटों तक बैठे रहते हैं। "वाह," वे उत्साहित होते हुए कहते हैं, जब वे ध्यान समाप्त करते हैं, "देखो मैंने कितनी अच्छी तरह से अभ्यास किया है। मैं कई घंटों तक ध्यान में बैठा रहा।" यह बहुत दुःखद है! क्या आपने वास्तव में अभ्यास किया था? क्या आप जानते हैं?—यह पूरी तरह से कोई और व्यक्ति है जो अभ्यास कर रहा है।

अतीत में, कुछ ताओवादी पद्धतियां आपको मदिरा पीने के लिए कहती थी जिससे आपकी मुख्य चेतना सुन्न हो सके ताकि आपकी सह चेतना साधना कर सके। कई ताओवादी पद्धतियों में लोग तब तक पीते हैं जब तक कि वे सुन्न नहीं हो जाते, अचेतन नहीं हो जाते, और सो नहीं जाते, और तब तक अन्य उनकी सह चेतनाओं को साधना करवाते हैं। मैं युगों-युगों के रहस्य को समझा रहा हूँ, हालांकि ऐसा लग सकता है कि मैं इसे बहुत ही सहज रूप से कह रहा हूँ। भले ही आप किसी भी पद्धति की बात करें, [संबंधित उच्च प्राणियों] ने सभी मनुष्यों को साधना में सफल होने में असमर्थ माना है, और संभवतः उनके मन की करुणा के कारण, वे चाहते हैं कि आपके शरीर का कोई तो साधना में सफल हो, जो इस तरह से माना जाएगा कि आपने सद्गुण का संचय किया और आपने कष्ट सहे, क्योंकि आपकी युवावस्था, आखिरकार, धर्म में बीत गयी। तो आगे क्या होगा? क्या आप अपने अगले जन्म में एक सह चेतना के रूप में पुनर्जन्म लेंगे? यह संभव है। लेकिन जैसा कि मैं इसे देखता हूँ, ऐसा अवसर पाने की बहुत ही कम संभावना है। तो क्या आपसे फिर से साधना करवायी जाएगी? ऐसी [अनुमति दी जाने की] स्थिति भी बहुत दुर्लभ है। लेकिन कुछ लोग सौभाग्यशाली होंगे। कैसे? वे उच्च श्रेणी के अधिकारी बनेंगे, बहुत संपत्ति पाएँगे, या बड़ा व्यवसाय करेंगे—यही उनके लिए किया जाएगा जब वे अगले जीवन में प्रवेश करेंग। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने, आखिरकार, अपने पूरे जीवन में सद्गुण और सौभाग्य संचित किया था। मुझे नहीं लगता कि कोई भी व्यक्ति ऐसा चाहेगा। प्रत्येक समय जब मैं इस विषय पर चर्चा समाप्त करता हूँ, लोग आते हैं और मुझसे विभिन्न पद्धतियों और धर्मों के बारे में पूछते हैं। मुझे लगता है कि उनकी ज्ञानप्राप्ति की क्षमता बहुत ही कम है। आप फालुन दाफा की विशेषताओं के बारे में पढ़ सकते हैं, जिसमें सब कुछ सम्मिलित है [जो मैंने अभी कहा है], लेकिन लोग इस पर ध्यान नहीं देते हैं और इसे एक साधारण वाक्य के रूप में देखते हैं। यही ब्रह्मांड का नियम है, और अतीत में भी वस्तुएं ऐसी ही थीं।

यह संभव है कि जब आप इस कमरे से बाहर जाएंगे, तो आपका शरीर बहुत आरामदायक अनुभव करेगा, लेकिन एक बात है : जैसे-जैसे आप साधना करेंगे, कभी-कभी ऐसा भी होगा कि आपका शरीर अस्वस्थ अनुभव करेगा। क्यों? इसका कारण यह है कि आपके पास बुरे कर्म है जो विभिन्न जीवन काल से जमा हुए हैं। एक जीवनकाल के बुरे कर्मों को एक ही बार में एक साथ बाहर नहीं निकाला जा सकता है, अन्यथा उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाएगी। इसलिए हम बुरे कर्मों को धीरे-धीरे शरीर से बाहर निकालते हैं; इसलिए, कुछ समय के बाद आपके शरीर में दर्द होगा, और आप सोचेंगे, "क्या मैं अस्वस्थ हो गया हूँ?" मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यह कोई रोग नहीं है। लेकिन जब यह आएगा तो यह बहुत पीड़ा देगा, और कभी-कभी यह बहुत गंभीर हो सकता है—यह बहुत गंभीर लगेगा। लेकिन कुछ लोग इसे समझ सकते हैं, और दर्द महसूस होने पर वे उत्साहित हो जाते हैं, यह कहते हुए कि, "गुरु जी मेरी देखभाल कर रहे हैं और मेरे रोग और मेरे बुरे कर्मों को दूर कर रहे हैं।" दूसरी ओर, कुछ लोग, जिन्हें कोई पीड़ा नहीं होती और उनके शरीर में कोई संवेदनाएं नहीं होती, वास्तव में चिंतित हो जाते हैं : "गुरु जी मेरी देखभाल नहीं कर रहे हैं। मेरे बुरे कर्म हटाये क्यों नहीं जा रहे हैं?" लेकिन साधारणतः कुछ नए

शिष्य होते हैं जो, जैसे ही उनके शरीर अस्वस्थ अनुभव करते हैं, सोचते हैं कि वे रोगग्रस्त हैं और दवा लेते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि अभ्यास करना और साथ ही दवा लेना और भी अच्छा है। हमने एक सिद्धांत देखा है : अस्पताल लोगों के बुरे कर्मों को हटा नहीं सकते हैं क्योंकि चिकित्सक साधक नहीं होते हैं। उनके पास परोपकारी शक्ति नहीं होती है और वे साधारण लोगों के बीच केवल शरीर के मिस्त्री होते हैं। वे केवल ऊपरी तौर पर आपके दर्द को दूर कर सकते हैं, लेकिन यह [आपके शरीर के] गहरी परतों में रह जाता है। दवा लेना रोग को शरीर के अंदर गहराई में धकेल देता है, वास्तव में इसे एकत्रित कर देता है। ऊपरी तौर पर दर्द दूर हो जाता है, लेकिन यह शरीर की गहरी परतों में जमा हो जाता है। शल्यचिकित्सा भी वैसे ही होती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको एक ट्यूमर हुआ है, तो वे ट्यूमर को काट देंगे, लेकिन वे केवल ऊपरी पदार्थ को ही काट पाते हैं। लेकिन रोग का वास्तविक कारण अन्य आयामों में होता है, और वे उसे स्पर्श भी नहीं सकते हैं। इसलिए एक गंभीर बुरे कर्मों से संबंधित रोग की पुनरावृत्ति होगी। कुछ मामलों में ऐसा लगता है कि रोग ठीक हो गया है और वह इस जीवन में दोबारा नहीं आयेगा, लेकिन यह आपको अगले जन्म में पकड़ लेगा, क्योंकि इसे एक गहरी परत में धकेल दिया गया था, और यह अंततः वापस आ जाएगा। व्यक्ति को अंततः अपने बुरे कर्मों का भुगतान करना ही होता है—यही सिद्धांत है। हम यहां क्या कर रहे हैं, वह है आपके अस्तित्व की शुरुआत से, आपके शरीर से गंदी वस्तुओं को बाहर निकालना। लेकिन कोई और ऐसा नहीं कर सकता है क्योंकि यह केवल साधना के माध्यम से किया जा सकता है। हम आपके लिए यह कर सकते हैं। लेकिन आपको अच्छा नैतिक गुण बनाये रखना होगा, और जैसे ही आपका शरीर अस्वस्थ अनुभव करता है, आप यह नहीं कह सकते हैं, "अरे नहीं, मैं फिर से अस्वस्थ हो गया।" यदि आपको लगता है कि आप दोबारा अस्वस्थ हो गयें हैं और आप दवा लेते हैं, तो हम आपको नहीं रोकेंगे, क्योंकि साधना आत्मज्ञान पर निर्भर करती है, और किसी भी बात के लिए कोई कड़े नियम नहीं हैं। हमने कभी यह नहीं कहा कि अस्वस्थ अनुभव होने पर आपको दवा नहीं लेनी चाहिए। हमने ऐसा कभी नहीं कहा है।

कुछ लोग साधक के रूप में आचरण करने में असफल होते हैं। वे केवल व्यायाम का अभ्यास करते हैं, वे उपदेशों का अध्ययन नहीं करते हैं, और वे जो भी करना चाहते हैं, करते हैं। भले ही वे व्यायाम का अभ्यास करते हों, मेरे सिद्धांत शरीर उनकी देखभाल नहीं करते हैं। देखभाल किये बिना, वे केवल साधारण लोग ही होते हैं, और वे अस्वस्थ हो सकते हैं। यदि हम यह नियम बनाते हैं जो आपको दवा लेने से रोकता है, और यदि आप एक साधक के आदर्शों के अनुसार आचरण करने में सक्षम नहीं होते हैं, तो आप अभी भी एक साधारण व्यक्ति ही होंगे, और समय आने पर आप अस्वस्थ हो सकते हैं, लेकिन तब आप कहेंगे कि ली होंगज़ी ने आपको दवा लेने की अनुमति नहीं दी है। इसलिए मैं आपको यह नहीं कहता कि आपको दवा लेनी चाहिए या नहीं; इसका निर्णय आप स्वयं करें। यह वैसे भी आपके लिए एक परीक्षा है, और यदि आप एक साधक के रूप में आचरण करने में विफल होते हैं, तो आप अभी भी अस्वस्थ हो सकते हैं—यही सिद्धांत है। हम केवल सिद्धांत पर चर्चा कर रहे हैं, इसलिए मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो अब से, जब आपका शरीर अस्वस्थ अनुभव करना शुरू करता है, तो यह बहुत संभव है कि आपके पिछले जन्मों के बुरे कर्मों को बाहर निकाला जा रहा हो। मैंने देखा है कि कुछ लोगों ने दर्जनों या सौ से अधिक बार पुनर्जन्म लिया है, और उन्होंने उन कई जन्मों में कई अलग-अलग रोगों को एकत्रित किया है; हमें इन सबको आप में से बाहर निकालने की आवश्यकता होगी, और किसी भी तरह हमें उन्हें आपके लिए हटाना होगा। हम इन्हें अधिकतर अन्य आयामों के माध्यम से हटा देंगे, और हमें इसके एक भाग को हटाना होगा। लेकिन हम अन्य आयामों के माध्यम से इन्हें पूरी तरह हटा नहीं सकते, क्योंकि आपको थोड़ा दर्द सहना होगा। यदि आप कुछ भी

सहन नहीं करते हैं, तो वास्तव में आपने उनका भुगतान किए बिना बुरे कर्म किए हैं। [यदि ऐसा होता है], तो जब आप साधना में सफल होंगे और बुद्ध की पदवी पाएंगे, आपको ऐसा अनुभव होगा कि आप वहां रहने के योग्य नहीं हैं। दूसरों को भी आश्चर्य होगा : "यह यहाँ ऊपर कैसे आया?" है न? इसलिए आपको दर्द का एक भाग सहन करना होगा। और जब आप इसे सहन करते हैं, आप अपने आत्मज्ञान की क्षमता में भी सुधार करेंगे। क्या आप इसे एक रोग के रूप में देखेंगे? या फिर आप इसे बुरे कर्मों को हटाने वाले साधक के रूप में देखेंगे?